

Holy Bible

Aionian Edition®

हिंदी समकालीन संस्करण-स्वतंत्र उपलब्धि

**Hindi Contemporary Version Bible
Gospel Primer**

विषय - सूची

प्रस्तावना

उत्पत्ति 1-4

यहून्ना 1-21

प्रकाशित वाक्य 19-22

66 वर्सेज

पाठक गाइड

शब्दकोष

मैप्स

नियति

रेखांकन, Doré

Welcome to the *Gospel Primer*. The Aionian Bible invites you to review popular Christian understanding. Is it possible that the most well-known verse in the Bible is mistranslated, John 3:16? Are the destinies of Heaven and Hell really the whole story? And are misunderstandings of this magnitude even possible? First, know that the Aionian Bible does not abandon Christian heritage. We have much to learn from godly people throughout all ages. Yet, this booklet is a new primer to the truly good news of Jesus Christ, the savior of all mankind.

Holy Bible Aionian Edition ®

हिंदी समकालीन संस्करण-स्वतंत्र उपलब्धि

Hindi Contemporary Version Bible

Gospel Primer

Creative Commons Attribution ShareAlike 4.0 International, 2018-2025

Source text: eBible.org

Source version: 5/2/2025

Source copyright: Creative Commons Attribution ShareAlike 4.0, International

Biblica, Inc., 1978, 2009, 2016, 2019

Original work available for free at www.biblica.com and open.bible

Formatted by Speedata Publisher 5.1.3 (Pro) on 5/4/2025

100% Free to Copy and Print

TOR Anonymously

<https://AionianBible.org>

Published by Nainoia Inc, <https://Nainoia-Inc.signedon.net>

All profits are given to <https://CoolCup.org>

We pray for a modern Creative Commons translation in every language
Translator resources at <https://AionianBible.org/Third-Party-Publisher-Resources>

Report content and format concerns to Nainoia Inc

Volunteer help is welcome and appreciated!

प्रस्तावना

हिन्दी at AionianBible.org/Preface

The *Holy Bible Aionian Edition* ® is the world's first Bible *un-translation*! What is an *un-translation*? Bibles are translated into each of our languages from the original Hebrew, Aramaic, and Koine Greek. Occasionally, the best word translation cannot be found and these words are transliterated letter by letter. Four well known transliterations are *Christ*, *baptism*, *angel*, and *apostle*. The meaning is then preserved more accurately through context and a dictionary. The Aionian Bible un-translates and instead transliterates eleven additional Aionian Glossary words to help us better understand God's love for individuals and all mankind, and the nature of afterlife destinies.

The first three words are *aiōn*, *aiōnios*, and *aīdios*, typically translated as *eternal* and also *world* or *eon*. The Aionian Bible is named after an alternative spelling of *aiōnios*. Consider that researchers question if *aiōn* and *aiōnios* actually mean *eternal*. Translating *aiōn* as *eternal* in Matthew 28:20 makes no sense, as all agree. The Greek word for *eternal* is *aīdios*, used in Romans 1:20 about God and in Jude 6 about demon imprisonment. Yet what about *aiōnios* in John 3:16? Certainly we do not question whether salvation is *eternal*! However, *aiōnios* means something much more wonderful than infinite time! Ancient Greeks used *aiōn* to mean *eon* or *age*. They also used the adjective *aiōnios* to mean *entirety*, such as *complete* or even *consummate*, but never infinite time. Read Dr. Heleen Keizer and Ramelli and Konstan for proofs. So *aiōnios* is the perfect description of God's Word which has *everything* we need for life and godliness! And the *aiōnios* life promised in John 3:16 is not simply a ticket to *eternal* life in the future, but the invitation through faith to the *consummate* life beginning now!

The next seven words are *Sheol*, *Hadēs*, *Geenna*, *Tartaroō*, *Abyssos*, and *Limnē Pyr*. These words are often translated as *Hell*, the place of *eternal punishment*. However, *Hell* is ill-defined when compared with the Hebrew and Greek. For example, *Sheol* is the abode of deceased believers and unbelievers and should never be translated as *Hell*. *Hadēs* is a temporary place of punishment, Revelation 20:13-14. *Geenna* is the Valley of Hinnom, Jerusalem's refuse dump, a temporal judgment for sin. *Tartaroō* is a prison for demons, mentioned once in 2 Peter 2:4. *Abyssos* is a temporary prison for the Beast and Satan. Translators are also inconsistent because *Hell* is used by the King James Version 54 times, the New International Version 14 times, and the World English Bible zero times. Finally, *Limnē Pyr* is the Lake of Fire, yet Matthew 25:41 explains that these fires are prepared for the Devil and his angels. So there is reason to review our conclusions about the destinies of redeemed mankind and fallen angels.

The eleventh word, *eleēsē*, reveals the grand conclusion of grace in Romans 11:32. Please understand these eleven words. The original translation is unaltered and a highlighted note is added to 64 Old Testament and 200 New Testament verses. To help parallel study and Strong's Concordance use, apocryphal text is removed and most variant verse numbering is mapped to the English standard. We thank our sources at eBible.org, Crosswire.org, unbound.Biola.edu, Bible4u.net, and NHEB.net. The Aionian Bible is copyrighted with creativecommons.org/licenses/by/4.0, allowing 100% freedom to copy and print, if respecting source copyrights. Check the Reader's Guide and read at AionianBible.org, with Android, and with TOR network. Why purple? King Jesus' Word is royal and purple is the color of royalty! All profits are given to CoolCup.org.



तब उन्होंने आदम को एदेन के बगीचे से बाहर कर दिया तथा एदेन के बगीचे की निगरानी के लिए कस्बों को और चारों ओर घूमनेवाली ज्वालामय तलवार को रख दिया ताकि कोई जीवन के वृक्ष को छू न सके।

उत्पत्ति 3:24

उत्पत्ति

हों: पालतू पशु, रेंगनेवाले जंतु तथा हर एक जाति के बन पशु उत्पन्न हों।” 25 परमेश्वर ने हर एक जाति के बन-पशुओं को, हर एक

1 आदि में परमेश्वर ने आकाश एवं पृथ्वी को रचा। 2 पृथ्वी बिना जाति के पालतू पशुओं को तथा भूमि पर रेंगनेवाले हर एक जाति के आकार के तथा खाली थी, और पानी के ऊपर अंधकार था जीवों को बनाया। और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है। 26 फिर तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मंडरा रहा था। 3 उसके परमेश्वर ने कहा, “हम अपने स्वस्प के अनुसार अपनी समानता बाद परमेश्वर ने कहा, “प्रकाश हो जाए,” और प्रकाश हो गया। 4 में मनुष्य की रचना करे कि वे सागर की मछलियों, आकाश के परमेश्वर ने प्रकाश को देखा कि अच्छा है। परमेश्वर ने प्रकाश को पक्षियों, पालतू पशुओं, भूमि पर रेंगनेवाले हर एक जीव तथा सारी अंधकार से अलग किया। 5 परमेश्वर ने प्रकाश को “दिन” तथा पृथ्वी पर राज करें।” 27 इसलिये परमेश्वर ने अपने स्वस्प में मनुष्य अंधकार को “रात” कहा और शाम हुई, फिर सुबह हुई—इस प्रकार को बनाया, परमेश्वर के ही स्वस्प में परमेश्वर ने उन्हें बनाया; नर पहला दिन हो गया। 6 फिर परमेश्वर ने कहा, “जल के बीच ऐसा और नारी करके उसने उन्हें बनाया। 28 परमेश्वर ने उन्हें यह आशीष विभाजन हो कि जल दो भागों में हो जाए।” 7 इस प्रकार परमेश्वर ने दी, “फूलों फलों और संख्या में बढ़ो और पृथ्वी में भर जाओ और नीचे के जल और ऊपर के जल को अलग किया। यह वैसा ही हो सब पर अधिकार कर लो। सागर की मछलियों, आकाश के पक्षियों गया। 8 परमेश्वर ने इस अंतर को “आकाश” नाम दिया। और शाम व पृथ्वी के सब रेंगनेवाले जीव-जन्तुओं पर तुम्हारा अधिकार हो।” हुई, फिर सुबह हुई—इस प्रकार दूसरा दिन हो गया। 9 फिर परमेश्वर 29 तब परमेश्वर ने उनसे कहा, “मैंने तुम्हारे खाने के लिए बीज वाले ने कहा, “आकाश के नीचे का पानी एक जगह इकट्ठा हो जाए और पौधे और बीज वाले फल के पेड़ आदि दिये हैं जो तुम्हारे भोजन सूखी भूमि दिखाइ दे” और वैसा ही हो गया। 10 परमेश्वर ने सूखी के लिये होंगे। 30 और पृथ्वी के प्रत्येक पशुओं, आकाश के सब भूमि को “धरती” तथा जो जल इकट्ठा हुआ उसको “सागर” कहा पक्षियों और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जीव-जन्तुओं को—प्रत्येक और परमेश्वर ने देखा कि वह अच्छा है। 11 फिर परमेश्वर ने कहा, प्राणी को जिसमें जीवन का च्वास है—मैं प्रत्येक हो पौधे भोजन के “पृथ्वी से हरी धास तथा पेड़ उगने लगें: और पृथ्वी पर फलदाई लिये देता हूं।” और वैसा ही हो गया। 31 परमेश्वर ने अपनी बनाई बृक्षों में फल लाने लगे।” और वैसा हो गया। 12 पृथ्वी हरी-हरी हर चीज को देखा, और वह बहुत ही अच्छी थी। और शाम हुई, धास, बीजयुक्त पौधे, जिनमें अपनी-अपनी जाति का बीज होता है फिर सुबह हुई—इस प्रकार छठवां दिन हो गया।

तथा फलदाई वृक्ष, जिनके फलों में अपनी-अपनी जाति के बीज होते हैं, उगने लगे। परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है। 13 फिर शाम हुई, फिर सुबह हुई—इस प्रकार तीसरा दिन हो गया। 14 फिर परमेश्वर ने कहा, “दिन को रात से अलग करने के लिए आकाश में ज्योतियां हों, और ये चिह्नों, समयों, दिनों एवं वर्षों के लिए होंगा। 15 और आकाश में ज्योतियां हों, जिससे पृथ्वी को प्रकाश मिले,” और ऐसा ही हो गया। 16 परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियां बनाई—बड़ी ज्योति को दिन में तथा छोटी ज्योति को रात में राज करने हेतु बनाया। और परमेश्वर ने तारे भी बनाये। 17 इन सभी को परमेश्वर ने आकाश में स्थिर किया कि ये पृथ्वी को रोशनी देते रहें, 18 ताकि दिन और रात अपना काम पूरा कर सकें और रोशनी अंधकार से अलग हो। और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है। 19 और शाम हुई, फिर सुबह हुई—इस प्रकार चौथा दिन हो गया। 20 फिर परमेश्वर ने कहा, “पानी में पानी के जंतु और आकाश में उड़नेवाले पक्षी भर जायें।” 21 परमेश्वर ने बड़े-बड़े समुद्री-जीवों तथा सब जातियों के जंतुओं को भी बनाया, और समुद्र को समुद्री-जीवों से भर दिया तथा सब जाति के पक्षियों की भी सुषिट की और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है। 22 इहें परमेश्वर ने यह कहकर आशीष दी, “समुद्र में सभी जंतु, तथा पृथ्वी में पक्षी भर जायें।” 23 तब शाम हुई, फिर सुबह हुई—पांचवां दिन हो गया। 24 फिर परमेश्वर ने कहा, “पृथ्वी से प्रत्येक जाति के जीवित प्राणी उत्पन्न हों: पालतू पशु, रेंगनेवाले जंतु तथा हर एक जाति के बन-पशुओं को, हर एक

2 इस प्रकार परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी के लिए सब कुछ बनाकर अपना काम पूरा किया। 2 सातवें दिन परमेश्वर ने अपना सब काम पूरा कर लिया था; जो उन्होंने शुरू किया था; अपने सभी कामों को पूरा करके सातवें दिन उन्होंने विश्वाम किया। 3 परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी तथा उसे पवित्र ठहराया, क्योंकि यह वह दिन था, जब उन्होंने अपनी रचना, जिसकी उन्होंने सुषिट की थी, पूरी करके विश्वाम किया। 4 यही वर्णन है कि जिस प्रकार याहवेह परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाया। 5 उस समय तक पृथ्वी में कोई हरियाली और कोई पौधा नहीं उगा था, क्योंकि तब तक याहवेह परमेश्वर ने पृथ्वी पर बारिश नहीं भेजी थी। और न खेती करने के लिए कोई मनुष्य था। 6 भूमि से कोहरा उठाता था जिससे सारी भूमि सीधी जाती थी। 7 फिर याहवेह परमेश्वर ने मिट्टी से मनुष्य को बनाया तथा उसके नाक में जीवन की सांस फूंक दिया। इस प्रकार मनुष्य जीवित प्राणी हो गया। 8 याहवेह परमेश्वर ने पूर्व दिशा में एदेन नामक स्थान में एक बगीचा बनाया और उस बगीचे में मनुष्य को रखा। 9 याहवेह परमेश्वर ने सुंदर पेड़ और जिनके फल खाने में अच्छे हैं, उगाए और बगीचे के बीच में जीवन का पेड़ और भले या बुरे के ज्ञान के पेड़ भी लगाया। 10 एदेन से एक नदी बहती थी जो बगीचे को सीधा करती थी और वहां से नदी चार भागों में बंट गई। 11 पहली नदी का नाम पीशोन; जो बहती हुई हाविलाह

देश में मिल गई, जहां सोना मिलता है। 12 (उस देश में अच्छा सोना जब आदम और झी ने दिन के ठण्डे समय में याहवेह परमेश्वर के हैं। मोती एवं सुलेमानी पथर भी वहां पाए जाते हैं।) 13 दूसरी नदी आने की आवाज बगीचे में सुनी, तब आदम और उसकी पत्री पेड़ों का नाम गीहोन है। यह नदी कृश देश में जाकर मिलती है। 14 तीसरी के बीच में छिप गये। 9 किंतु याहवेह परमेश्वर ने आदम को बुलाया नदी का नाम हिंडकेल है, यह अशशू के पूर्व में बहती है। चौथी नदी और पूछा, “तुम कहां हो?” 10 आदम ने उत्तर दिया, “आपके आने का नाम फरात है। 15 याहवेह परमेश्वर ने आदम को एदेन बगीचे में का शब्द सुनकर हम डर गये और हम छिप गये क्योंकि हम नगे इस उद्देश्य से रखा कि वह उसमें खेती करे और उसकी रक्षा करे। हैं।” 11 याहवेह ने कहा, “किसने तुमसे कहा कि तुम नगे हो? कहीं 16 याहवेह परमेश्वर ने मनुष्य से यह कहा, “तुम बगीचे के किसी ऐसा तो नहीं, कि तुमने उस पेड़ का फल खा लिया हो, जिसको भी पेड़ के फल खा सकते हो; 17 लेकिन भले या बुरे के ज्ञान का खाने के लिए मैंने मना किया था?” 12 आदम ने कहा, “साथ में जो पेड़ है उसका फल तुम कभी न खाना, क्योंकि जिस दिन तुम रहने के लिए जो झी आपने मुझे दी है, उसी ने मुझे उस पेड़ से वह इसमें से खाओगे, निश्चय तुम मर जाओगे।” 18 इसके बाद याहवेह फल दिया, जिसे मैंने खाया।” 13 यह सुन याहवेह परमेश्वर ने झी से परमेश्वर ने कहा, “आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं है। मैं पूछा, “यह क्या किया तुमने?” झी ने उत्तर दिया, “सांप ने मुझे उसके लिए एक सुखोय साथी बनाऊंगा।” 19 याहवेह परमेश्वर ने बहकाया, इसलिये मैंने वह फल खा लिया।” 14 याहवेह परमेश्वर ने पृथ्वी में पशुओं तथा पश्यियों को बनाया और उन सभी को मनुष्य के सांप से कहा, तूने ऐसा करके गलत किया, “इसलिये तुम्हीं पालत् पास ले आए, ताकि वह उनका नाम रखे; आदम ने जो भी नाम पशुओं से तथा सभी बन्य पशुओं से अधिक शापित है। तू पेट के बल रखा, वही उस प्राणी का नाम हो गया। 20 आदम ने सब जंतुओं का चला करेगा और जीवन भर मिट्टी चाटता रहेगा। 15 मैं तैर तथा झी की नाम रख दिया। किंतु आदम के लिए कोई साथी नहीं था, जो उसके के बीच, तेरी संतान तथा झी की संतान के बीच बैर पैदा कर्स्गां; साथ रह सके। 21 इसलिये याहवेह परमेश्वर ने आदम को गहरी नीद वह तैरे सिर को कुचलेगा, तथा तू उसकी एडी को ढंसेगा।” 16 मैं डाला; जब वह सो गया, याहवेह परमेश्वर ने उसकी एक पसली झी से परमेश्वर ने कहा, “मैं तुम्हारी गर्भावस्था के दर्द को बहुत निकाली और उस जगह को मांस से भर दिया। 22 फिर याहवेह बढ़ाऊंगा; तुम दर्द के साथ संतान को जन्म दोगी। यह होने पर भी परमेश्वर ने उस पसली से एक झी बना दी और उसे आदम के पास तुम्हारी इच्छा तुम्हारे पति की ओर होगी, और पति तुम पर अधिकार ले गए। 23 आदम ने कहा, “अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और केरेगा।” 17 फिर आदम से परमेश्वर ने कहा, “तुमने अपनी पत्री मैं भास में का भास है; उसे ‘नारी’ नाम दिया जायेगा, क्योंकि यह की बात सुनकर उस पेड़ से फल खाया, ‘जिसे खाने के लिये मैंने ‘न’ से निकाली गई थी।” 24 इस कारण पूर्ख अपने माता-पिता को तुम्हें मना किया था, “इस कारण यह पृथ्वी जिस पर तुम रह रहे छोड़कर अपनी पत्री से मिला रहेगा तथा वे दोनों एक देह होंगे। 25 हो, श्रापित हो गई है; तुम जीवन भर कड़ी मेहनत करके जीवन आदम एवं उसकी पत्री जन्म तो थे पर लजाते न थे।

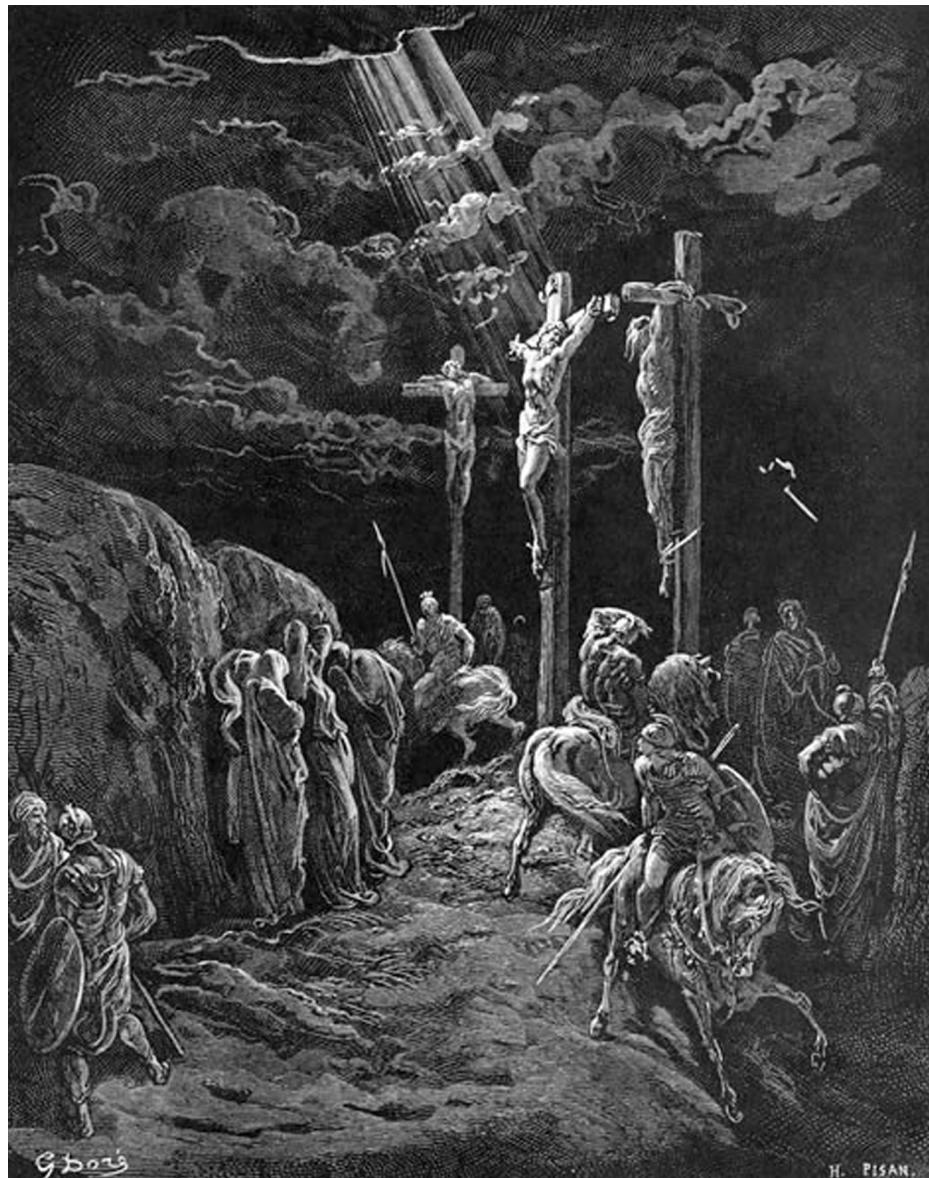
3 याहवेह परमेश्वर के बनाये सब जंतुओं में सांप सबसे ज्यादा

चालाक था। उसने झी से कहा, “क्या सच में परमेश्वर ने तुमसे कहा, ‘तुम इस बगीचे के किसी भी पेड़ का फल न खाना?’” 2 तब झी ने उत्तर दिया, “हम बगीचे के वृक्षों के फलों को खा सकते हैं, 3 लेकिन बगीचे के बीच में जो पेड़ है, उसके बारे में परमेश्वर ने कहा है ‘न तो तुम उसका फल खाना और न ही उसको छुना, नहीं तो तुम मर जाओगे।’” 4 सांप ने झी से कहा, “निश्चय तुम नहीं मरोगे! 5 परमेश्वर यह जानते हैं कि जिस दिन तुम इसमें से खाओगे, तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी तथा तुम्हें भले और बुरे का ज्ञान हो जाएगा और तुम परमेश्वर के समान हो जाओगे।” 6 जब झी ने उस पेड़ के फल की ओर देखा कि वह खाने में अच्छा तथा देखने में सुंदर और बुद्धि देनेवाला है, तब उसने उस पेड़ के फलों में से एक लेकर खाया। और उसने यह फल अपने पति को भी दिया, जो उसके पास ही था। उसने भी उसे खाया। 7 तब उन दोनों की आंखें खुल 4 जब आदम ने अपनी पत्री हव्वा के साथ दाम्पतीक संबंध में गई और उन्हें महसूस हुआ कि वे नगे हैं। इसलिये उन्होंने अंजीर की प्रवेश किया, तब हव्वा गर्भवती हुई तथा उसने कर्यीन को जन्म पत्तियां जोड़कर कपड़े बनाए और अपने नंगेपन को ढक दिया। 8 दिया। हव्वा ने कहा, “याहवेह की सहायता से मैंने एक पूर्ण को

जन्म दिया है.” 2 फिर हव्वा ने कर्यीन के भाई हाबिल को जन्म गया था, तब तो लामेख के लिए सतर बार सात गुणा होगा.” 25 दिया। हाबिल भेड़-बकरियों का चरवाहा था, किंतु कर्यीन खेती हव्वा ने एक और पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम शेत यह करता था। 3 कुछ दिनों बाद याहवेह को भेट चढ़ाने के उद्देश्य से कहकर रखा, “कर्यीन द्वारा हाबिल की हत्या के बाद परमेश्वर ने कर्यीन अपनी खेती से कुछ फल ले आया। 4 और हाबिल ने अपने हाबिल के बदले मेरे लिए एक और संतान दिया है.” 26 शेत के भी भेड़-बकरियों में से पहला बच्चा भेट चढ़ाया तथा चर्ची भी भेट एक पुत्र पैदा हुआ, जिसका उसने एनोश नाम रखा। उस समय से चढ़ाई। याहवेह ने हाबिल और उसकी भेट को तो ग्रहण किया, 5 लोगों ने याहवेह से प्रार्थना करना शुरू किया।

परंतु कर्यीन और उसकी भेट को याहवेह ने ग्रहण नहीं किया। इससे

कर्यीन बहुत क्रोधित हुआ तथा उसके मुख पर उदासी छा गई। 6 इस पर याहवेह ने कर्यीन से पूछा, “तू क्यों क्रोधित हुआ? क्यों तू उदास हुआ? 7 अगर तू परमेश्वर के योग्य भेट चढ़ाता तो क्या तेरी भेट ग्रहण न होती? और यदि तू सही न करे, तो पाप द्वारा पर है, और उसकी लालसा तेरी ओर रहेगी। पर तू उस पर प्रभुता करना.” 8 हाबिल अपने भाई कर्यीन के खेत में गया तब कर्यीन ने हाबिल से कुछ कहा और कर्यीन ने हाबिल को मार दिया। 9 तब याहवेह ने कर्यीन से पूछा, “तेरा भाई हाबिल कहाँ है?” उसने उत्तर दिया, “पता नहीं। क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूँ?” 10 याहवेह ने कहा, “तूने यह क्या किया? भूमि से तेरे भाई का रक्त मुझे पुकार रहा है। 11 अब तू उस भूमि की ओर से शापित है, क्योंकि इस खेत में तेरे भाई का खून गिरा है। 12 जब तू खेती करेगा, तुझे इसकी पूरी उपज नहीं मिलेगी; तू अब पृथ्वी पर अकेला और बेसहारा होगा。” 13 कर्यीन ने याहवेह से कहा, “मेरा दंड मेरी सहन से बाहर है। 14 अपने आज मुझे यहां से निकाल दिया है, मैं आपके सामने से छिप जाऊंगा; मैं अकेला और बेसहारा होकर धूम्रगा तो मैं जिस किसी के सामने जाऊंगा, वे मुझे मार देंगे।” 15 यह सुन याहवेह ने उससे कहा, “यदि ऐसा हुआ, तो जो कोई कर्यीन की हत्या करेगा, उससे सात गुणा बदला लिया जाएगा。” याहवेह ने कर्यीन के लिए एक विशेष चिन्ह ठहराया, ताकि कोई उसकी हत्या न कर दे। 16 इसके बाद कर्यीन याहवेह के पास से चला गया और नोद देश में बस गया, जो ऐदेन बगीचे के पूर्व में है। 17 कर्यीन की पत्नी ने हनोख को जन्म दिया। कर्यीन ने एक नगर बसाया और उस नगर को अपने पुत्र के नाम पर हनोख रखा। 18 हनोख से इराद का जन्म हुआ, इराद से महजाएल का तथा महजाएल से मेथशाएल का, मेथशाएल से लामेख का जन्म हुआ। 19 लामेख की दो पत्रियां थीं, एक का नाम अदाह तथा दूसरी का नाम जिल्लाह था। 20 अदाह ने जाबात को जन्म दिया; वह जानवरों के पालने वालों और तंबुओं में रहनेवालों का नायक बना। 21 उसके भाई का नाम यूबाल था; वह वीणा और बांसुरी बजाने वालों का नायक बना। 22 जिल्लाह ने तूबल-कर्यीन को जन्म दिया, जो कांसे एवं लोहे के सामान बनाता था। तूबल-कर्यीन की बहन का नाम नामाह था। 23 लामेख ने अपनी पत्रियों से कहा, “अदाह और जिल्लाह सुनो; तुम मेरी पत्रियां हो, मेरी बात ध्यान से सुनो, मैंने एक व्यक्ति को मारा है, क्योंकि उसने मुझ पर आक्रमण किया था। 24 जब कर्यीन के लिए सात गुणा बदला लिया



प्रभु येशु ने प्रार्थना की, “पिता, इनको क्षमा कर दीजिए क्योंकि इन्हें यह पता ही नहीं कि ये क्या कर रहे हैं।”

उन्होंने पासा फेंककर प्रभु येशु के वक्त्र आपस में बांट लिए।

लक्ना 23:34

यूहन्ना

में बपतिस्मा देता हूं परंतु तुम्हारे मध्य एक ऐसे हैं, जिन्हें तुम नहीं जानते। 27 यह वही हैं, जो मेरे बाद आ रहे हैं, मैं जिनकी जूटी का परमेश्वर था। 2 यही वचन आदि में परमेश्वर के साथ था और वचन बंध खोलने के योग्य भी नहीं हूं।” 28 ये सब बैथनियाह गांव में सारी सुषि उनके द्वारा उत्पन्न हुईं। सारी सुषि में कुछ भी उनके थे। 29 अगले दिन योहन ने मरीह येशु को अपनी ओर आते हुए बिना उत्पन्न नहीं हुआ। 4 जीवन उन्हीं में था और वह जीवन देखकर भीड़ से कहा, “वह देखो! परमेश्वर का मेमना, जो संसार के मानव जाति की ज्योति था। 5 वह ज्योति अंधकार में चमकती रही। पाप का उठानेवाला है।” 30 यह वही हैं, जिनके विषय में मैंने कहा अंधकार उस पर प्रबल न हो सका। 6 परमेश्वर ने योहन नामक एक था, ‘‘मेरे बाद वह आ रहे हैं, जो मुझसे श्रेष्ठ हैं क्योंकि वह मुझसे व्यक्ति को भेजा 7 कि वह ज्योति को देखें और उसके गवाह बनें कि पहले से मौजूद हैं।’’ 31 मैं भी उन्हें नहीं जानता था, मैं जल में लोग उनके माध्यम से ज्योति में विक्षास करें। 8 वह स्वयं ज्योति बपतिस्मा देता हुआ इसलिये आया कि वह इसाएल पर प्रकट हो नहीं थे किंतु ज्योति की गवाही देने आए थे। 9 वह सच्ची ज्योति, जाएं।” 32 इसके अतिरिक्त योहन ने यह गवाही भी दी, “मैंने स्वर्ग जो हर एक व्यक्ति को प्रकाशित करती है, संसार में आने पर थी। 10 से आत्मा को कबूत के समान उत्तरते और मरीह येशु पर ठहरते हुए वह संसार में थे और संसार उन्हीं के द्वारा बनाया गया फिर भी संसार देखा। 33 मैं उन्हें नहीं जानता था किंतु परमेश्वर, जिन्होंने मुझे जल ने उन्हें न जाना। 11 वह अपनी सुषि में आए किंतु उनके अपनों ने मैं बपतिस्मा देने के लिए भेजा, उन्हीं ने मुझे बताया, ‘‘जिस पर तुम ही उन्हें ग्रहण नहीं किया। 12 परंतु जितनों ने उन्हें ग्रहण किया आत्मा को उत्तरते और ठहरते हुए देखोगे, वही पवित्र आत्मा में अर्थात् उनके नाम में विक्षास किया, उन सबको उन्होंने परमेश्वर बपतिस्मा देंगे।’’ 34 स्वयं मैंने यह देखा और मैं इसका गवाह हूं कि की संतान होने का अधिकार दिया; 13 जो न पो लह से, न शारीरिक यही परमेश्वर का पुत्र हैं।” 35 अगले दिन जब योहन अपने दो इच्छा से और न मानवीय इच्छा से, परंतु परमेश्वर से पैदा हुए हैं। 14 शिष्यों के साथ खड़े हुए थे, 36 उन्होंने मरीह येशु को जाते हुए वचन ने शरीर धारण कर हमारे मध्य तंबू के समान वास किया और देखकर कहा, “वह देखो! परमेश्वर का मेमना!” 37 यह सुनकर हमने उनकी महिमा को अपना लिया—ऐसी महिमा को, जो पिता के दोनों शिष्य मरीह येशु की ओर बढ़ने लगे। 38 मरीह येशु ने उन्हें एकलौते पुत्र की होती है—अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण। 15 उन्हें अपने पीछे आते देख उनसे पूछा, “तुम क्या चाहते हो?” उन्होंने देखकर योहन ने घोषणा की, “यह वही हैं जिनके विषय में मैंने कहा कहा कहा, “गुस्त्र, आप कहां रहते हैं?” 39 मरीह येशु ने उनसे कहा, था, ‘‘वह, जो मेरे बाद आ रहे हैं, वास्तव में मुझसे श्रेष्ठ हैं क्योंकि “आओ और देख लो।” इसलिये उन्होंने जाकर मरीह येशु का वह मुझसे पहले थे।’’ 16 उनकी परिपूर्णता के कारण हम सबने घर देखा और उस दिन उन्हीं के साथ रहे। यह दिन का लगभग अनुग्रह पर अनुग्रह प्राप्त किया। 17 व्यवस्था मोशेह के द्वारा दी गयी दसवां घंटा था। 40 योहन की गवाही सुनकर मरीह येशु के पीछे आ थी, किंतु अनुग्रह और सच्चाई मरीह येशु द्वारा आए, 18 परमेश्वर रहे दो शिष्यों में एक शिमओन पेटरॉस के भाई आन्द्रेयास थे। 41 को कभी किसी ने नहीं देखा, केवल परमेश्वर-पुत्र के अलावा; जो उन्होंने सबसे पहले अपने भाई शिमओन को खोजा और उन्हें सूचित पिता से हैं; उन्हीं ने हमें परमेश्वर से अवगत कराया। 19 जब यहदी किया, “हमें मरीह—परमेश्वर के अभिषिक्त—मिल गए हैं।” 42 अगुओं ने थेस्शलोम से पुरोहितों और लेवियों को योहन से यह तब आन्द्रेयास उन्हें मरीह येशु के पास लाए। मरीह येशु ने शिमओन पूछने भेजा, “तुम कौन हो?” 20 तो योहन बिना झिझक स्वीकार की ओर देखकर कहा, “तुम योहन के पुत्र शिमओन हो, तुम कैफस किया। उसकी गवाही थी, “मैं मरीह नहीं हूं।” 21 तब उन्होंने अर्थात् पेटरॉस कहलाओगे।” 43 अगले दिन गलील जाते हुए मरीह योहन से दोबारा पूछा, “तो क्या तुम एलियाह हो?” योहन ने उत्तर येशु की भृत फिलिप्पस से हुई। उन्होंने उनसे कहा, “मेरे पीछे हो दिया, “नहीं।” तब उन्होंने पूछा, “क्या तुम वह भविष्यवत्ता हो?” ले।” 44 आन्द्रेयास और शिमओन के समान फिलिप्पस भी बैथसैदा योहन ने उत्तर दिया, “नहीं।” 22 इस पर उन्होंने पूछा, “तो हमें नगर के निवासी थे। 45 फिलिप्पस ने नाथानाएल को खोज कर बताओ कि तुम कौन हो, तुम अपने विषय में क्या कहते हो कि उनसे कहा, “जिनका वर्जन व्यवस्था में मोशेह और भविष्यद्वत्काओं हम अपने भेजने वालों को उत्तर दे सकें?” 23 इस पर योहन ने ने किया है, वह हमें मिल गए हैं—नाज़रेथ निवासी योसेफ के पुत्र भविष्यवत्ता यशायाह के लेख के अनुसार उत्तर दिया, “मैं उसकी येशु。” 46 यह सुन नाथानाएल ने तुरंत उनसे पूछा, “क्या नाज़रेथ आवाज हूं जो बंजर भूमि में पुकार-पुकारकर कह रही है, ‘प्रभु के से कुछ भी उत्तम निकल सकता है?’” “आकर स्वयं देख लो,” लिए मार्गी सीधा करो।” 24 ये लोग फरीसियों की ओर से भेजे गए, फिलिप्पस ने उत्तर दिया। 47 मरीह येशु ने नाथानाएल को अपनी थे। 25 इसके बाद उन्होंने योहन से प्रश्न किया, “जब तुम न तो ओर आते देख उनके विषय में कहा, “देखो! एक सच्चा इसाएली मरीह हो, न भविष्यवत्ता एलियाह और न वह भविष्यद्वत्का, तो तुम है, जिसमें कोई कपट नहीं है।” 48 नाथानाएल ने मरीह येशु से बपतिस्मा क्यों देते हो?” 26 योहन ने उन्हें उत्तर दिया, “मैं तो जल पूछा, “आप मुझे कैसे जानते हैं?” मरीह येशु ने उन्हें उत्तर दिया,

“इससे पूर्व कि फिलिप्स ने तुम्हें बुलाया, मैंने तुम्हें अंजीर के पेड़ भवन की धून में जलते जलते मैं भस्म हुआ.” 18 तब यहदी अगुओं के नीचे देखा था.” 49 नाथानाएल कह उठे, “रब्बी, आप परमेश्वर ने मसीह येशु से कहा, “इन कामों पर अपना अधिकार प्रमाणित का पुत्र हैं। आप इसाएल के राजा हैं!” 50 तब मसीह येशु ने उनसे करने के लिए तुम हमें क्या चिंह दिखा सकते हों?” 19 मसीह येशु ने कहा, “क्या तुम विवास इसलिये करते हो कि मैंने तुमसे यह कहा उन्हें उत्तर दिया, “इस मंदिर को ढां दो, इसे मैं तीन दिन में दोबारा कि मैंने तुम्हें अंजीर के पेड़ के नीचे देखा? तुम इससे भी अधिक खड़ा कर दूंगा.” 20 इस पर यहदी अगुओं ने कहा, “इस मंदिर के बड़े-बड़े काम देखोगे.” 51 तब उन्होंने यह भी कहा, “मैं तुम पर निर्माण में छियालीस वर्ष लगे हैं, क्या तुम इसे तीन दिन में खड़ा यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हों: तुम स्वर्ग को खुला हुआ और कर सकते हो?” 21 परंतु मसीह येशु यहां अपने शरीर स्फी मंदिर परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र के लिए नीचे आते और का वर्णन कर रहे थे. 22 इसलिये मेरे हुओं में से जी उठने के बाद

शिष्यों को उनका यह कथन याद आया और उन्होंने पवित्र शास्त्र और मसीह येशु द्वारा कहे गए वचन में विवास किया. 23 फसह उत्सव के समय जब मसीह येशु येस्थलेम में थे, तो उनके द्वारा किए गए अद्भुत चिन्हों को देखकर अनेक लोगों ने उनमें विवास किया, 24 किंतु मसीह येशु उनके प्रति आव्वस्त नहीं थे क्योंकि वह मनुष्य के स्वभाव से परिचित थे. 25 उन्हें मनुष्य के विषय में मनुष्य की गवाही की जास्तर नहीं थी. वह जानते थे कि मनुष्य क्या है.

2 तीसरे दिन गलील प्रदेश के काना नगर में एक विवाहोत्सव था.

मसीह येशु की माता वहां उपस्थित थी. 2 मसीह येशु और उनके शिष्य भी वहां आमंत्रित थे. 3 जब वहां दाखरस कम पड़ने लगा तो

मसीह येशु की माता ने उनसे कहा, “उनका दाखरस समाप्त हो गया है.” 4 इस पर मसीह येशु ने उनसे कहा, “हे जी, इससे अपाका और

मेरा क्या संबंध? मेरा समय अभी नहीं आया है.” 5 उनकी माता ने

सेवकों से कहा, “जो कुछ वह तुमसे कहें, वही करो.” 6 वहां

यहदी परंपरा के अनुसार शुद्ध करने के लिए जल के छ: पत्थर के

बर्तन रखे हुए थे. हर एक में लगभग सौ सवा सौ लीटर जल समाता

था. 7 मसीह येशु ने सेवकों से कहा, “बर्तनों को जल से भर दो.” 8 गुरु हैं क्योंकि ये अद्भुत काम, जो आप करते हैं, कोई भी नहीं कर

उन्होंने उन्हें मुंह तक भर दिया. 9 इसके बाद मसीह येशु ने उनसे

सकता यदि परमेश्वर उसके साथ न हों.” 3 इस पर मसीह येशु ने

कहा, “अब इसमें से थोड़ा निकालकर समारोह के संचालक के

कहा, ‘मैं आप पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूँ: बिना नया

पास ले जाओ.’” उन्होंने वैसा ही किया. 9 जब समारोह के प्रधान जन्म प्राप्त किए परमेश्वर के राज्य का अनुभव असंभव है.” 4

ने उस जल को चर्चा—जो वास्तव में दाखरस में बदल गया था

और उसे मालूम नहीं था कि वह कहां से आया था, किंतु जिन्होंने

संभव है, क्या वह नया जन्म लेने के लिए पुनः अपनी माता के

उसे निकाला था, वे जानते थे—तब समारोह के प्रधान ने दुल्हे को गर्भ में प्रवेश करे?” 5 मसीह येशु ने स्पष्ट किया, “मैं आप पर यह

बुलवाया 10 और उससे कहा, “हर एक व्यक्ति पहले उत्तम दाखरस

अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूँ: जब तक किसी का जन्म जल और

परोसता है और जब लोग पीकर तृत हो जाते हैं, तब सस्ता, परंतु आत्मा से नहीं होता, परमेश्वर के राज्य में उसका प्रवेश असंभव

तुमने तो उत्तम दाखरस अब तक रख छोड़ा है!” 11 यह मसीह है, 6 क्योंकि मानव शरीर में जन्म मात्र शारीरिक जन्म है, जबकि

येशु के अद्भुत चिह्नों के करने की शुद्धात् थी, जो गलील प्रदेश आत्मा से जन्म नया जन्म है. 7 चकित न हों कि मैंने आपसे यह

के काना नगर में हुआ, जिसके द्वारा उन्होंने अपना प्रताप प्रकट किया तथा उनके शिष्यों ने उनमें विवास किया. 12 इसके बाद जिस ओर चाहती है, उस ओर बहती है. आप उसकी ध्वनि तो सुनते

मसीह येशु, उनकी माता, उनके भाई तथा उनके शिष्य कुछ दिनों के हैं किंतु यह नहीं बता सकते कि वह किस ओर से आती और किस

लिए कफरनहम नगर चले गए. 13 जब यहदियों का फसह उत्सव ओर जाती है. आत्मा से पैदा व्यक्ति भी ऐसा ही है.” 9 निकोदेमास

पास आया तो मसीह येशु अपने शिष्यों के साथ येस्थलेम गए. 14 ने पूछा, “यह सब कैसे संभव है?” 10 मसीह येशु ने उत्तर दिया,

उन्होंने मंदिर में बैल, भेड़ और कबूतर बेचने वालों तथा साहकारों “इसाएल के शिक्षक,” होकर भी आप इन बातों को नहीं समझते!

को व्यापार करते हुए पाया. 15 इसलिये उन्होंने रस्सियों का एक 11 मैं आप पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूँ: हम वही कहते कोड़ा बनाया और उन सबको बैलों और भेड़ों सहित मंदिर से बाहर हैं, जो हम जानते हैं और हम उसी की गवाही देते हैं, जिसे हमने

निकाल दिया और साहकारों के सिक्के बिखेर दिए, उनकी चौकियों देखा है, किंतु आप हमारी गवाही ग्रहण नहीं करते. 12 जब मैं

को उलट दिया 16 और कबूतर बेचने वालों से कहा, “इन्हें यहां से आपसे सांसारिक विषयों की बातें करता हूँ, आप मेरा विवास नहीं ले जाओ. मेरे पिता के भवन के व्यापारिक केंद्र मत बनाओ.” 17 करते तो यदि मैं स्वर्णीय विषयों की बातें कह सून तो विवास कैसे

यह सुन शिष्यों को पवित्र शास्त्र का यह लेख याद आया: “आपके करेंगे? 13 मनुष्य के पुत्र के अलावा और कोई स्वर्ग नहीं गया

क्योंकि वही पहले स्वर्ग से उतरा है। 14 जिस प्रकार मोशेह ने बंजर भूमि में सांप को ऊंचा उठाया, उसी प्रकार ज़स्ती है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊंचा उठाया जाए। 15 कि हर एक मनुष्य उसमें विश्वास करे और अनंत जीवन प्राप्त करे। (aiōnios g166) 16 परमेश्वर ने संसार से अपने अपार प्रेम के कारण अपना एकलौता पुत्र बलिदान कर दिया कि हर एक ऐसा व्यक्ति, जो पुत्र में विश्वास करता है, उसका विनाश न हो परंतु वह अनंत जीवन प्राप्त करे। (aiōnios g166) 17 क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार पर दोष लगाने के लिए नहीं परंतु संसार के उद्धार के लिए भेजा। 18 हर एक उस व्यक्ति पर, जो उनमें विश्वास करता है, उस पर कभी दोष नहीं लगाया जाता; जो विश्वास नहीं करता वह दोषी घोषित किया जा चुका है क्योंकि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र में विश्वास नहीं किया। 19 अंतिम निर्णय का आधार यह है: ज्योति के संसार में आ जाने पर भी मनुष्यों ने ज्योति की तुलना में अंधकार को प्रिय जाना क्योंकि उनके काम बुरे थे। 20 कुकर्म्म में लीन व्यक्ति ज्योति से धृणा करता और ज्योति में आने से करताता है कि कहीं उसके काम प्रकट न हो जाए; 21 किंतु सच्चा व्यक्ति ज्योति के पास आता है, जिससे यह प्रकट हो जाए कि उसके काम परमेश्वर की ओर से किए गए काम हैं। 22 इसके बाद मसीह येशू और उनके शिष्य यहदिया प्रदेश में आए, जहां वे उनके साथ रहकर बपतिस्मा देते रहे। 23 योहन भी यरदन नदी में शालीम नगर के पास एनोन नामक स्थान में बपतिस्मा देते थे क्योंकि वहां जल बहुत मात्रा में था। 24 इस समय तक योहन बंदीगृह में नहीं डाले गए थे। 25 एक यहदी ने योहन के शिष्यों से जल द्वारा शुद्धीकरण की विधि के विषय में स्पष्टीकरण चाहा। 26 शिष्यों ने योहन के पास जाकर उनसे कहा, “रब्बी, देखिए, यरदन पार वह व्यक्ति, जो आपके साथ थे और आप जिनकी गवाही देते रहे हैं, सब लोग उन्हीं के पास जा रहे हैं और वह उन्हें बपतिस्मा भी दे रहे हैं।” 27 इस पर योहन ने कहा, “कोई भी तब तक कुछ प्राप्त नहीं कर सकता, जब तक उसे स्वर्ग से न दिया जाए। 28 तुम स्वयं मेरे गवाह हो कि मैंने कहा था, ‘मैं मसीह नहीं किंतु उनके लिए पहले भेजा गया दूत हूँ’” 29 वर वही है जिसके साथ वधू है किंतु वर के साथ उसका मित्र उसका शब्द सुन आनंद से अर्थत् प्रफुल्लित होता है। यही है मेरा आनंद, जो अब पूरा हुआ है। 30 यह निश्चित है कि वह बढ़ते जाएं और मैं घटाता जाऊँ।” 31 जिनका आगमन स्वर्ग से हुआ है वही सबसे बड़ा है, जो पृथ्वी से है, वह पृथ्वी का है और पृथ्वी ही से संबंधित विषयों की बातें करता है। वह, जो परमेश्वर से आए है, वह सबसे ऊंचा है। 32 जो उन्होंने देखा और सुना है वह उसी की गवाही देते हैं, फिर भी कोई उनकी गवाही ग्रहण नहीं करता। 33 जिन्होंने उनकी गवाही ग्रहण की है, उन्होंने यह साबित किया है कि परमेश्वर सच्चा है। 34 वह, जिन्हें परमेश्वर ने भेजा है परमेश्वर के वचनों का प्रचार करते हैं, क्योंकि परमेश्वर उन्हें बिना किसी मायप के आत्मा देते हैं। 35 पिता को पुत्र से प्रेम है और उन्होंने सब कुछ

उसके हाथ में सौंप दिया है। 36 वह, जो पुत्र में विश्वास करता है, अनंत काल के जीवन में प्रवेश कर चुका है किंतु जो पुत्र को नहीं मानता है, वह अनंत काल का जीवन प्राप्त नहीं करेगा परंतु परमेश्वर का क्रोध उस पर बना रहेगा। (aiōnios g166)

4 जब मसीह येशू को यह मालूम हुआ कि फरीसियों के मध्य उनके विषय में चर्चा हो रही है कि वह योहन से अधिक शिष्य बनाते और बपतिस्मा देते हैं; 2 यद्यपि स्वयं मसीह येशू नहीं परंतु उनके शिष्य बपतिस्मा देते थे, 3 तब वह यहदिया प्रदेश छोड़कर पुनः गलील प्रदेश को लौटे। 4 उन्हें शमरिया प्रदेश में से होकर जाना पड़ा। 5 वह शमरिया प्रदेश के सुखारा नामक नगर पहुंचे। यह नगर उस भूमि के पास है, जो याकोब ने अपने पुत्र योसेफ को दी थी। 6 याकोब का कुआ भी वही था। यात्रा से थके मसीह येशू कुएं के पास बैठ गए। यह लगभग दिन का बारह बजे का समय था। 7 उसी समय शमरियावासी एक झीं उस कुएं से जल भरने आई। मसीह येशू ने उससे कहा, “मुझे पिने के लिए जल दो।” 8 उस समय मसीह येशू के शिष्य नगर में भोजन लेने गए हुए थे। 9 इस पर आश्चर्य करते हुए उस शमरियावासी झीं ने मसीह येशू से पूछा, “आप यहदी होकर मुझ शमरियावासी से जल कैसे मांग रहे हैं?” (यहदी शमरियावासियों से किसी प्रकार का संबंध नहीं रखते थे।) 10 मसीह येशू ने उत्तर दिया, “यदि तुम परमेश्वर के वरदान को जानती और यह पहचानती कि वह कौन है, जो तुमसे कह रहा है, ‘मुझे पिने के लिए जल दो,’ तो तुम उससे मांगती और वह तुम्हें जीवन का जल देता।” 11 झीं ने कहा, “किंतु श्रीमन, आपके पास तो जल निकालने के लिए कोई बर्तन भी नहीं है और कुआ बहुत गहरा है; जीवन का जल आपके पास कहां से आया। 12 आप हमारे कुलपिता याकोब से बढ़कर तो हैं नहीं, जिन्होंने हमें यह कुआ दिया, जिसमें से स्वयं उन्होंने, उनकी संतान ने और उनके पशुओं ने भी पिया।” 13 मसीह येशू ने कहा, “कुएं का जल पीकर हर एक व्यक्ति फिर प्यासा होगा। 14 किंतु जो व्यक्ति मेरा दिया हुआ जल पिएगा वह आजीवन किसी भी प्रकार से प्यासा न होगा। और वह जल जो मैं उसे दूंगा, उसमें से अनंत काल के जीवन का सोता बनकर फूट निकलेगा।” (aiōn g165, aiōnios g166) 15 यह सुनकर झीं ने उनसे कहा, “श्रीमन, आप मुझे भी वह जल दीजिए कि मुझे न प्यास लगे और न ही मुझे यहां तक जल भरने आते रहना पड़े。” 16 मसीह येशू ने उससे कहा, “जाओ, अपने पति को यहां लेकर आओ।” 17 झीं ने उत्तर दिया, “मेरे पति नहीं हैं।” मसीह येशू ने उससे कहा, “तुमने सच कहा कि तुम्हारा पति नहीं है। 18 सच यह है कि पांच पति पहले ही तुम्हारे साथ रह चुके हैं और अब भी जो तुम्हारे साथ रह रहा है, तुम्हारा पति नहीं है।” 19 यह सुन झीं ने उनसे कहा, “श्रीमन, ऐसा लगता है कि आप भविष्यतका हैं। 20 हमारे पूर्वज इस पर्वत पर आराधना करते थे किंतु आप यहदी लोग

कहते हैं कि येस्सलेम ही वह स्थान है, जहां आराधना करना सही मसीह येशु ने गलील प्रदेश की ओर प्रस्थान किया। 44 यद्यपि मसीह है।” 21 मसीह येशु ने उससे कहा, “मेरा विच्वास करो कि वह समय येशु स्वयं स्पष्ट कर चुके थे कि भविष्यवत्ता को अपने ही देश में आ रहा है जब तम न तो इस पर्वत पर पिता की आराधना करेंगे और समान नहीं मिलता, 45 गलील प्रदेश पहुंचने पर गलीलिवासियों ने न येस्सलेम में। 22 तुम लोग तो उसकी आराधना करते हो जिसे तुम उनका स्वागत किया क्योंकि वे फ़सह उत्सव के समय येस्सलेम में जानते नहीं। हम उनकी आराधना करते हैं जिन्हें हम जानते हैं, मसीह येशु द्वारा किए गए काम देख चुके थे। 46 मसीह येशु दोबारा क्योंकि उद्धार यहदियों में से ही है। 23 वह समय आ रहा है बल्कि गलील प्रदेश के काना नगर में आए, जहां उन्होंने जल को दाखरस आ ही गया है जब सच्चे भक्त पिता की आराधना अपनी अंतरात्मा में बदला था। कफरनहम नगर में एक राजकर्मचारी था, जिसका और सच्चाई में करेंगे क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही भक्तों की पुत्र अस्वस्थ था। 47 यह सुनकर कि मसीह येशु यहदिया प्रदेश से खोज में हैं। 24 परमेश्वर आत्मा है इसलिये आवश्यक है कि उनके गलील में आए हुए हैं, उसने आकर मसीह येशु से विनती की कि वह भक्त अपनी आत्मा और सच्चाई में उनकी आराधना करें।” 25 झीं चलकर उसके पुत्र को स्वस्थ कर दें, जो मृत्यु-शय्या पर है। 48 इस ने उनसे कहा, “मैं जानती हूं कि मसीह, जिन्हें खिस्त कहा जाता पर मसीह येशु ने उसे झिङ्की की देते हुए कहा, “तुम लोग तो चिह्न और है, आ रहे हैं। जब वह आएंगे तो सब कुछ साफ़ कर देंगे।” 26 चमत्कार देखे बिना विच्वास ही नहीं करते।” 49 राजकर्मचारी ने मसीह येशु से उससे कहा, “जो तुमसे बातें कर रहा है, वही तो मैं ही उनसे दोबारा विनती की, ‘श्रीमन्, इससे पूर्व कि मेरे बालक की हूं।” 27 तभी उनके शिष्य आ गए और मसीह येशु को एक झीं से मृत्यु हो, कृपया मेरे साथ चलें।” 50 मसीह येशु ने उससे कहा, बतें करते देख दंग रह गए, फिर भी किसी ने उनसे यह पूछने का “जाओ, तुम्हारा पुत्र जीवित रहेगा।” उस व्यक्ति ने मसीह येशु के साहस नहीं किया कि वह एक झीं से बातें कर रहे थे या उससे वचन पर विच्वास किया और घर लौट गया। 51 जब वह मार्ग में ही क्या जानना चाहते थे। 28 अपना घड़ा वही छोड़ वह झीं नगर में था, उनके दास उसे मिल गए और उन्होंने उसे सच्चना दी, “स्वामी, जाकर लोगों को बताने लगी, 29 “आओ, एक व्यक्ति को देखो, आपका पुत्र स्वस्थ हो गया है।” 52 “वह किस समय से स्वस्थ होने जिन्होंने मेरे जीवन की सरी बातें सुना दी हैं। कहीं यहीं तो मसीह लगा था?” उसने उनसे पूछा। उन्होंने कहा, “कल लगभग दोपहर नहीं?” 30 तब नगरवासी मसीह येशु को देखने वहां आने लगे। 31 एक बजे उसका ज्वर उतर गया।” 53 पिता समझ गया कि यह ठीक इसी बीच शिष्यों ने मसीह येशु से विनती की, “रब्बी, कुछ खा उसी समय हुआ जब मसीह येशु ने कहा था, “तुम्हारा पुत्र जीवित लीजिए।” 32 मसीह येशु ने उनसे कहा, “मेरे पास खाने के लिए रहेगा।” इस पर उसने और उसके सारे परिवार ने मसीह येशु में ऐसा भोजन है, जिसके विषय में तुम कुछ नहीं जानते।” 33 इस पर विच्वास किया। 54 यह दूसरा अद्युत चिह्न था, जो मसीह येशु ने शिष्य आपस में पूछताछ करने लगे, “कहीं कोई गुरु के लिए भेजन यहदिया प्रदेश से लौटकर गलील प्रदेश में किया। तो नहीं लाया?” 34 मसीह येशु ने उनसे कहा, “अपने भेजेनेवाले, 5 इन बातों के पश्चात मसीह येशु यहदियों के एक पर्व में येस्सलेम गए। 2 येस्सलेम में भेड़-फाटक के पास एक जलाशय है, जो इब्री भाषा में बैथजादा कहलाता है और जिसके पांच ओसरे हैं, 3 उसके किनारे अंधे, अंग और लकवे के अनेक रोगी पड़े रहते थे, 4 [जो जल के हिलने की प्रतीक्षा किया करते थे क्योंकि उनकी मान्यता थी कि परमेश्वर का स्वर्गदूत समय समय पर वहां आकर जल हिलाया करता था। जल हिलते ही, जो व्यक्ति उसमें सबसे पहले उत्तरता था, स्वस्थ हो जाता था]। 5 इनमें एक व्यक्ति ऐसा था, जो अडतीस वर्ष से रोगी था। 6 मसीह येशु ने उसे वहां पड़े हुए देख और यह मालूम होने पर कि वह वहां बहुत समय से पड़ा हुआ है, उसके पास जाकर पूछा, “क्या तुम स्वस्थ होना चाहते हो?” 7 रोगी ने उत्तर दिया, “श्रीमन्, ऐसा कोई नहीं, जो जल के हिलने पर मुझे जलाशय में उतारे—मेरे प्रयास के पूर्व ही कोई अन्य व्यक्ति उसमें उत्तर जाता है।” 8 मसीह येशु ने उससे कहा, “उठो, अपना बिछौना उठाओ और चलने फिरने लगो।” 9 तुंत वह व्यक्ति स्वस्थ हो गया और अपना बिछौना उठाकर चला गया। वह शब्दाथ था। 10 अतः यहदी अगुओं ने स्वस्थ हुए व्यक्ति से कहा,

“आज शब्दाथ है. अतः तुम्हारा बिछौना उठाना उचित नहीं है.” के पुनर्स्थान के लिए. 30 मैं स्वयं अपनी ओर से कुछ नहीं कर 11 उसने कहा, “जिन्होंने मुझे स्वस्थ किया है, उन्हीं ने मुझे आज्ञा सकता. मैं उनसे जैसे निर्देश प्राप्त करता हूं, वैसा ही निर्णय देता हूं. दी, ‘अपना बिछौना उठाओ और चलने फिरने लगो.’” 12 उन्होंने मेरा निर्णय सच्चा होता है क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं परंतु अपने उससे पूछा, “कौन है वह, जिसने तुमसे कहा है कि अपना बिछौना भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिए समर्पित हूं. 31 “यदि मैं उठाओ और चलने फिरने लगो?” 13 स्वस्थ हुआ व्यक्ति नहीं स्वयं अपने ही विषय में गवाही दूं तो मेरी गवाही मान्य नहीं होगी. जानता था कि उसको स्वस्थ करनेवाला कौन था क्योंकि उस समय 32 एक और हैं, जो मेरे गवाह हैं और मैं जानता हूं कि मेरे विषय में मसीह येशु भीड़ में गुम हो गए थे. 14 कुछ समय बाद मसीह येशु ने उनकी गवाही अटल है. 33 “तुमने योहन के पास अपने लोग भेजे उस व्यक्ति को मंदिर में देख उससे कहा, “देखो, तुम स्वस्थ हो गए और योहन ने भी सच की ही गवाही दी. 34 परंतु मुझे तो अपने हो, अब पाप न करना. ऐसा न हो कि तुम्हारा हाल इससे ज्यादा बुरा विषय में किसी मनुष्य की गवाही की ज़स्तर है ही नहीं—यह सब हो जाए.” 15 तब उस व्यक्ति ने आकर यहदी अगुण को सूचित मैं तुम्हारे उद्धार के लिए कह रहा हूं. 35 योहन वह जलता हुआ किया कि जिन्होंने उसे स्वस्थ किया है, वह येशु है. 16 शब्दाथ पर और चमकता हुआ दीपक थे, जिनके उजाले में तुम्हें कुछ समय मसीह येशु द्वारा यह काम किए जाने के कारण यहदी अगुण उनको तक अनन्द मनाना सुखद लगा. 36 “मेरी गवाही योहन की गवाही सताने लगे. 17 मसीह येशु ने स्पष्ट किया, “मेरे पिता अब तक कार्य से अधिक बड़ी हैं क्योंकि पिता द्वारा मुझे सौंपै गए काम को पूरा कर रहे हैं इसलिये मैं भी काम कर रहा हूं.” 18 परिणामस्वरूप करना ही इस सच्चाई का सबूत है कि पिता ने मुझे भेजा है. 37 यहदी अगुण मसीह येशु की हत्या के लिए और भी अधिक ठन इसके अतिरिक्त पिता अर्थात् स्वयं मेरे भेजनेवाले ने भी मेरे विषय में गए क्योंकि उनके अनुसार मसीह येशु शब्दाथ की विधि को तोड़ गवाही दी है. तुमने न तो कभी उनकी आवाज सुनी है, न उनका रूप ही नहीं रहे थे बल्कि परमेश्वर को अपना पिता कहकर स्वयं को देखा है 38 और न ही उनका वचन तुम्हारे हादय में स्थिर रह सका है परमेश्वर के तुल्य भी दर्शी रहे थे. 19 मसीह येशु ने कहा: “मैं तुम क्योंकि जिसे उन्होंने भेजा है, तुम उसमें विश्वास नहीं करते. 39 पर एक अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं; पुत्र स्वयं कुछ नहीं कर तुम शास्त्रों का मनन इस विश्वास में करते हो कि उनमें अनंत काल सकता. वह वही कर सकता है, जो वह पिता को करते हुए देखता है का जीवन बसा है. ये सभी शास्त्र मेरे ही विषय में गवाही देते हैं. क्योंकि जो कुछ पिता करते हैं, पुत्र भी वही करता है. 20 पिता पुत्र (aiōnios g166) 40 यह सब होने पर भी जीवन पाने के लिए तुम मेरे से प्रेम करते हैं और वह पुत्र को अपनी हर एक योजना से परिचित पास आना नहीं चाहते. 41 “मनुष्य की प्रशंसा मुझे स्वीकार नहीं रखते हैं. वह इनसे भी बड़े-बड़े काम दिखाएं, जिन्हें देख तुम 42 क्योंकि मैं तुम्हें जानता हूं और मुझे यह भी मालूम है कि परमेश्वर चकित हो जाओगे. 21 जिस प्रकार पिता मेरे हाथों को जीवित करके का प्रेम तुम्हारे मन में है ही नहीं. 43 तुम मुझे ग्रहण नहीं करते जीवन प्रदान करते हैं, उसी प्रकार पुत्र भी जिसे चाहता है, जीवन जबकि मैं अपने पिता के नाम में आया हूं किंतु यदि कोई अपने ही प्रदान करता है. 22 पिता किसी का न्याय नहीं करते, न्याय करने नाम में आए तो तुम उसे ग्रहण कर लोगे. 44 तुम मुझमें विश्वास कैसे का सारा अधिकार उन्होंने पुत्र को सौंप दिया है. 23 जिससे सब कर सकते हो यदि तुम एक दूसरे से प्रशंसा की आशा करते हो और लोग पुत्र का वैसा ही आदर करें जैसा पिता का करते हैं. वह व्यक्ति, उस प्रशंसा के लिए कोई प्रयास नहीं करते, जो एकमात्र परमेश्वर जो पुत्र का आदर नहीं करता, पिता का आदर भी नहीं करता, से प्राप्त होती है? 45 “यह विचार अपने मन से निकाल दो कि जिन्होंने पुत्र को भेजा है. 24 “मैं तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट पिता के समाने मैं तुम पर आरोप लगाऊंगा; तुम पर दोषारोपण तो कर रहा हूं: जो मेरा वचन सुनता और मेरे भेजनेवाले में विश्वास मोशेह करेंगे—मोशेह, जिन पर तुमने आशा लगा रखी है. 46 यदि करता है, अनंत काल का जीवन उसी का है, उसे दोषी नहीं ठहराया तुम वास्तव में मोशेह में विश्वास करते तो मुझमें भी करते क्योंकि जाता, परंतु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है. उन्होंने मेरे ही विषय में लिखा है. 47 जब तुम उनके लेखों का ही (aiōnios g166) 25 मैं तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं: विश्वास नहीं करते तो मेरी बातों का विश्वास कैसे करोगे?”

वह समय आ रहा है परंतु आ ही गया है, जब सारे मूलक परमेश्वर के पुत्र की आवाज सुनेंगे और हर एक सुननेवाला जीवन प्राप्त करेगा. 26 जिस प्रकार पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी प्रकार पुत्र में बसा हुआ जीवन पिता के द्वारा दिया गया जीवन है. 27 मनुष्य का पुत्र होने के कारण उसे न्याय करने का अधिकार भी दिया गया है. 28 “यह सब सुनकर चकित न हो क्योंकि वह समय आ रहा है, जब सभी मेरे हुए लोग पुत्र की आवाज को सुनेंगे और वे जीवित हो जाएंगे. 29 सुकर्मी जीवन के पुनर्स्थान के लिए और कुकर्मी दंड

6 इन बातों के बाद मसीह येशु गतील अर्थात् तिबेरियोस झील के उस पार चले गए. 2 उनके द्वारा रोगियों को स्वास्थ्यदान के अद्वित चिह्नों से प्रभावित एक बड़ी भीड़ उनके साथ हो ली. 3 मसीह येशु पर्वत पर जाकर वहां अपने शिष्यों के साथ बैठ गए. 4 यहदियों का फसह उत्सव पास था. 5 जब मसीह येशु ने बड़ी भीड़ को अपनी ओर आते देखा तो फिलिप्पों से पूछा, “इन सबको खिलाने के लिए हम भोजन कहां से मोल लेंगे?” 6 मसीह येशु ने यह प्रश्न उन्हें जाएंगे.

परखने के लिए किया था क्योंकि वह जानते थे कि वह क्या करने से पूछा, “हमसे परमेश्वर की इच्छा क्या है?” 29 “यह कि तुम पर थे. 7 फिलिप्पों ने उत्तर दिया, “दो सौ दीनार की रोटियां भी परमेश्वर के भेजे हुए पर विश्वास करो,” मरीह येशु ने उत्तर दिया. उनके लिए पर्याप्त नहीं होंगी कि हर एक को थोड़ी-थोड़ी मिल 30 इस पर उन्होंने मरीह येशु से दोबारा पूछा, “आप ऐसा कौन सा पाए.” 8 मरीह येशु के शिष्य शिमओन पेटरॉस के भाई आन्द्रेयास अद्युत चिह्न दिखा सकते हैं कि हम आप में विश्वास करें? क्या है वह ने उन्हें सूचित किया, 9 “यहाँ एक लड़का है, जिसके पास जौ काम? 31 हमारे पूर्वजों ने बंजर भूमि में मना खाया; पवित्र शान्ति के की पांच रोटियां और दो मछलियां हैं किंतु उनसे इतने लोगों का अनुसारः भोजन के लिए परमेश्वर ने उन्हें स्वर्ग से रोटी दी.” 32 इस क्या होगा?” 10 मरीह येशु ने कहा, “लोगों को बैठा दो” और वे पर मरीह येशु ने उनसे कहा, “मैं तुम पर यह अटल सच्चाईं प्रकट सब, जिनमें पुरुषों की ही संख्या पांच हजार थी, घनी धास पर बैठ कर रहा हूँ: स्वर्ग से वह रोटी तुम्हें मोशेह ने नहीं दी; मेरे पिता ही है, गए. 11 तब मरीह येशु ने रोटियां लेकर धन्यवाद दिया और उनकी जो तुम्हें स्वर्ग से वास्तविक रोटी देते हैं. 33 क्योंकि परमेश्वर की ज़स्तर के अनुसार बांट दी और उसी प्रकार मछलियां भी. 12 जब रोटी वह है, जो स्वर्ग से आती है, और संसार को जीवन प्रदान करती वे सब तृप्त हो गए तो मरीह येशु ने अपने शिष्यों को आज्ञा दी, है.” 34 यह सुनकर उन्होंने जीवनी की, “प्रभु, अब से हमें यही “शेष टुकड़ों को इकट्ठा कर लो कि कुछ भी नाश न हो,” 13 रोटी दें.” 35 इस पर मरीह येशु ने घोषणा की, “मैं ही हूँ वह जीवन उन्होंने जौ की उन पांच रोटियों के शेष टुकड़े इकट्ठा किए, जिनसे की रोटी. जो मेरे पास आएगा, वह भूखा न रहेगा और जो मुझमें बारह टोकरे भर गए. 14 लोगों ने इस अद्युत चिह्न को देखकर कहा, विश्वास करेगा, कभी व्यापा न रहेगा. 36 मैं तुमसे पहले भी कह “निःसंदेह यह वही भविष्यत्कात्त्व है, संसार जिनकी प्रतीक्षा कर चुका हूँ कि तुम मुझे देखकर भी मुझमें विश्वास नहीं करते. 37 वे रहा है.” 15 जब मरीह येशु को यह मालूम हुआ कि लोग उन्हें सभी, जो पिता ने मुझे दिए हैं, मेरे पास आएंगे और हर एक, जो मेरे जबरदस्ती राजा बनाने के देश्य से ले जाना चाहते हैं तो वह फिर से पास आता है, मैं उसको कभी भी न छोड़ूँगा. 38 मैं स्वर्ग से अपनी पर्वत पर अकेले चले गए. 16 जब संध्या हुई तो मरीह येशु के शिष्य इच्छा पूरी करने नहीं, अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के झील के तट पर उत्तर गए. 17 अंधेरा हो चुका था और मरीह येशु लिए आया हूँ. 39 मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है कि जो कुछ अब तक उनके पास नहीं पहुँचे थे, उन्होंने नाव पर सवार होकर उन्होंने मुझे सौंपा है, उसमें से मैं कुछ भी न खोऊँ परंतु अंतिम दिन गलील झील के दूसरी ओर कफरनहम नगर के लिए प्रस्थान किया. मैं उसे फिर से जीवित करूँ. 40 क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है 18 उसी समय तेज हवा के कारण झील में लहों बढ़ने लगी. 19 नाव कि हर एक, जो पुत्र को अपनाकर उसमें विश्वास करे, वह अनंत को लगभग पांच किलोमीटर खेने के बाद शिष्यों ने मरीह येशु को काल का जीवन प्राप्त करे तथा मैं उसे अंतिम दिन में फिर से जीवित जल सतह पर चलते और नाव की ओर आते देखा. यह देखकर वे करूँ.” (aiōnios g166) 41 मरीह येशु का यह दावा सुनकर: “स्वर्ग भयभीत हो गए. 20 मरीह येशु ने उनसे कहा, “भयभीत मत हो, मैं से उतरी रोटी मैं ही हूँ,” यहदी अगुए कुड़कुड़ाने लगे 42 और हूँ.” 21 यह सुन शिष्य मरीह येशु को नाव में चढ़ाने को तैयार हो आपस में मंत्रणा करने लगे, “क्या यह योसेफ का पुत्र येशु नहीं, गए, इसके बाद नाव उस किनारे पर पहुँच गई जहाँ उन्हें जाना था. जिसके माता-पिता को हम जानते हैं? तो अब यह कैसे कह रहा है 22 अगले दिन झील के उस पार रह गई भीड़ को मालूम हुआ कि कि यह स्वर्ग से आया है?” 43 यह जानकर मरीह येशु ने उनसे वहाँ केवल एक छोटी नाव थी और मरीह येशु शिष्यों के साथ कहा, “कुड़कुड़ाओ मत, 44 कोई भी मेरे पास तब तक नहीं आ उसमें नहीं गए थे—केवल शिष्य ही उसमें दूसरे पार गए थे. 23 तब सकता, जब तक मेरे भेजनेवाले—पिता—उसे अपनी ओर खींच न तिबेरियाँस नगर से अन्य नवाँ उस स्थान पर आईं, जहाँ प्रभु ने बड़ी लैं. मैं उसे अंतिम दिन में फिर से जीवित करूँगा. 45 भविष्यद्वत्ताओं भीड़ को भोजन कराया था. 24 जब भीड़ ने देखा कि न तो मरीह के अभिलेख में यह लिखा हुआ है. वे सब परमेश्वर द्वारा सिखाए हुए येशु वहाँ हैं और न ही उनके शिष्य, तो वे मरीह येशु को खोजते हुए होंगे, अतः हर एक, जिसने पिता परमेश्वर को सुना और उनसे सीखा नावों द्वारा कफरनहम नगर पहुँच गए. 25 झील के इस पार मरीह है, मेरे पास आता है. 46 किसी ने पिता परमेश्वर को नहीं देखा येशु को पाकर उन्होंने उनसे पूछा, “रब्बी, आप यहाँ कब पहुँचे?” सिवाय उसके, जो पिता परमेश्वर से है, केवल उसी ने उन्हें देखा है. 26 मरीह येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “मैं तुम पर यह अटल सच्चाईं 47 मैं तुम पर एक अटल सच्चाईं प्रकट कर रहा हूँ: अनंत काल का प्रकट कर रहा हूँ: तुम मुझे इसलिये नहीं खोज रहे कि तुमने अद्युत जीवन उसी का है, जो विश्वास करता है. (aiōnios g166) 48 मैं ही हूँ विहू देखे हैं परंतु इसलिये कि तुम रोटियां खाकर तृप्त हुए हो. 27 जीवन की रोटी. 49 बंजर भूमि में तुम्हारे पूर्वजों ने मना खाया फिर उस भोजन के लिए मेहनत मत करो, जो नाशमान है परंतु उसके भी उनकी मृत्यु हो गई. 50 मैं ही स्वर्ग से उतरी रोटी हूँ कि जो कोई लिए, जो अनंत जीवन तक ठहरता है, जो मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा इसे खाए, उसकी मृत्यु न हो. 51 स्वर्ग से उतरी जीवन की रोटी मैं क्योंकि पिता अर्थात् परमेश्वर ने समर्थन के साथ मात्र उसी को यह ही है. जो कोई यह रोटी खाता है, वह हमेशा जीवित रहेगा. जो रोटी अधिकार सौंपा है.” (aiōnios g166) 28 इस पर उन्होंने मरीह येशु मैं दूरा, वह संसार के जीवन के लिए भेट मेरा शरीर है.” (aiōn

g165) 52 यह सुनकर यहदी अगुए आपस में विवाद करने लगे, पर्व—झोपड़ियों का उत्सव—पास था. 3 मसीह येशु के भाइयों ने “यह व्यक्ति कैसे हमें अपना शरीर खाने के लिए दे सकता है?” 53 उनसे कहा, “यहदिया चले जाओ जिससे तुम्हरे चेले तुम्हरे इन मसीह येशु ने उनसे कहा, “मैं तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट करायेंगे को देख सकें; 4 ख्याति चाहनेवाला व्यक्ति अपने काम गुल कर रहा है: जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का शरीर न खाओ और मैं नहीं करता. जब तुम ये काम करते ही हो तो स्वयं को संसार पर उसका लह न पियो, तुम्हें जीवन नहीं। 54 अनंत काल का जीवन प्रकट कर दो.” 5 मसीह येशु के भाइयों तक को उनमें विश्वास उत्पन्न की है, जो मेरा शरीर खाता और मेरा लह पीता है; अतिम दिन नहीं था. 6 इस पर मसीह येशु ने उनसे कहा, “तुम्हारा सही समय मैं उसे फिर से जीवित करूँगा. (aiōnios g166) 55 मेरा शरीर ही तो कभी भी आ सकता है किंतु मेरा सही समय अभी नहीं आया. वास्तविक भोजन और मेरा लह ही वास्तविक पेय है. 56 जो मेरा 7 संसार तुम्हें धृणा नहीं कर सकता—वह मुझसे धृणा करता है शरीर खाता और मेरा लह पीता है, वही है, जो मुझमें बना रहता है क्योंकि मैं यह प्रकट करता हूँ कि उसके काम कुरे हैं. 8 तुम पर्व में और मैं उसमें 57 जैसे जीवन पिता परमेश्वर ने मुझे भेजा है और मैं जाओ। मैं अभी नहीं जाऊँगा क्योंकि मेरा समय अभी तक पूरा नहीं पिता के कारण जीवित हूँ, वैसे ही वह भी, जो मुझे ग्रहण करता है, हुआ है.” 9 यह कहकर मसीह येशु गलील प्रदेश में ही ठहरे रहे. मेरे कारण जीवित रहेगा. 58 यह वह रोटी है, जो स्वर्ग से उत्तरी हुई 10 अपने भाइयों के झोपड़ियों के उत्सव में चले जाने के बाद वे भी हैं; वैसी नहीं, जो पूर्वजों ने खाई और फिर भी उनकी मृत्यु हो गई; गुन रूप से वहां गए. 11 उत्सव में कुछ यहदी अगुए मसीह येशु को परंतु वह, जो यह रोटी खाता है, हमेशा जीवित रहेगा.” (aiōn g165) खोजते हुए पूछताछ कर रहे थे, “कहां है वह?” 12 यद्यपि मसीह 59 मसीह येशु ने ये बताएं कफरनहम नगर के यहदी सभागृह में शिक्षा येशु के विषय में लोगों में बड़ा विवाद हो रहा था—कुछ कह रहे देते हुए बताईं. 60 यह बातें सुनकर उनके अनेक शिष्यों ने कहा, थे, “वह भला व्यक्ति है.” और कुछ का कहना था, “नहीं, वह “बहुत कठोर है यह शिक्षा. कौन इसे स्वीकार कर सकता है?” 61 भरमानेवाला है—सबके साथ छल करता है.” 13 तौमी कोई भी अपने चेलों की बड़बड़ाहट का अहसास होने पर मसीह येशु ने व्यक्ति यहदियों के भय के कारण मसीह येशु के विषय में खुलकर कहा, “क्या यह तुम्हारे लिए ठोकर का कारण है? 62 तुम तब क्या बात नहीं करता था. 14 जब उत्सव के मध्य मसीह येशु मंदिर में करोगे जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊपर स्वर्ग में जाते देखोगे, जहां जाकर शिक्षा देने लगे, 15 यहदी अगुए चकित होकर कहने लगे, वह पहले था? 63 आत्मा ही है, जो शरीर को जीवन देती है. केवल “यह व्यक्ति बिना पढ़े जानी कैसे बन गया?” 16 मसीह येशु ने उन्हें शरीर का कुछ महत्व नहीं. जो वचन मैंने तुम्हें कहे हैं, वे आत्मा हैं उत्तर दिया, “यह शिक्षा मेरी नहीं परंतु उनकी है, जिन्होंने मुझे और जीवन भी. 64 फिर भी तुम्हें कुछ हैं, जो मुझमें विश्वास नहीं भेजा है. 17 यदि कोई व्यक्ति उनकी इच्छा पूरी करने के लिए प्रण करते.” मसीह येशु प्रारंभ से जानते थे कि कौन हैं, जो उनमें विश्वास करे तो उसे यह मालूम हो जाएगा कि यह शिक्षा परमेश्वर की ओर नहीं करोंगे और कौन है वह, जो उनके साथ धोखा करेगा. 65 से है या मेरी ओर से. 18 वह, जो अपने ही विचार प्रस्तुत करता तब मसीह येशु ने आगे कहा, “इसलिये मैंने तुम्हें यह कहा कि है, अपना ही आदर चाहता है, परंतु वह, जो अपने भेजनेवाले का कोई भी मेरे पास तब तक नहीं आ सकता जब तक पिता उसे मेरे आदर चाहता है, वह बिलकुल सच्चा है और उसमें कोई छल नहीं. पास न आने दें.” 66 इसके परिणामस्वरूप मसीह येशु के अनेक 19 क्या मोशेह ने तुम्हें व्यवस्था नहीं दी? फिर भी तुम्हें से कोई चेले पीछे हट गए और उनके पीछे चलना छोड़ दिया. 67 यह उसका पालन नहीं करता. मेरी हत्या की ताक में क्यों हो तुम? 20 देख मसीह येशु ने अपने बारह शिष्यों से अभिमुख हो उनसे पूछा, भीड़ ने उत्तर दिया, “कौन तुम्हारी हत्या करना चाहता है? तुम “कहीं तुम भी तो लौट जाना नहीं चाहते?” 68 शिमओन पेटरॉस ने दुश्मासे से पीड़ित हो. 21 मसीह येशु ने कहा, “मैंने शब्दाथ पर उत्तर दिया, “प्रभु, हम किसके पास जाएँ? अनंत काल के जीवन एक चमत्कार किया और तम सब कोवित हो गए. 22 मोशेह ने तुम्हें की बातें तो आप ही के पास हैं. (aiōnios g166) 69 हमने विश्वास खतना विधि दी—परंतु इसको आरंभ करनेवाले मोशेह नहीं, हमारे किया और जान लिया है कि आप ही परमेश्वर के पवित्र जन हैं.” गोप्रिपाति हैं—जिसके अनुसार तुम शब्दाथ पर भी खतना करते हो. 70 मसीह येशु ने उनसे कहा, “क्या स्वयं मैंने तुम जारों को नहीं 23 तुम शब्दाथ पर भी खतना करते हो कि मोशेह की व्यवस्था भग चुना? यह होने पर भी तुम्हें से एक इब्लीस है.” 71 (उनका इशारा न हो, तो तुम लोग इससे गुस्से में क्यों हो कि मैंने शब्दाथ पर किसी कारियोतवासी शिमओन के पुत्र यहदाह की ओर था क्योंकि उन को पूरी तरह स्वस्थ किया? 24 तुम्हारा न्याय बाहरी स्पष्ट पर नहीं बारह शिष्यों में से वही मसीह येशु के साथ धोखा करने पर था.) परंतु सच्चाई पर आधारित हो.” 25 येस्तलेप विवासियों में से कुछ

7 इन बातों के बाद मसीह येशु गलील प्रदेश के अन्य क्षेत्रों में यात्रा करने लगे. वह यहदिया प्रदेश में जाना नहीं चाहते थे क्योंकि यहदी अगुए उनकी हत्या की ताक में थे. 2 यहदियों का एक

इस व्यक्ति की पृष्ठभूमि हमें मालूम है, किंतु जब मरीह प्रकट होंगे हैं।” 50 तब निकोटेमॉस ने, जो प्रधानों में से एक थे तथा मरीह येशु तो किसी को यह मालूम नहीं होगा कि वह कहां के हैं।” 28 मंदिर से पहले मिल चुके थे, उसे कहा, 51 “क्या हमारी व्यवस्था किसी में शिक्षा देते हुए मरीह येशु ने उन्हें शब्द में कहा, “तुम मुझे जानते व्यक्ति की सुने बिना और उसकी गतिविधि जाने बिना उसे अपराधी हो और यह भी जानते हो कि मैं कहां से आया हूं। सच यह है कि मैं घोषित करती हैं?” 52 इस पर उन्होंने निकोटेमॉस से पूछा, “कहीं स्वयं नहीं आया। जिन्होंने मुझे भेजा है, वह सच्चा है किंतु तुम उन्हें तुम भी तो गलीली नहीं हो? शान्तों का मनन करो और देखो कि नहीं जानते, 29 मैं उन्हें जानता हूं क्योंकि उन्हीं मैं से मैं हूं और मुझे किसी भी भविष्यवत्ता का आना गलील प्रदेश से नहीं होता।” 53 उन्हीं ने भेजा है।” 30 यह सुनकर उन्होंने मरीह येशु को बंदी [वे सभी अपने-अपने घर लौट गए]।

बनाना चाहा किंतु किसी ने उन पर हाथ न डाला क्योंकि उनका

समय अब तक नहीं आया था। 31 फिर भी भीड़ में से अनेकों ने मरीह येशु में विश्वास रखा तथा विचार-विमर्श करने लगे, “क्या प्रकट होने पर मरीह इस व्यक्ति से अधिक अद्वित चिह्न प्रदर्शित करेगे?” 32 फरीसियों ने भीड़ को इस विषय में आपस में विचार-विमर्श करते हुए सुन लिया। इसलिये मरीह येशु को बंदी बनाने के लिए प्रधान पुरोहितों व फरीसियों ने मंदिर के पहरेदारों को भेजा। 33 मरीह येशु ने उनसे कहा, “थोड़े समय के लिए मैं तुम्हारे साथ हूं, उसके बाद मैं अपने भेजनेवाले के पास लौट जाऊंगा। 34 तुम मुझे खोजोगे किंतु पाओगे नहीं क्योंकि जहां मैं होऊंगा, तुम वहां नहीं आ सकते。” 35 इस पर यहदी अगुण विचार-विमर्श करने लगे, “यह व्यक्ति कहां जाने पर है कि हम उसे खोज नहीं पाएंगे? क्या यह यज्ञानियों के मध्य प्रवारी यहदियों में बसना चाहता है कि यज्ञानियों को भी शिक्षा दे? 36 यह क्या कह रहा है कि तुम मुझे खोजोगे और नहीं पाओगे क्योंकि जहां मैं होऊंगा तुम वहां नहीं आ सकते?” 37 उत्सव के अंतिम दिन, जब उत्सव चरम सीमा पर होता है, मरीह येशु ने खड़े होकर ऊचे शब्द में कहा, “यदि कोई प्यासा है तो मेरे पास आए और पिए। 38 जो मुझमें विश्वास करता है, जैसा कि पवित्र शाश्वत का लेख है: उसके अंदर से जीवन के जल की नदियां बह निकलतींगी।” 39 यह उन्होंने पवित्र आत्मा के विषय में कहा था, जिन्हें उन पर विश्वास करनेवाले प्राप्त करने पर थे। पवित्र आत्मा अब तक उत्तरे नहीं थे क्योंकि मरीह येशु अब तक महिमा को न पहुंचे थे। 40 यह सब सुनकर भीड़ में से कुछ ने कहा, “सचमुच यह व्यक्ति ही वह भविष्यवत्ता है।” 41 कुछ अन्य ने कहा, “यह मरीह है।” परत कुछ ने कहा, “मरीह का आना गलील से तो नहीं होगा न? 42 क्या पवित्र शाश्वत के अनुसार मरीह का आना दावीद के वंश और उनके नगर बेथलेहेम से न होगा?” 43 इस प्रकार मरीह येशु के कारण भीड़ में मतभेद हो गया। 44 कुछ उन्हें बंदी बनाना चाहते थे फिर भी किसी ने भी उन पर हाथ न डाला। 45 संतरियों के लौटने पर प्रधान पुरोहितों और फरीसियों ने उनसे पूछा, “तुम उसे लेकर क्यों नहीं आए?” 46 संतरियों ने उत्तर दिया, “ऐसा बतानेवाला हमने आज तक नहीं सुना।” 47 तब फरीसियों ने कटाक्ष किया, “कहीं तुम भी तो उसके बहकावे में नहीं आ गए? 48 क्या प्रधानों या फरीसियों में से किसी ने भी उसमें विश्वास किया है? 49 व्यवस्था से अज्ञान भीड़ तो वैसे ही शापित

8 और येशु जैतून पर्वत पर चले गये। 2 भोर को वह दोबारा मंदिर में आए और लोगों के मध्य बैठकर उनको शिक्षा देने लगे। 3 उसी समय फरीसियों व शास्त्रियों ने व्यभिचार के कार्य में पकड़ी गई एक छीं को लाकर मध्य में छड़ा कर दिया 4 और मरीह येशु से प्रश्न किया, “गुरु, यह छीं व्यभिचार करते हुए पकड़ी गई है। 5 मोशें ने व्यवस्था में हमें ऐसी छियों को पथराव द्वारा मार डालने की आज्ञा दी है; किंतु आप क्या कहते हैं?” 6 उन्होंने मरीह येशु को परखने के लिए यह प्रश्न किया था कि उन पर आरोप लगाने के लिए उन्हें कोई आधार मिल जाए। किंतु मरीह येशु झुककर भूमि पर उंगली से लिखने लगे। 7 जब वे मरीह येशु से बार-बार प्रश्न करते रहे, मरीह येशु ने सीधे खड़े होकर उनसे कहा, “तुममें से जिस किसी ने कभी कोई पाप न किया हो, वही उसे सबसे पहला पत्थर मारे।”

8 और वह दोबारा झुककर भूमि पर लिखने लगे। 9 यह सुनकर वरिष्ठ से प्रारंभ कर एक-एक करके सब वहां से चले गए—केवल वह छीं और मरीह येशु ही वहां रह गए। 10 मरीह येशु ने सीधे खड़े होते हुए छीं की ओर देखकर उससे पूछा, “हे छीं! वे सब कहां हैं? क्या तुम्हें किसी ने भी दंडित नहीं किया?” 11 उसने उत्तर दिया, “किसी ने भी नहीं, प्रभु。” मरीह येशु ने उससे कहा, “मैं भी तुम्हें दंडित नहीं करता। जाओ, अब फिर पाप न करना।”

12 मंदिर में अपनी शिक्षा को दोबारा आरंभ करते हुए मरीह येशु ने लोगों से कहा, “संसार की ज्योति मैं ही हूं। जो कोई मेरे पीछे चलता है, वह अंधकार में कभी न चलेगा क्योंकि जीवन की ज्योति उसी में बसेगी।” 13 तब फरीसियों ने उनसे कहा, “तुम अपने ही विषय में गवाही दे रहे हो इसलिये तुम्हारी गवाही स्वीकार नहीं की जा सकती है।” 14 मरीह येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “यदि मैं स्वयं अपने विषय में गवाही दे भी रहा हूं, तो भी मेरी गवाही स्वीकार की जा सकती है क्योंकि मुझे मालूम है कि मैं कहां से आया हूं और कहां जा रहा हूं; किंतु तुम लोग नहीं जानते कि मैं कहां से आया हूं और कहां जा रहा हूं। 15 तुम लोग मानवीय सोच से अन्य लोगों का न्याय करते हो; मैं किसी का न्याय नहीं करता। 16 यदि मैं किसी का न्याय करूं भी तो वह सही ही होगा, क्योंकि इसमें मैं अकेला नहीं—इसमें मैं और मेरे भेजने वाला पिता भी शामिल हैं।

17 तुम्हारी व्यवस्था में ही यह लिखा है कि दो व्यक्तियों की गवाही सच के स्पष्ट में स्वीकार की जा सकती है। 18 एक गवाह तो मैं ही हूं,

जो स्वयं अपने विषय में गवाही दे रहा है और मेरे विषय में अन्य से कहा, “हमारे पिता अब्राहाम है.” मसीह येशु ने उनसे कहा, गवाह—मेरे भेजनेवाले—पिता परमेश्वर हैं।” 19 तब उन्होंने मसीह “यदि तुम अब्राहाम की संतान हो तो अब्राहाम के समान व्यवहार भी येशु से पछा, “कहां है तुम्हारा यह पिता?” मसीह येशु ने उन्हें उत्तर करो। 40 तुम मेरी हत्या करना चाहते हो—मैं, जिसने परमेश्वर से दिया, “न तो तुम मुझे जानते हो और न ही मेरे पिता को; यदि तुम प्राप्त सच तुम पर प्रकट किया है। अब्राहाम का व्यवहार ऐसा नहीं मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जान लेते。” 20 मसीह येशु ने ये था। 41 तुम्हारा व्यवहार तुहारे ही पिता के समान है।” इस पर वचन मंदिर परिसर में शिक्षा देते समय कहे, फिर भी किसी ने उन उन्होंने विरोध किया, “हम अवैध संतान नहीं हैं, हमारा एक ही पर हाथ नहीं डाला क्योंकि उनका समय अभी नहीं आया था। 21 पिता है—परमेश्वर।” 42 मसीह येशु ने उनसे कहा, “यदि परमेश्वर मसीह येशु ने उनसे फिर कहा, “मैं जा रहा हूँ। तुम मुझे खोजते तुम्हारे पिता होते तो तुम मुझसे प्रेम करते क्योंकि मैं परमेश्वर से खोजते अपने ही पाप में मर जाओगे। जहां मैं जा रहा हूँ, तुम वहां हैं। मैं अपनी इच्छा से नहीं आया; परमेश्वर ने मुझे भेजा है। 43 नहीं आ सकते।” 22 तब यहदी अगुण आपस में विचार करने लगे, मेरी बातें तुम इसलिये नहीं समझते कि तुममें मेरा सदेश सुनने की “कहीं वह आत्महत्या तो नहीं करेगा क्योंकि वह कह रहा है, क्षमता नहीं है। 44 तुम अपने पिता शैतान से हो और उसी पिता की ‘जहां मैं जा रहा हूँ, वहां तुम नहीं आ सकते?’” 23 मसीह येशु ने इच्छाओं को पूरा करना चाहते हो। वह प्रारंभ से ही ही हत्यारा है और उनसे कहा, “तुम नीचे के हो, मैं ऊपर का हूँ, तुम इस संसार के सच उसका आधार कभी रहा ही नहीं क्योंकि सच उसमें ही हो, मैं इस संसार का नहीं हूँ। 24 मैं तुमसे कह चुका हूँ कि तुम्हारे नहीं जब वह कुछ भी कहता है, अपने स्वभाव के अनुसार झूँठ ही पापों में ही तुम्हारी मृत्यु होगी। क्योंकि जब तक तुम यह विचास न करता है, क्योंकि वह झूँठ और झूँठ का पिता है। 45 मैं सच कहता करोगे कि मैं ही हूँ, जो मैं कहता हूँ, तुम्हारी अपने ही पापों में मृत्यु हूँ इसलिये तुम मेरा विचास नहीं करते। 46 तुममें से कोन मुझे पापी होना निश्चित है।” 25 तब उन्होंने उनसे पूछा, “कौन हो तुम?” प्रामाणित कर सकता है? तो जब मैं सच कहता हूँ तो तुम मेरा विचास मसीह येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “तुमसे मैं अब तक क्या कहता आ क्यों नहीं करते? 47 वह, जो परमेश्वर का है, परमेश्वर के वचनों रहा हूँ? 26 तुम्हारे विषय में मुझे बहुत कुछ कहना और निर्णय करना को सुनता है। ये वचन तुम इसलिये नहीं सुनते कि तुम परमेश्वर हैं। मैं संसार से वही कहता हूँ, जो मैंने अपने भेजनेवाले से सुना है। के नहीं हो।” 48 इस पर यहदी अगुण बोले, “तो क्या हमारा यह मेरे भेजनेवाले विचासयोग है।” 27 वे अब तक यह समझ नहीं मत सही नहीं कि तुम शमरियावासी हो और तुममें दुष्टात्मा समाया पाए थे कि मसीह येशु उनसे पिता परमेश्वर के विषय में कह रहे थे। हुआ है?” 49 मसीह येशु ने उत्तर दिया, “मुझमें दुष्टात्मा नहीं है। 28 मसीह येशु ने उनसे कहा, “जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊंचा मैं अपने पिता का समान करता हूँ और तुम मेरा अपमान करते उठाओगे तब तुम जान लोगे कि मैं वही हूँ और यह भी कि मैं स्वयं हूँ। 50 मैं अपनी महिमा के लिए प्रयास नहीं करता हूँ; एक हैं, जो कुछ नहीं कहता, मैं वही कहता हूँ, जो पिता ने मुझे सिखाया है। 29 इसके लिए प्रयास करते हैं और निर्णय भी वही करते हैं। 51 मैं तुम मेरे भेजनेवाले मेरे साथ हैं, उन्होंने मुझे अकेला नहीं छोड़ा क्योंकि पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूँ: यदि कोई मेरी शिक्षा का मैं सदा वही करता हूँ, जिसमें उनकी खुशी है।” 30 ये सब सुनकर पालन करेगा, उसकी मृत्यु कभी न होगी। (aiōn g165) 52 इस पर अनेकों ने मसीह येशु में विचास किया। 31 तब मसीह येशु ने उन यहदियों ने मसीह येशु से कहा, “अब हमें निश्चय हो गया कि तुममें यहदियों से, जिन्होंने उन्हें मान्यता दे दी थी, कहा, “यदि तुम मेरी दुष्टात्मा हैं। अब्राहाम और भविष्यद्वत्ताओं की मृत्यु हो चुकी और शिक्षाओं का पालन करते रहेगे तो वास्तव में मेरे शिष्य होंगे। 32 तुम तुम कहते हो कि जो कोई तुम्हारी शिक्षा का पालन करेगा, उसकी सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।” 33 उन्होंने मसीह मृत्यु कभी न होगी। (aiōn g165) 53 क्या तुम हमारे पिता अब्राहाम येशु को उत्तर दिया, “हम अब्राहाम के बंशज हैं और हम कभी भी से भी बड़े हो? उनकी मृत्यु हर्ई और भविष्यद्वत्ताओं की भी। तुम किसी के दास नहीं हुए। तुम यह कैसे कहते हो ‘तुम स्वतंत्र हो अपने आपको समझते क्या हो?’” 54 मसीह येशु ने उत्तर दिया, जाओगे?” 34 मसीह येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “मैं तुम पर यह “यदि मैं स्वतंत्र को गौरवान्वित करता हूँ तो मेरी महिमा वर्ध है। अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूँ: हर एक व्यक्ति, जो पाप करता है, जिन्होंने मुझे गौरवान्वित किया है वह मेरे पिता है, जिन्होंने तुम अपना वह पाप का दास है। 35 दास हमेशा घर में नहीं रहता; पुत्र हमेशा परमेश्वर मानते हो। 55 तुम उन्हें नहीं जानते, मैं उन्हें जानता हूँ। रहता है। (aiōn g165) 36 इसलिये यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करे तो तुम यदि मैं यह कहता कि मैं उन्हें नहीं जानता तो मैं भी तुम्हारे समान वास्तव में स्वतंत्र हो जाओगे। 37 मैं जानता हूँ कि तुम अब्राहाम के झूठा साबित हो जाऊंगा, मैं उन्हें जानता हूँ, इसलिये उनके आदेशों बंशज हो, फिर भी तुम मेरी हत्या करने की ताक में हो; यह इसलिये का पालन करता हूँ। 56 तुम्हारे पिता अब्राहाम मेरा दिन देखने की कि तुमने मेरे सदेश को हादय में ग्रहण नहीं किया। 38 मैं वही कहता आशा में मग्न हुए थे, उन्होंने इसे देखा और आनंदित हुए।” 57 हूँ, जो मैंने साक्षात् अपने पिता को करते हुए देखा है, परंतु तुम वह तब यहदियों ने कटाक्ष किया, “तुम्हारी आयु तो अभी पचास वर्ष करते हो, जो तुमने अपने पिता से सुना है।” 39 उन्होंने मसीह येशु की भी नहीं है और तुमने अब्राहाम को देखा है?” 58 मसीह येशु

ने उनसे कहा, “मैं तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूँ: है, जिसके विषय में तुम कहते हो कि वह जन्म से अंधा था? अब अब्राहाम के जन्म के पूर्व से ही मैं हूँ.” 59 यह सुनते ही उन्होंने यह कैसे देखने लगा?” 20 उसके माता-पिता ने उत्तर दिया, “हाँ, मसीह येशु का पथराव करने के लिए पत्थर उठा लिए किंतु मसीह यह तो हम जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है और यह भी कि यह अंधा येशु उनकी दृष्टि से बचते हुए मंदिर से निकल गए.

9 वहाँ से जाते हुए मार्ग में मसीह येशु को जन्म से अंधा एक व्यक्ति मिला, 2 जिसे देख उनके शिष्यों ने उनसे पूछा, “रबी, किसके पाप के कारण यह व्यक्ति अंधा जन्मा—इसके या इसके माता-पिता के?” 3 मसीह येशु ने उत्तर दिया, “न इसके और न ही इसके माता-पिता के पाप, के कारण परंतु इसलिये कि इसमें परमेश्वर का काम प्रकट हो। 4 अवश्य है कि मेरे भेजनेवाले का काम हम दिन रहते ही कर लें। रात आ रही है, जब कोई व्यक्ति काम नहीं कर पाएगा। 5 जब तक मैं संसार में हूँ, मैं ही हूँ संसार की ज्योति।” 6 यह कहने के बाद उन्होंने भूमि पर थका, थक से मिट्ठी का लेप बनाया और उससे अंधे व्यक्ति की आंखों पर लेप किया 7 और उससे कहा, “जाओ, सीलोअम के कुंड में धो लो。” सीलोअम का अर्थ है भेजा हुआ। इसलिये उसने जाकर धोया और देखता हुआ लौटा। 8 तब उसके पडोसी और वे, जिन्होंने उसे इसके पूर्व भिक्षा मांगते हुए देखा था, आपस में कहने लगे, “क्या यह वही नहीं, जो बैठा हुआ भीख मांग करता था?” 9 कुछ ने पुष्टि की कि यह वही है। कुछ ने कहा, “नहीं, यह मारु उसके समान दिखता है।” जबकि वह कहता रहा, “मैं वही हूँ.” 10 इसलिये उन्होंने उससे पूछा, “तुम्हें दृष्टि प्राप्त कैसे हुई?” 11 उसने उत्तर दिया, “येशु नामक एक व्यक्ति ने मिट्ठी का लेप बनाया और उससे मेरी आंखों पर लेप कर मझे आझा दी, ‘जाओ, सीलोअम के कुंड में धो लो।’ मैंने जाकर धोया और मैं देखने लगा。” 12 उन्होंने उससे पूछा, “अब कहाँ है वह व्यक्ति?” उसने उत्तर दिया, “मैं नहीं जानता।” 13 तब वे उस व्यक्ति को जो पहले अंधा था, फरीसियों के पास ले गए। 14 जिस दिन मसीह येशु ने उसे आंख की रोशनी देने की प्रक्रिया में मिट्ठी का लेप बनाया था, वह शब्दाथ था। 15 फरीसियों ने उस व्यक्ति से पूछताछ की कि उसने दृष्टि प्राप्त कैसे की? उसने उन्हें उत्तर दिया, “उन्होंने मेरी आंखों पर मिट्ठी का लेप लगाया, मैंने उन्हें धोया और अब मैं देख सकता हूँ।” 16 इस पर कुछ फरीसी कहने लगे, “वह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से नहीं है, क्योंकि वह शब्दाथ के विधान का पालन नहीं करता।” परंतु अन्य कहने लगे, “कोई पापी व्यक्ति ऐसे अद्वृत चिह्न कैसे दिखा सकता है?” इस विषय को लेकर उनमें मतभेद हो गया। 17 अतः उन्होंने जो पहले अंधा था उस व्यक्ति से दोबारा पूछा, “जिस व्यक्ति ने तुम्हें आंखों की रोशनी दी है, उसके विषय में तुम्हारा क्या मत है?” उसने उत्तर दिया, “वह भविष्यवत्ता है।” 18 यहदी अग्रुं यह विश्वास ही नहीं कर पा रहे थे कि वह, जो पहले अंधा था, अब देख सकता है। इसलिये उन्होंने उसके माता-पिता को बुलवाया 19 और उनसे पूछा, “क्या यह तुम्हारा पुत्र

ही जन्मा था; 21 किंतु हम यह नहीं जानते कि यह कैसे देखने लगा या किसने उसे आंखों की रोशनी दी है। वह बालक नहीं है, आप उसी से पूछ लीजिए। वह अपने विषय में स्वयं ही बताएगा।” 22 उसके माता-पिता ने यहदी अग्रुओं के भय से ऐसा कहा था क्योंकि यहदी अग्रु पहले ही एक मत हो चुके थे कि यदि किसी भी व्यक्ति ने मसीह येशु को मसीह के स्पृष्ट में मान्यता दी तो उसे यहदी सभागृह से बाहर कर दिया जाएगा। 23 इसलिये उसके माता-पिता ने कहा था, “वह बालक नहीं है, आप उसी से पूछ लीजिए।” 24 इसलिये फरीसियों ने जो पहले अंधा था उसको दोबारा बुलाया और कहा, “परमेश्वर की महिमा करो। हम यह जानते हैं कि वह व्यक्ति पापी है।” 25 उसने उत्तर दिया, “वह पापी है या नहीं, यह तो मैं नहीं जानता; हाँ, इतना मैं अवश्य जानता हूँ कि मैं अंधा था और अब देखता हूँ।” 26 इस पर उन्होंने उससे दोबारा प्रश्न किया, “उस व्यक्ति ने ऐसा क्या किया कि तुम्हें आंखों की रोशनी मिल गई?” 27 उसने उत्तर दिया, “मैं पहले ही बता चुका हूँ परंतु आप लोगों ने सुना नहीं। आप लोग बार-बार क्यों सुनना चाहते हैं? क्या आप लोग भी उनके चेले बनना चाहते हैं?” 28 इस पर उन्होंने उसकी उल्लाहना करते हुए उससे कहा, “तू ही है उसका चेला! हम तो मोशेह के चेले हैं।” 29 हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मोशेह से बातें की थीं। जहाँ तक इस व्यक्ति का प्रश्न है, हम नहीं जानते कि वह कहाँ से आया है।” 30 उसने उनसे कहा, “तब तो यह बड़े आश्वर्य का विषय है। आपको यह भी मालूम नहीं कि वह कहाँ से हैं जबकि उन्होंने मुझे आंखों की रोशनी दी है।” 31 हम सभी जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनते—वह उसकी सुनते हैं, जो परमेश्वर के भक्त हैं तथा उनकी इच्छा पूरी करते हैं। 32 आदिकाल से कभी ऐसा सुनने में नहीं आया कि किसी ने जन्म के अंधे को आंखों की रोशनी दी हो। (aión g165) 33 यदि वह परमेश्वर की ओर से न होते तो वह कुछ भी नहीं कर सकते थे।” 34 यह सुन उन्होंने उस व्यक्ति से कहा, “तू तो पूरी तरह से पाप में जन्मा है और हमें सिखाता है।” यह कहते हुए उन्होंने उसे यहदी सभागृह से बाहर निकाल दिया। 35 जब मसीह येशु ने यह सुना कि यहदियों ने उस व्यक्ति को सभागृह से बाहर निकाल दिया है तो उससे पिलने पर उन्होंने प्रश्न किया, “क्या तुम मनुष्य के पुत्र में विश्वास करते हो?” 36 उसने पूछा, “प्रभु, वह कौन है कि मैं उनमें विश्वास करूँ?” 37 मसीह येशु ने उससे कहा, “उसे तुमने देखा है और जो तुमसे बातें कर रहा है, वह वही है।” 38 उसने उत्तर दिया, “मैं विश्वास करता हूँ, प्रभु!” और उसने दंडवत करते हुए उनकी बंदना की। 39 तब मसीह येशु ने कहा, “मैं इस संसार में न्याय के लिए ही आया हूँ कि जो नहीं देखते, वे देखें और जो देखते हैं, वे अंधे हो जाएं।” 40 वहाँ खड़े कुछ फरीसियों ने इन

शब्दों को सुनकर कहा, “तो क्या हम भी अंधे हैं?” 41 मसीह येशु आंदों की रोशनी दे सकता है?” 22 शीत क्रतु थी और येस्शलेम में ने उनसे कहा, “यदि तुम अंधे होते तो तुम दोषी न होते किंतु इसलिये समर्पण पर्व मनाया जा रहा था. 23 मसीह येशु मंदिर परिसर में कि तुम कहते हो, ‘हम देखते हैं’, तुम्हारा दोष बना रहता है.

10 “मैं तुम फरीसियों पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा

हूं. वह, जो भेड़शाला में द्वार से प्रवेश नहीं करता परंतु बड़ा फांद कर धुसता है, चोर और लुटेरा है, 2 परंतु जो द्वार से प्रवेश करता है, वह भेड़ों का चरवाहा है. 3 उसके लिए द्वारपाल द्वार खोल देता है, भेड़ उसकी आवाज सुनती हैं. वह अपनी भेड़ों को नाम लेकर बुलाता और उन्हें बाहर ले जाता है. 4 अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल लेने के बाद वह उनके आगे-आगे चलता है और भेड़ उसके पीछे-पीछे क्योंकि वे उसकी आवाज पहचानती हैं. 5 वे किसी अनजान के पीछे कभी नहीं चलते और उनसे भागेंगी क्योंकि वे उस अनजान की आवाज नहीं पहचानती.” 6 मसीह येशु के इस दृश्यांत का मतलब सुनेवाले फरीसी नहीं समझे कि वह उनसे कहना क्या चाह रहे थे. 7 इसलिये मसीह येशु ने दोबारा कहा, “मैं तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं. भेड़ों का द्वार मैं ही हूं. 8 वे सभी, जो मुझसे पहले आए, चोर और लुटेरे थे. भेड़ों ने उनकी नहीं सुनी. 9 द्वार मैं ही हूं. यदि कोई मुझसे होकर प्रवेश करता है तो उद्घार प्राप्त करेगा. वह भीतर बाहर आया जाया करेगा और चारा पाएगा. 10 चोर किसी अन्य उद्देश्य से नहीं, मात्र चुराने, हत्या करने और नाश करने आता है; मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं और बहातायत का जीवन पाएं. 11 “मैं ही हूं अच्छा चरवाहा. अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए अपने प्राण दे देता है. 12 मजदूर, जो न तो चरवाहा है और न भेड़ों का स्वामी, भेड़िये को आते देख भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है. भेड़िया उन्हें पकड़ता है और वे तितर-बितर हो जाती हैं. 13 इसलिये कि वह मजदूर है, उसे भेड़ों की कोई चिंता नहीं है. 14 “मैं ही हूं अच्छा चरवाहा. मैं अपनों को जानता हूं और मेरे अपने मुझे; 15 ठीक जिस प्रकार पिता परमेश्वर मुझे जानते हैं, और मैं उन्हें भेड़ों के लिए मैं अपने प्राण भेट कर देता हूं. 16 मेरी और भी भेड़ें हैं, जो अब तक इस भेड़शाला में नहीं हैं. मुझे उन्हें भी लाना है. वे मेरी आवाज सुनेंगी; तब एक ही झुंड और एक ही चरवाहा होगा. 17 पिता मुझसे प्रेम इसलिये करते हैं कि मैं अपने प्राण भेट कर देता हूं—कि उन्हें दोबारा प्राप्त करूं. 18 कोई भी मुझसे मेरे प्राण छीन नहीं रहा—मैं अपने प्राण अपनी इच्छा से भेट कर रहा हूं. मुझे अपने प्राण भेट करने और उसे दोबारा प्राप्त करने का अधिकार है, जो मुझे अपने पिता की ओर से प्राप्त हुआ है.” 19 मसीह येशु के इस वक्तव्य के कारण यहदियों में दोबारा मतभेद उत्पन्न हो गया. 20 उनमें से कुछ ने कहा, “यह दृश्यात्मा से पीड़ित है या निपट सिरफिरा. क्यों सुनते हो तुम उसकी?” 21 कुछ अन्य लोगों ने कहा, “ये वचन दृश्यात्मा से पीड़ित व्यक्ति के नहीं हो सकते; क्या कोई दृश्यात्मा अंदों को

शलोमोन के द्वारा बना हुए मंडप में टहल हरे थे. 24 यहदी अगुओं ने उन्हें घेर लिया और जानना चाहा, “तुम हमें कब कत दुविधा में डाले रहोगे? यदि तुम ही मसीह हो तो हमें स्पष्ट बता दो.” 25 मसीह येशु ने उत्तर दिया, “मैंने तो आपको बता दिया है, किंतु आप ही विश्वास नहीं करते. सभी काम, जो मैं अपने पिता के नाम में करता हूं, वे ही मेरे गवाह हैं. 26 आप विश्वास नहीं करते क्योंकि आप मेरी भेड़े नहीं हैं. 27 मेरी भेड़े मेरी आवाज सुनती हैं. मैं उन्हें जानता हूं और वे मेरे पीछे-पीछे चलती हैं. 28 मैं उन्हें अनंत काल का जीवन देता हूं. वे कभी नाश न होंगी और कोई भी उन्हें मेरे हाथ से छीन नहीं सकता. (aiōn g165, aiōnios g166) 29 मेरे पिता, जिन्होंने उन्हें मुझे सौंपा है, सबसे बड़ा है और कोई भी इन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता. 30 मैं और पिता एक तत्व हैं.” 31 तब यहदियों ने दोबारा उनका पथराव करने के लिए पथर उठा लिए. 32 मसीह येशु ने उनसे प्रश्न किया, “मैंने अपने पिता की ओर से तुम्हारे सामने अनेक भले काम किए. उनमें से किस काम के लिए तुम मेरा पथराव करना चाहते हो?” 33 यहदियों ने उत्तर दिया, “भले काम के कारण नहीं, परंतु परमेश्वर-निदा के कारण: तुम मनुष्य होते हुए स्वयं को परमेश्वर घोषित करते हो!” 34 मसीह येशु ने उनसे पछा, “क्या तुहारे व्यवस्था में यह नहीं लिखा: मैंने कहा कि तुम ईश्वर हो? 35 जिन्हें परमेश्वर का सदेश दिया गया था, उन्हें ईश्वर कहकर सबोधित किया गया—और पवित्र शास्त्र का लेख टल नहीं सकता, 36 तो जिसे पिता ने विशेष उद्देश्य पूरा करने के लिए अलग कर संसार में भेज दिया है, उसके विषय में आप यह घोषणा कर रहे हैं: ‘तुम परमेश्वर की निदा कर रहे हो!’ क्या मात्र इसलिये कि मैंने यह दावा किया है, ‘मैं परमेश्वर का पुत्र हूं?’ 37 मत करो मुझमें विश्वास यदि मैं अपने पिता के काम नहीं कर रहा. 38 परंतु यदि मैं ये काम कर ही रहा हूं, तो भले ही तुम मुझमें विश्वास न करो, इन कामों में तो विश्वास करो कि तुम जान जाओ और समझ लो कि पिता परमेश्वर मुझमें हैं और मैं पिता परमेश्वर मैं.” 39 इस पर उन्होंने दोबारा मसीह येशु को बंदी बनाने का प्रयास किया, किंतु वह उनके हाथ से बचकर निकल गए. 40 इसके बाद मसीह येशु यरदन नदी के पार दोबारा उस स्थान को चले गए, जहां पहले योहन बपतिस्मा देते थे और वह वही ठहरे रहे. 41 वहां अनेक लोग उनके पास आने लगे. वे कह रहे थे, “यद्यपि योहन ने कोई अद्भुत चिह्न नहीं दिखाया, पिर भी जो कुछ उन्होंने इनके विषय में कहा था, वह सब सच है.” 42 वहां अनेक लोगों ने मसीह येशु में विश्वास किया.

11 लाजरॉस नामक व्यक्ति बीमार था, जो मरियम तथा उसकी बहन मार्था के गांव बैथनियाह का निवासी था. 2 यह वही

मरियम थी, जिसने कीमती और शुद्ध सुगंध द्रव्य से मसीह येशु के मसीह है, आप ही परमेश्वर के पुत्र हैं और आप ही वह है, जिनके चरणों को मलकर उहें अपने केशों से पोछा था, उसी का भाई संसार में आने के बारे में पहले से बताया गया था।” 28 यह कहकर लाजरॉस अस्वस्थ था। 3 इसलिये बहनों ने मसीह येशु को संदेश वह लौट गई और अपनी बहन मरियम को अलग ले जाकर उसे भेजा, “प्रभु, आपका प्रिय, लाजरॉस बीमार है।” 4 यह सुनकर सूचित किया, “गुम्बर आ गए हैं और तुहें बुला रहे हैं।” 29 यह मसीह येशु ने कहा, “यह बीमारी मृत्यु की नहीं, परंतु परमेश्वर की सुनकर मरियम तकाल मसीह येशु से मिलने निकल पड़ी। 30 महिमा का साधन बनेगी, जिससे परमेश्वर का पुत्र गौरवाचित हो।” मसीह येशु ने अब तक नारा में प्रवेश नहीं किया था। वह वही 5 मार्था, उसकी बहन मरियम और लाजरॉस मसीह येशु के प्रियजन थे, जहां मार्था ने उनसे भेट की थी। 31 जब वहां शांति देने आए थे। 6 उसकी बीमारी के विषय में मालूम होने पर भी मसीह येशु यहदियों ने मरियम को एकाएक उठकर बाहर जाते हुए देखा तो वे वहीं दो दिन और ठहरे रहे, जहां वह थे। 7 इसके बाद उन्होंने अपने भी उसके पीछे-पीछे यह समझकर चले गए कि वह कब्र पर रोने के शिष्यों से कहा, “चलो, हम दोबारा यहदिया चलें।” 8 शिष्यों लिए जा रही है। 32 मसीह येशु के पास पहुंच मरियम उनके चरणों ने उनसे प्रश्न किया, “रब्बी, अभी तो यहदी अगुए पथराव द्वारा मैं गिर पड़ी और कहने लगी, “प्रभु, यदि आप यहां होते तो मेरे भाई आपकी हत्या करना चाह रहे थे, फिर भी आप वहां जाना चाहते की मृत्यु न होती।” 33 मसीह येशु ने उसे और उसके साथ आए हैं? 9 मसीह येशु ने उत्तर दिया, “क्या दिन में प्रकाश के बारह यहदियों को रोते हुए देखा तो उनका हृदय व्याकुल हो उठा। उन्होंने घटे नहीं होते? यदि कोई दिन में चले तो वह ठोकर नहीं खाता उदास शब्द में पूछा, 34 “तुमने उसे कहा रखा है?” उन्होंने उनसे क्योंकि वह संसार की ज्योति को देखता है। 10 किंतु यदि कोई रात कहा, “आइए, प्रभु, देख लीजिए।” 35 येशु रोया! 36 यह देख शेष में चले तो ठोकर खाता है क्योंकि उसमें ज्योति नहीं।” 11 इसके यहदी कहने लगे, “देखो इहें (येशु को) वह कितना प्रिय था!” 37 बाद मसीह येशु ने उनसे कहा, “हमारा मित्र लाजरॉस सो गया है। परंतु उन्हें से कुछ ने कहा, “क्या यह, जिन्होंने अधे को आंखों की मैं जा रहा हूं कि उसे नीद से जगाऊं।” 12 तब शिष्यों ने उनसे रोशनी दी, इस व्यक्ति को मृत्यु से बचा न सकते थे? 38 दोबारा कहा, “प्रभु, यदि वह मात्र सो गया है तो स्वस्थ हो जाएगा।” 13 बहुत उदास होकर मसीह येशु कब्र पर आए, जो वस्तुतः एक कंदरा मसीह येशु ने तो उसकी मृत्यु के विषय में कहा था किंतु शिष्य समझे थी, जिसके प्रवेश द्वार पर एक पत्थर रखा हुआ था। 39 मसीह येशु कि वह नीद के विषय में कह रहे थे। 14 इस पर मसीह येशु ने वे बह पत्थर हटाने को कहा। मृतक की बहन मार्था ने आपति प्रकट उनसे सप्त शब्दों में कहा, “लाजरॉस की मृत्यु हो चुकी है। 15 यह करते हुए उनसे कहा, “प्रभु, उसे मेरे हुए चार दिन हो चुके हैं। अब तुम्हारे ही हित में है कि मैं वहां नहीं था—कि तुम विवास करो। तो उसमें से दूरी आ रही होगी।” 40 मसीह येशु ने उनसे कहा, आओ, अब हम उसके पास चलें।” 16 तब थोमार्स ने, जिनका “क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि यदि तुम विवास करोगी तो उपनाम दिदुमोस था, अपने साथी शिष्यों से कहा, “आओ, इनके परमेश्वर की महिमा को देखोगी?” 41 इसलिये उन्होंने पत्थर हटा साथ हम भी मरने चलें।” 17 वहां पहुंचकर मसीह येशु को मालूम दिया। मसीह येशु ने अपनी आंखें ऊपर उठाई और कहा, “पिता, मैं हुआ कि लाजरॉस को कंदरा-कब्र में रखे हुए चार दिन हो चुके हैं। आपका धन्यवाद करता हूं कि आपने मेरी सुन ली। 42 मैं जानता हूं 18 बैथनियाह नगर येस्सलेम के पास, लगभग तीन किलोमीटर की कि आप हमेशा मेरी सुनते हैं किंतु यहां उपस्थित भीड़ के कारण दूरी पर था। 19 अनेक यहदी अगुए मार्था और मरियम के पास मैंने ऐसा कहा है कि वे सब विवास करें कि आपने ही मुझे भेजा उनके भाई की मृत्यु पर शांति देने आ गए थे। 20 जैसे ही मार्था को है।” 43 तब उन्होंने ऊंचे शब्द में पुकारा, “लाजरॉस, बाहर आ मसीह येशु के नगर के पास होने की सूचना मिली, वह उनसे मिलने जाओ।” 44 वह, जो चार दिन से मरा हुआ था, बाहर आ गया। चली गई किंतु मरियम घर में ही रही। 21 मार्था ने मसीह येशु से उसका सारा शरीर पटियों में और उसका मुख कपड़े में लिपटा हुआ कहा, “प्रभु, यदि आप यहां होते तो मेरे भाई की मृत्यु न होती। 22 था। मसीह येशु ने उनसे कहा, “इसे खोल दो और जाने दो।” 45 यह फिर भी मैं जानती हूं कि अब भी आप परमेश्वर से जो कुछ मांगेंगे, देख मरियम के पास आए यहदियों में से अनेकों ने मसीह येशु में वह आपको देंगे।” 23 मसीह येशु ने उनसे कहा, “तुम्हारा भाई पिर विवास किया। 46 परंतु कुछ ने फरीसियों को जा बताया कि मसीह से जीवित हो जाएगा।” 24 मार्था ने मसीह येशु से कहा, ‘‘मैं जानती येशु से क्या-क्या किया था। 47 तब प्रधान पुरोहितों और फरीसियों हैं। अंतिम दिन पुनर्स्थान के समय वह फिर से जीवित हो जाएगा।” ने महामध्या बुलाई और कहा: “हम इस व्यक्ति के विषय में क्या कर 25 मसीह येशु ने उनसे कहा, “मैं ही हूं पुनर्स्थान और जीवन। जो रहे हैं? यह अद्भुत विद्वां पर चिन्ह दिखा रहा है। 48 यदि हम इसे ये कोई मुझमें विवास करता है, वह जिएगा—भले ही उसकी मृत्यु सब यों ही करते रहने दें तो सभी इसमें विवास करने लगेंगे और हो जाए। 26 तथा वह जीवित व्यक्ति, जो मुझमें विवास करता है, रोमी हमसे हमारे अधिकार व राष्ट्र दोनों ही छीन लेंगे।” 49 तब सभा उसकी मृत्यु कभी न होगी। क्या तुम यह विवास करती हो?” (aión में उपस्थित उस वर्ष के महापुरोहित कायाक्षर ने कहा, “आप न 265) 27 उसने कहा, “जी हां, प्रभु, मुझे विवास है कि आप ही तो कुछ जानते हैं 50 और न ही यह समझते हैं कि सारी जनता

के विनाश की बजाय मात्र एक व्यक्ति राष्ट्र के हित में प्राणों का है वह, जो प्रभु के नाम में आ रहे हैं!” “धन्य है इमाल के राजा!” त्याग करना आपके लिए भला है!” 51 यह उसने अपनी ओर से 14 वहां मसीह येशु गदे के एक बच्चे पर बैठ गए—वैसे ही जैसा कि नहीं कहा था परंतु उस वर्ष के महापुणित होने के कारण उसने यह पवित्र शास्त्र का लेख है: 15 “जियोन की पुत्री, भयभीत हनी हो। देखो, भविष्यवाणी की थी, कि राष्ट्र के हित में मसीह येशु प्राणों का त्याग तुम्हारा राजा गधे पर बैठा हुआ आ रहा है。” 16 उनके शिष्य उस करेंगे, 52 और न केवल एक जनता के हित में परंतु परमेश्वर की समय तो यह नहीं समझे किंतु जब मसीह येशु की महिमा हुई तो तितर-बितर हुई संतान को इकट्ठा करने के लिए थी। 53 उस दिन उन्हें याद आया कि पवित्र शास्त्र में यह सब उन्हीं के विषय में लिखा से वे सब एकजूट होकर उनकी हत्या की योजना बनाने लगे। 54 गया था और भीड़ ने सब कुछ वचन के अनुसार ही किया था। 17 वे इसलिये मसीह येशु ने यहां दियों के मध्य सार्वजनिक रूप से धूमना सब, जिन्होंने मसीह येशु के द्वारा लाजरॉस को कब्र से बाहर बुलाए बंद कर दिया। वहां से वह बंदर भूमि के पास अपने शिष्यों के साथ जाते तथा मरे हुओं में से दोबारा जीवित किए जाते देखा था, उनकी एफायिम नामक नगर में जाकर रहने लगे। 55 यहां दियों का फसह गवाही दे रहे थे। 18 भीड़ का उन्हें देखने के लिए आने का एक पर्व पास था, आस-पास से अनेक लोग येस्शलेम गए कि फसह में कारण यह भी था कि वे मसीह येशु के इस अद्भुत चिह्न के विषय में सम्मिलित होने के लिए स्वयं को सांस्कारिक रूप से शुद्ध करें। 56 सुन चुके थे। 19 यह सब जानकर फरीसी आपस में कहने लगे, वे मसीह येशु की खोज में थे और मंदिर परिसर में खड़े हुए एक “तुमसे कुछ भी नहीं हो पा रहा है। देखो, सारा संसार उसके पीछे हो दूरे से पूछ रहे थे, “तुम्हारा क्या विचार है, वह पर्व में आएगा या लिया है!” 20 पर्व की आराधना में सम्मिलित होने आए लोगों नहीं? 57 प्रधान पुणितों और फरीसियों ने मसीह येशु को बंदी में कुछ यानी भी थे। 21 उन्होंने गतील प्रेदेश के बैथसैदावासी बनाने के उद्देश्य से आज्ञा दे रखी थी कि जिस किसी को उनकी फिलिप्पों से विनती की, “श्रीमान! हम मसीह येशु से भैंट करना जानकारी हो, वह उन्हें तुंत सूचित करे।

12 फसह के पर्व से छः दिन पूर्व मसीह येशु लाजरॉस के नगर

बैथनियाह आए, जहां उन्होंने उसे मरे हुओं में से जीवित किया था। 2 वहां उनके लिए भोज का आयोजन किया गया था। मार्था भोजन परोस रही थी और मसीह येशु के साथ भोज में सम्मिलित लोगों में लाजरॉस भी था। 3 वहां मरियम ने जटामासी के लगभग तीन सौ मिलीलीटर कीमीती और शुद्ध सुगंध द्रव्य मसीह येशु के चरणों पर मला और उन्हें अपने केशों से पोछा। सारा घर इससे सुगंधित हो गया। 4 इस पर उनका एक शिष्य—कारियोतवासी यहदाह, जो उनके साथ धोखा करने पर था, कहने लगा, 5 “यह सुगंध द्रव्य गरीबों के लिये तीन सौ दीनार में क्यों नहीं बेचा गया?” 6 यह उसने इसलिये नहीं कहा था कि वह गरीबों की चिंता करता था, परंतु इसलिये कि वह चोर था; धनराश रखने की जिम्मेदारी उसकी थी, जिसमें से वह धन चोरी करता था। 7 मसीह येशु ने कहा, “उसे यह करने दो, यह मेरे अंतिम संस्कार की तैयारी के लिए है। 8 गरीब तुम्हारे साथ हमेशा रहेंगे किंतु मैं तुम्हारे साथ हमेशा नहीं रहूँगा।” 9 यह मालाप्प होने पर कि मसीह येशु वहां है, बड़ी संख्या में यहदी अग्रुं इस उद्देश्य से आये कि केवल मसीह येशु को नहीं, परंतु लाजरॉस को भी देखें जिसे मसीह येशु ने मरे हुओं में से जीवित किया था। 10 परिणामस्वरूप, प्रधान पुणित लाजरॉस की भी हत्या की योजना करने लगे, 11 क्योंकि लाजरॉस के कारण अनेक यहदी उन्हें छोड़ मसीह येशु में विश्वास करने लगे थे। 12 अगले दिन पर्व में आए विशाल भीड़ ने सुना कि मसीह येशु येस्शलेम आ रहे हैं। 13 वे सब खजर के वृक्षों की डालियां लेकर मसीह येशु से मिलने निकल पड़े और ऊंचे शब्द में जय जयकार करने लगे। “होशान्ना!” “धन्य येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “ज्योति तुम्हारे मध्य कुछ ही समय तक है।

जब तक ज्योति है, चलते रहो, ऐसा न हो कि अंधकार तुम्हें आ घेरे मेज़ से उठकर अपने बाहरी कपड़े उतारे, कमर में अंगोछा बांध क्योंकि जो अंधकार में चलता है, वह नहीं जानता कि किस ओर लिया ५ और एक बर्तन में जल उंडेलकर शिष्यों के पांव धोने और जा रहा है। ३६ जब तक तुम्हारे पास ज्योति है, ज्योति में विश्वास कमर में बंधे अंगोछे से पोछने लगे। ६ जब वह शिमओन पेटरॉस के करो कि तुम ज्योति की संतान बन सको।” यह कहकर मसीह येशु पास आए तो पेटरॉस ने उनसे कहा, “प्रभु, आप मेरे पांव धोएंगे?” वहां से चले गए और उनसे छिपे रहे। ३७ यद्यपि मसीह येशु ने उनके ७ मसीह येशु ने उत्तर दिया, “जो मैं कर रहा हूं, तुम उसे इस समय सामने अनेक अद्युत चिन्ह दिखाए थे तो भी वे लोग उनमें विश्वास नहीं, कुछ समय बाद समझोगे।” ८ पेटरॉस ने कहा, “नहीं, प्रभु, नहीं कर रहे थे; ३८ जिससे भविष्यवत्ता यशायाह का यह वचन पूरा आप मेरे पांव कभी भी न धोएंगे।” “यदि मैं तुम्हारे पांव न धोऊंतो हो: “प्रभु, किसने हमारी बातों पर विश्वास किया और प्रभु का हाथ तुम्हारा मेरे साथ कोई संबंध नहीं रह जाएगा,” मसीह येशु ने कहा। किस पर प्रकट हुआ है?” ३९ वे विश्वास इसलिये नहीं कर पाये कि (aiōn g165) ९ इस पर शिमओन पेटरॉस ने मसीह येशु से कहा, भविष्यवत्ता यशायाह ने यह भी कहा है: ४० “परमेश्वर ने उनकी “प्रभु, तब तो मेरे पांव ही नहीं, हाथ और सिर भी धो दीजिए।” १० आंखें अंधी तथा उनका हृदय कठोर कर दिया, कहीं ऐसा न हो मसीह येशु ने कहा, “जो स्नान कर चुका है, वह पूरी तरह साफ हो कि वे अंखों से देखें, मन से समझें और पश्चात्ताप कर लें, और मैं चुका है, उसे जस्तर है मात्र पांव धोने की; तुम लोग साफ हो परंतु उन्हें स्वस्थ कर दूँ।” ४१ यशायाह ने यह वर्णन इसलिये किया कि सबके सब साफ नहीं। ११ मसीह येशु यह जानते थे कि कौन उनके उन्होंने प्रभु का प्रताप देखा और उसका बर्णन किया। ४२ अनेकों ने, साथ धोखा कर रहा है, इसलिये उन्होंने यह कहा: “परंतु सबके सब यहां तक कि अधिकारियों ने भी मसीह येशु में विश्वास किया कितु साफ नहीं।” १२ जब मसीह येशु शिष्यों के पांव धोकर, अपने फरीसियों के कारण सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया कि बाहरी कपड़े दोबारा पहनकर भोजन के लिए बैठ गए, तो उन्होंने कहीं उन्हें यहदी सभागृह से निकाल न दिया जाए। ४३ क्योंकि उन्हें शिष्यों से कहा, “तुम समझ रहे हो कि मैंने तुम्हारे साथ यह क्या परमेश्वर से प्राप्त आदर की तुलना में मनुष्यों से प्राप्त आदर अधिक किया है? १३ तुम लोग मुझे ‘गुरु’ और ‘प्रभु,’ कहते हों, सही ही प्रिय था। ४४ मसीह येशु ने उन्हें उच्चे शब्द में कहा, “जो कोई मुझमें है—क्योंकि मैं वह हूं। १४ इसलिये यदि मैंने, ‘प्रभु’ और ‘गुरु’ विश्वास करता है, वह मुझमें ही नहीं परंतु मेरे भेजनेवाले में विश्वास होकर भी तुम्हारे पांव धोए हैं, तो सही है कि तुम भी एक दूसरे के करता है। ४५ क्योंकि जो कोई मुझे देखता है, वह मेरे भेजनेवाले को पांव धोओ। १५ मैंने तुम्हारे सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया है—तुम देखता है। ४६ मैं संसार में ज्योति बनकर आया हूं कि वे सभी, जो भी वैसा ही करो, जैसा मैंने तुम्हारे साथ किया है। १६ मैं तुम पर यह मुझमें विश्वास करें, अंधकार मैं न रहें। ४७ “मैं उस व्यक्ति पर दोष अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं: दास अपने स्वामी से बढ़कर नहीं नहीं लगाता, जो मेरे सदैस सुनकर उनका पालन नहीं करता क्योंकि होता और न ही कोई भेजा हुआ दूत अपने भेजनेवाले से। १७ ये सब मैं संसार पर दोष लगाने नहीं परंतु संसार के उद्धार के लिए आया हूं। तो तुम जानते ही हो। सुखद होगा तुम्हारा जीवन यदि तुम इनका ४८ जो कोई मेरा तिरस्कार करता है और मेरे समाचार को ग्रहण नहीं पालन भी करो। १८ “मैं तुम सबके विषय में नहीं कह रहा हूं—मैं करता, उस पर आरोप लगानेवाला एक ही है: मेरा समाचार; वही जानता हूं कि मैंने किन्हें चुना है। मैं यह इसलिये कह रहा हूं कि उसे अंतिम दिन दोषी धोषित करेगा। ४९ मैंने अपनी ओर से कुछ पवित्र शास्त्र का यह लेख पूरा हो: जो मेरी रोटी खाता है, उसी ने मुझ नहीं कहा, परंतु मैं पिता ने, जो मेरे भेजनेवाले हैं, आज्ञा दी है कि मैं पर लात उठाऊँ। ५० मैं जानता हूं कि उनकी आज्ञा का रहा हूं कि जब ये सब धर्टिट हो तो तुम विश्वास करो कि वह मैं ही हूं। २१ मैं तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं: जो मेरे किसी कहता हूं, जैसा पिता ने मुझे कहने की आज्ञा दी है।” (aiōnios g166)

13 फस्ह उत्सव के पूर्व ही मसीह येशु यह जानते थे कि उनका संसार को छोड़कर पिता परमेश्वर के पास लौट जाने का समय पास आ गया है। मसीह येशु उनसे हमेशा प्रेम करते रहे, जो संसार में उनके अपने थे किंतु अब उन्होंने उनसे अंत तक वैसा ही प्रेम रखा। २ शिमओन के पुत्र कारियोतवासी यहदाह के मन में शैतान यह विचार डाल चका था कि वह मसीह येशु के साथ धोखा करे। ३ भोज के समय मसीह येशु ने भली-भांति यह जानते हुए कि पिता ने सब कुछ उनके हाथ में कर दिया है और यह भी, कि वह परमेश्वर की ओर से आए हैं और परमेश्वर के पास लौट रहे हैं, ४ भोजन की

ग्रहण करता है, मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।” २१ यह कहते-कहते मसीह येशु आत्मा में व्याकुल हो उठे। उन्होंने कहा, “मैं तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं: तुम्हें से एक मेरे साथ धोखा करेगा।” २२ शिष्य सदेह में एक दूसरे को देखने लगे कि गुरु यह किसके विषय में कह रहे हैं। २३ एक शिष्य, जो मसीह येशु का विशेष प्रियजन था, उनके अन्यत पास बैठा था; २४ शिमओन पेटरॉस ने उससे सकेत से पूछा, “प्रभु ऐसा किसके विषय में कह रहे हैं?” २५ उस शिष्य ने मसीह येशु से पूछा, “कौन है वह, प्रभु?” २६ मसीह येशु ने उत्तर दिया, “जिसे मैं यह रोटी इबोकर दंगा, वह。” तब उन्होंने रोटी शिमओन के पुत्र कारियोतवासी यहदाह को दे दी।

27 टुकड़ा लेते ही उसमें शैतान समा गया। मरीह येशु ने उससे कहा। क्या तुम यह नहीं मानते कि मैं पिता में हूं और पिता मुझमें? जो “तुहँने जो कुछ करना है, शीघ्र करो।” 28 भोजन पर बैठे किसी भी वचन मैं तुमसे कहता हूं, वह मैं अपनी ओर से नहीं कहता; मेरे शिष्य को यह मालम न हो पाया कि उन्होंने यह उससे किस मतलब अंदर बसे पिता ही हैं, जो मुझमें होकर अपना काम पूरा कर रहे हैं। से कहा था। 29 कुछ ने यह समझा कि मरीह येशु उससे कह रहे हैं 11 मेरा विश्वास करो कि मैं पिता में हूं और पिता मुझमें, नहीं तो कि जो कुछ हमें पर्व के लिए चाहिए, शीघ्र मोल लो या गरिबों को कामों की गवाही के कारण विश्वास करो। 12 मैं तुम पर यह अटल कुछ दे दो क्योंकि यहदाह के पास धन की थैली रहती थी। 30 सच्चाई प्रकट कर रहा हूं: वह, जो मुझमें विश्वास करता है, वे सारे इसलिये यहदाह तत्काल बाहर चला गया। वह रात का समय था। काम करेगा, जो मैं करता हूं बल्कि इनसे भी अधिक बड़े-बड़े काम 31 जब यहदाह बाहर चला गया तो मरीह येशु ने कहा, “अब मनुष्य करेगा क्योंकि अब मैं पिता के पास जा रहा हूं। 13 मेरे नाम में का पुत्र गौरवान्वित हुआ है और उसमें परमेश्वर गौरवान्वित हुए हैं। तुम जो कुछ मांगोगे, मैं उसे पूरा कस्तंगा जिससे पुत्र में पिता की 32 यदि उसमें परमेश्वर महिमित हुए हैं तो परमेश्वर भी उसे स्वयं महिमा हो। 14 मेरे नाम में तुम मुझसे कोई भी विनती करो, मैं उसे महिमित करेंगे और शीघ्र ही महिमित करेंगे। 33 “मैं बस अब थोड़ी पूरा करूंगा। 15 “यदि तुम्हें मुझसे प्रेम है तो तुम मेरे आदेशों का ही देर तुम्हारे साथ हूं, तुम मुझे ढूँढ़ोगे और जैसा मैंने यहदी अगुआओं पालन करोगे। 16 मैं पिता से विनती कस्तंगा और वह तुहँने एक और से कहा है, वैसा मैं तुमसे भी कहता हूं, ‘जहां मैं जा रहा हूं वहां तुम सहायक देखो कि वह हमेशा तुम्हारे साथ रहें। (aiōn g165) 17 सच नहीं आ सकते।’ 34 ‘मैं तुम्हें एक नई आज्ञा दे रहा हूं: एक दूसरे से का आसामा, जिन्हें संसार ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि संसार न तो प्रेम करो—जैसे मैंने तुमसे प्रेम किया है, वैसे ही तुम भी एक दूसरे से उहें देखता है और न ही उन्हें जानता है। तुम उन्हें जानते हो क्योंकि प्रेम करो। 35 यदि तुम एक दूसरे से प्रेम करोगे तो यह सब जान लेंगे वह तुम्हारे साथ रहते हैं, और वह तुमसे रहेंगे। 18 मैं तुहँने अनाथ कि तुम मेरे चेले हो।” 36 शिमओन पेटरॉस ने पूछा, “प्रभु, आप नहीं छोड़ूंगा, मैं तुम्हारे पास लौटकर आऊंगा। 19 कुछ ही समय कहां जा रहे हैं?” मरीह येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “जहां मैं जा रहा शेष है, जब संसार मुझे नहीं देखेगा परंतु तुम मुझे देखेंगे। मैं जीवित हूं, वहां मेरे पीछे चलते हुए तुम अभी नहीं आ सकते—तुम वहां हूं इसलिये तुम भी जीवित रहेंगे। 20 उस दिन तुहँने यह मालूम हो कुछ समय बाद आओगे।” 37 पेटरॉस ने उनसे दोबारा पूछा, “प्रभु, जाणा कि मैं अपने पिता में हूं, तुम मुझमें हो और मैं तुममें। 21 वह, मैं आपके पीछे अभी क्यों नहीं चल सकता? मैं तो आपके लिए जो मेरे आदेशों को स्वीकार करता और उनका पालन करता है, वही अपने प्राण भी दे दूंगा।” 38 मरीह येशु ने उनसे कहा, “तुम मेरे लिए हैं, जो मुझसे प्रेम करता है। वह, जो मुझसे प्रेम करता है, मेरे पिता अपने प्राण देने का दावा करते हो? मैं तुमसे कहता हूं, सुर्ख उस समय का प्रियजन होगा। मैं उससे प्रेम करूंगा और स्वयं को उस पर प्रकट तक बांग नहीं देगा जब तक तुम तीन बार मुझे नकार न दोगे।

14 “अपने मन को व्याकुल न होने दो, तुम परमेश्वर में विश्वास

करते हो, मुझमें भी विश्वास करो। 2 मेरे पिता के यहा अनेक निवास स्थान हैं—यदि न होते तो मैं तुहँने बता देता। मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जा रहा हूं। 3 वहां जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करने के बाद मैं तुहँने अपने साथ ले जाने के लिए फिर आऊंगा कि जहां मैं हूं, तुम भी मेरे साथ वही रहो। 4 वह मार्ग तुम जानते हो, जो मेरे ठिकाने तक पहुंचाता है।” 5 थोर्मॉस ने उनसे प्रश्न किया, “प्रभु, हम आपका ठिकाना ही नहीं जानते तो उसका मार्ग कैसे जान सकते हैं?” 6 मरीह येशु ने उत्तर दिया, “मैं ही हूं वह मार्ग, वह सच और वह जीवन, बिना मेरे द्वारा कोई भी पिता के पास नहीं आ सकता। 7 यदि तुम वास्तव में मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जानते। अब से तुमने उन्हें जान लिया है और उन्हें देख भी लिया है।” 8 फिलिप्पॉस ने मरीह येशु से विनती की, “प्रभु, आप हमें पिता के दर्शन मात्र करा दें, यही हमारे लिए काफ़ी होगा।” 9 “फिलिप्पॉस!” मरीह येशु ने कहा, “इन्हें लंबे समय से मैं तुम्हारे साथ हूं, क्या फिर भी तुम मुझे नहीं जानते? जिसने मुझे देखा है, उसने पिता को भी देख लिया। फिर तुम यह कैसे कह रहे हो, ‘हमें पिता के दर्शन करा दीजिए?’ 10

किंतु संसार पर नहीं?” 23 मरीह येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “यदि कोई व्यक्ति मुझसे प्रेम करता है तो वह मेरी शिक्षा का पालन करेगा; वह मेरे पिता का प्रियजन बनेगा और हम उसके पास आकर उसके साथ निवास करेंगे। 24 वह, जो मुझसे प्रेम नहीं करता, मेरे वचन का पालन नहीं करता। ये वचन, जो तुम सुन रहे हो, मेरे नहीं, मेरे पिता के हैं, जो मेरे भेजनेवाले हैं। 25 “तुम्हारे साथ रहते हुए मैंने ये सच तुम पर प्रकट कर दिए हैं 26 परंतु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा, जिन्हें पिता मेरे नाम में भेजेंगे, तुहँने इन सब विषयों की शिक्षा देंगे और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, उसकी याद दिलाएंगे। 27 तुम्हारे लिए हैं शारीर छोड़े जाता हूं, मैं तुहँने अपनी शारीर दे रहा हूं; वैसी नहीं, जैसी संसार देता है। अपने मन को व्याकुल और भयभीत न होने दो। 28 “मेरी बातें याद रखो: मैं जा रहा हूं और तुम्हारे पास लौट आऊंगा। यदि तुम मुझसे प्रेम करते तो यह जानकर आनंदित होते कि मैं पिता के पास जा रहा हूं, जो मुझसे अधिक महान हैं। 29 यह घटित होने से पहले ही मैंने तुहँने इससे अवगत करा दिया है कि जब यह घटित हो तो तुम विश्वास करो। 30 अब मैं तुमसे अधिक कुछ नहीं कहूंगा क्योंकि संसार का राजा आ रहा है।

मुझ पर उसका कोई अधिकार नहीं है। 31 संसार यह समझ ले कि और यदि मैं उनसे ये सब न कहता तो वे दोषी न होते। परंतु अब मैं अपने पिता से प्रेम करता हूँ, यही कारण है कि मैं उनके सारे उनके पास अनेपाप को छिपाने के लिए कोई भी बहाना नहीं आदेशों का पालन करता हूँ। “उठो, यहां से चलें।

15 “मैं ही हूँ सच्ची दाखलता और मेरे पिता किसान हैं। 2 मुझमें

लगी हुई हर एक डाली, जो फल नहीं देती, उसे वह काट देते हैं तथा हर एक फल देनेवाली डाली को छांटते हैं कि वह और भी अधिक फल लाए। 3 उस वचन के द्वारा, जो मैंने तुमसे कहा है, तुम शुद्ध हो चुके हो। 4 मुझमें स्थिर बने रहो तो मैं तुममें स्थिर बना रहूँगा। शाखा यदि लता से जुड़ी न रहे तो फल नहीं दे सकती, वैसे ही तुम भी मुझमें स्थिर रहे बिना फल नहीं दे सकते। 5 “दाखलता मैं ही हूँ, तुम डालियां हो। वह, जो मुझमें स्थिर बना रहता है और मैं उसमें, बहुत फल देता है; मुझसे अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। 6 यदि कोई मुझमें स्थिर बना नहीं रहता, वह फेंकी हुई डाली के समान सूख जाता है। उन्हें इकट्ठा कर आग में झोक दिया जाता है और वे भस्म हो जाती हैं। 7 यदि तुम मुझमें स्थिर बने रहो और मेरे वचन तुममें स्थिर बने रहें तो तुम्हरे मांगने पर तुम्हारी इच्छा पूरी की जाएगी। 8 तुम्हारे फलों की बहुतायत में मेरे पिता की महिमा और तुम्हारा मेरे शिष्य होने का सबूत है। 9 “जिस प्रकार पिता ने मुझसे प्रेम किया है उसी प्रकार मैंने भी तुमसे प्रेम किया है; मेरे प्रेम में स्थिर बने रहो। 10 तुम मेरे प्रेम में स्थिर बने रहोगे, यदि तुम मेरे आदेशों का पालन करते हो, जैसे मैं पिता के आदेशों का पालन करता आया हूँ और उनके प्रेम में स्थिर हूँ। 11 यह सब मैंने तुमसे इसलिये कहा है कि तुममें मेरा आनंद बना रहे और तुम्हारा अननंद पूरा हो जाए। 12 यह मेरी आज्ञा है कि तुम एक दूसरे से उसी प्रकार प्रेम करो, जिस प्रकार मैंने तुमसे प्रेम किया है। 13 इससे श्रेष्ठ

बचा है। 23 वह, जो मुझसे घृणा करता है, मेरे पिता से भी घृणा करता है। 24 यदि मैं उनके मध्य वे काम न करता, जो किसी अन्य व्यक्ति ने नहीं किए तो वे दोषी न होते, परंतु अब उन्होंने मेरे कामों को देख लिया और उन्होंने मुझसे व मेरे पिता दोनों से घृणा की है। 25 कि व्यवस्था का यह लेख पूरा हो: उन्होंने अकारण ही मुझसे घृणा की। 26 “जब सहायक—सच्चाई का आत्मा, जो पिता से है—आएंगे, जिन्हें मैं तुम्हारे लिए पिता के पास से भेजूँगा, वह मेरे विषय में गवाही देंगे। 27 तुम भी मेरे विषय में गवाही देगे क्योंकि तुम शुद्धात से मेरे साथ रहे हो।

16 “मैंने तुम पर ये सच्चाई इसलिये प्रकट की कि तुम भरमाए

जाने से बचे रहें। 2 वे सभागृह से तुमको निकाल देंगे, इतना ही नहीं, वह समय भी आ रहा है जब तुम्हारा हत्यारा अपने कुर्कम को परमेश्वर की सेवा समझेगा। 3 ये कुर्कम वे इसलिये किए गए उन्होंने न तो पिता को जाना है और न मुझे। 4 ये सच्चाई मैंने तुम पर इसलिये प्रकट की है कि जब यह सब होने लगे तो तुम्हें याद आए कि इनके विषय में मैंने तुम्हें पहले से ही सावधान कर दिया था। मैंने ये सब तुम्हें शुद्धात में इसलिये नहीं बताया कि उस समय मैं भी तुम्हारे साथ था। 5 अब मैं अपने भेजनेवाले के पास जा रहा हूँ, और तुममें से कोई नहीं पूछ रहा कि, ‘आप कहां जा रहे हैं?’ 6 मैंने ये सब सुनकर तुम्हारा हृदय शोक से भर गया है। 7 फिर भी सच यह है कि मेरा जाना तुम्हारे लिए लाभदायक है क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह स्वर्गीय सहायक तुम्हारे पास नहीं आएंगे। यदि मैं जाऊँ तो मैं उन्हें तुम्हारे पास भेजूँगा। 8 वह आकर संसार के सामने पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में दोषों को प्रकाश में लाएंगे; 9 पाप के विषय में; क्योंकि वे मुझमें विश्वास नहीं करते; 10 धार्मिकता के विषय में; क्योंकि मैं पिता के पास जा रहा हूँ और इसके बाद तुम मुझे न देखोगे; 11 न्याय के विषय में; क्योंकि संसार के विषय का हाकिम दोषी ठराया जा चुका है। 12 “मुझे तुमसे बहुत कुछ कहना है, परंतु अभी तुम उसे ग्रहण करने के सक्षम नहीं हो। 13 जब सहायक—सच्चाई का आत्मा—आएंगे, वह सारी सच्चाई में तुम्हारा मार्गदर्शन करेंगे। वह अपनी ओर से कुछ नहीं कहेंगे, परंतु वही कहेंगे, जो वह सुनते हैं। वह तुम्हारे लिए आनेवाली घटनाओं को उजागर करेंगे। 14 वही मुझे गौरवान्वित करेंगे क्योंकि वह मुझसे प्राप्त बातों को तुम्हारे सामने प्रकट करेंगे। 15 वह सब कुछ, जो पिता का है, मेरा है; इसलिये मैंने यह कहा कि वह मुझसे मिली क्या कहा था: दास अपने स्वामी से बढ़कर नहीं होता। यदि उन्होंने हुई बातों को तुम पर प्रकट करेंगे।” 16 “कुछ ही समय में तुम मुझे सताया तो तुम्हें भी सताएंगे। यदि उन्होंने मेरी शिक्षा ग्रहण की तो नहीं देखेंगे और कुछ समय बाद तुम मुझे दोबारा देखेंगे।” 17 इस पर उनके कुछ शिष्य आपस में विचार-विमर्श करने लगे, “उनका करेंगे क्योंकि वे मेरे भेजनेवाले को नहीं जानते। 22 यदि मैं न आता इससे क्या मतलब है कि वह हमसे कह रहे हैं, ‘कुछ ही समय में तुम

मुझे नहीं देखोगे और कुछ समय बाद तुम मुझे दोबारा देखोगे” और वह उन सबको अनंत जीवन प्रदान करे जिन्हें आपने उसे सौंपा है। यह भी, “मैं पिता के पास जा रहा हूँ?” 18 वे एक दूरसे से पूछते (aiōnios g166) 3 अनंत जीवन यह है कि वे आपको, जो एकमात्र रहे, “समझ नहीं आता कि वह क्या कह रहे हैं। क्या है यह कुछ सच्चे परमेश्वर हैं और मसीह येशु को, जिसे आपने भेजा है, जाने। समय बाद जिसके विषय में वह बार-बार कह रहे हैं?” 19 यह (aiōnios g166) 4 जो काम आपने मुझे सौंपा था, उसे पूरा कर मैंने जानते हुए कि वे उनसे कुछ पूछना चाहते हैं, मसीह येशु ने उनसे प्रश्न पृथ्वी पर आपको गैरवान्वित किया है। 5 इसलिये पिता, आप मुझे किया, “क्या तुम इस विषय पर विचार कर रहे हो कि मैंने तुमसे अपने साथ उसी महिमा से गैरवान्वित कीजिए, जो महिमा मेरी कहा कि कुछ ही समय में तुम मुझे नहीं देखोगे और कुछ समय बाद आपके साथ संसार की सृष्टि से पहले थी। 6 “मैंने आपको उन सब मुझे दोबारा देखोगे? 20 मैं तुम पर यह अटल सच्चाई प्रकट कर रहा पर प्रगत किया, संसार में से जिनको चुनकर आपने मुझे सौंपा था। वे हैं: तुम रोओगे और विलाप करोगे जबकि संसार आनंद मना रहा आपके थे किंतु आपने उन्हें मुझे सौंपा था और उन्होंने आपके वचन होगा। तुम शोकाकुल होगे किंतु तुम्हारा शोक आनंद में बदल जाएगा। का पालन किया। 7 अब वे जान गए हैं कि जो कुछ आपने मुझे 21 प्रसव के पहले स्त्री शोकित होती है क्योंकि उसका प्रसव पास आ दिया है, वह सब आप ही की ओर से है 8 क्योंकि आपसे प्राप्त गया है किंतु शिशु के जन्म के बाद संसार में उसके आने के आनंद में आज्ञाएं मैंने उन्हें दे दी है। उन्होंने उनको ग्रहण किया और वास्तव में वह अपनी पीड़ा भूल जाती है। 22 इसी प्रकार अभी तुम भी शोकित यह जान लिया है कि मैं आपसे आया हूँ; उन्होंने विश्वास किया कि हो किंतु मैं तुमसे दोबारा मिलूंगा, जिससे तुम्हारा हृदय आनंदित होगा। आप ही मेरे भेजनेवाले हैं। 9 आपसे मेरी विनती संसार के लिए नहीं कोई तुमसे दोबारा मिलूंगा, जिससे तुम्हारा हृदय आनंदित होगा। 10 वह सब, जो मेरा है, आपका है, जो आपका है, वह मेरा है और यदि तुम पिता से कुछ भी मांगोगे, वह तुम्हें मेरे नाम में दे देंगे। 24 मैं उनमें गैरवान्वित हुआ हूँ 11 अब मैं संसार में नहीं रहूंगा, मैं अब तक तुमने मेरे नाम में पिता से कुछ भी नहीं मांगा; मांगो और आपके पास आ रहा हूँ, किंतु वे सब संसार में हैं। विवर पिता! उन्हें तुम्हें अवश्य प्राप्त होगा कि तुम्हारा आनंद परा हो जाए। 25 “इस अपने उस नाम में, जो आपने मुझे दिया है, सुखित रखिए कि वे समय मैंने ये सब बातें तुम्हें कहावतों में बताई हैं किंतु समय आ रहा एक हों जैसे हम एक हैं। 12 जब मैं उनके साथ था, मैंने उन्हें आपके है, जब मैं पिता के विषय में कहावतों में नहीं परंतु साफ शब्दों में उस नाम में, जो आपने मुझे दिया था, सुखित रखा। मैंने उनकी रक्षा बताऊंगा। 26 उस दिन तुम स्वयं मेरे नाम में पिता से मांगोगे। मैं यह कहीं; उनमें से किसी का नाश नहीं हुआ, सिवाय विनाश के पुत्र के; नहीं कह रहा कि मुझे ही तम्हारी ओर से पिता से विनती करनी वह भी इसलिये कि पवित्र शाश्वत का वचन पूरा हो। 13 “अब मैं पड़ेगी। 27 पिता स्वयं तुमसे प्रेम करते हैं क्योंकि तुमने मुझसे प्रेम आपके पास आ रहा हूँ। ये सब मैं संसार में रहते हुए ही कह रहा किया और यह विश्वास किया है कि मैं परमेश्वर से आया हुआ हूँ। हूँ कि वे मेरे आनंद से परिपूर्ण हो जाएं। 14 मैंने उनको आपका 28 हां, मैं—पिता का भेजा हुआ—संसार में आया हूँ और अब संसार वचन दिया है। संसार ने उनसे धृणा की है क्योंकि वे संसार के नहीं को छोड़ रहा हूँ कि पिता के पास लौट जाऊं।” 29 तब शिष्य कह है, जिस प्रकार मैं भी संसार का नहीं हूँ। 15 मैं आपसे यह विनती उठे, “हां, अब आप कहावतों में नहीं, साफ शब्दों में समझा रहे हैं। नहीं करता कि आप उन्हें संसार में से उठा लें परंतु यह कि आप 30 अब हम समझ गए हैं कि आप सब कुछ जानते हैं और अब उन्हें उस दृष्टि से बचाए रखें। 16 वे संसार के नहीं हैं, जिस प्रकार किसी को आपसे कोई प्रश्न करने की ज़रूरत नहीं। इसलिये हम मैं भी संसार का नहीं हूँ। 17 उन्हें सच्चाई में अपने लिए अलंग विश्वास करते हैं कि आप परमेश्वर की ओर से आए हैं।” 31 मसीह कीजिए—आपका वचन सत्य है। 18 जैसे आपने मुझे संसार में भेजा येशु ने उनसे कहा, “तुम्हें अब विश्वास हो रहा है!” 32 देखो, समय था, मैंने भी उन्हें संसार में भेजा। 19 उनके लिए मैं स्वयं को समर्पित आ रहा है परंतु आ चुका है, जब तुम तितर-वितर हो अपने आप में करता हूँ कि वे भी सच्चाई में समर्पित हो जाएं। 20 “मैं मात्र इनके व्यस्त हो जाओगे और मुझे अकेला छोड़ देगे; किंतु मैं अकेला नहीं लिए ही नहीं परंतु उन सबके लिए भी विनती करता हूँ, जो इनके हूँ, मेरा पिता मेरे साथ है। 33 “मैंने तुमसे ये सब इसलिये कहा है कि सदेश के द्वारा मुझमें विश्वास करोगे। 21 पिता! वे सब एक हों, जैसे तुम्हें मुझमें सांति प्राप्त हो। संसार में तुम्हारे लिए कर्त्तेश ही कर्त्तेश है आप मुझमें और मैं आप मैं, वैसे ही वे हममें एक हों जिससे संसार किंतु आनंदित हो कि मैंने संसार पर विजय प्राप्त की है।”

विश्वास करे कि आप ही मेरे भेजनेवाले हैं। 22 वह महिमा, जो आपने मुझे प्रदान की है, मैंने उन्हें दे दी है कि वे भी एक हों, जिस प्रकार हम एक हैं, 23 आप मुझमें और मैं उनमें कि वे पूरी तरह से एक हो जाएं जिससे संसार पर यह साफ हो जाए कि आपने ही मुझे भेजा और आपने उनसे वैसा ही प्रेम किया है जैसा मुझसे। 24 “पिता, मेरी इच्छा यह है कि वे भी, जिन्हें आपने मुझे सौंपा है, मेरे

17 इन बातों के प्रकट करने के बाद मसीह येशु ने स्वर्ग की

ओर दृष्टि उठाकर प्रार्थना की। “पिता, वह समय आ गया है। अपने पुत्र को गैरवान्वित कीजिए कि पुत्र आपको गैरवान्वित करे। 2 क्योंकि आपने उसे सारी मानव जाति पर अधिकार दिया है कि

साथ वहीं रहें, जहां मैं हूं कि वे मेरी उस महिमा को देख सकें, जो और सैनिकों ने आग जला रखी थी और खड़े हुए आग ताप रहे थे। आपने मुझे दी है क्योंकि संसार की सृष्टि के पहले से ही आपने पेटरॉस भी उनके साथ खड़े हुए आग ताप रहे थे। 19 महापुरोहित ने मुझसे प्रेम किया है। 25 “हे नीतिमान पिता, संसार ने तो आपको मसीह येशु से उनके शिष्यों और उनके द्वारा दी जा रही शिक्षा के नहीं जाना किंतु मैं आपको जानता हूं, और उनको यह मालूम हो विषय में पूछताछ की। 20 मसीह येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “मैंने गया है कि आपने ही मुझे भेजा है। 26 मैंने आपको उन पर प्रकट संसार से खुलकर बातें की हैं। मैंने हमेशा सभागृहों और मंदिर में किया है, और प्रकट करता रहंगा कि जिस प्रेम से आपने मुझसे प्रेम शिक्षा दी है, जहां सभी यहदी इकट्ठा होते हैं। गुप्त में मैंने कभी भी किया है, वही प्रेम उनमें बस जाए और मैं उनमें।”

कुछ नहीं कहा। 21 आप मुझसे प्रश्न कर्यों कर रहे हैं? प्रश्न उनसे कीजिए जिन्होंने मेरे प्रवचन सुने हैं। वे जानते हैं कि मैंने क्या-क्या कहा है।” 22 यह सुनते ही वहां खड़े एक अधिकारी ने मसीह येशु पर वार करते हुए कहा, “क्या महापुरोहित को उत्तर देने का यही ढंग है तुम्हारा?” 23 मसीह येशु ने कहा, “यदि मेरा कहना गलत है तो सबित करो मगर यदि मैंने जो कहा है वह सही है तो फिर तुम मुझे कर्यों मार रहे हो?” 24 इसलिये मसीह येशु को, जो अभी भी बढ़े हुए ही थे, हन्ना ने महापुरोहित कायाफ़स के पास भेज दिया। 25 इसी बीच लोगों ने शिमओन पेटरॉस से, जो वहां खड़े हुए आग ताप रहे थे, पूछा, “कहीं तुम भी तो इसके शिष्यों में से नहीं हो?” पेटरॉस ने नकारते हुए कहा, “मैं नहीं हूं।” 26 तब महापुरोहित के सेवकों में से एक ने, जो उस व्यक्ति का संबंधी था, जिसका कान पेटरॉस ने काट डाला था, उनसे पूछा, “क्या तुम वही नहीं, जिसे मैंने उसके साथ उपवन में देखा था?” 27 पेटरॉस ने फिर अस्वीकार किया और तत्काल मुर्गी ने बांग दी। 28 पौ फटते ही यहदी अगुण मसीह येशु को कायाफ़स के पास से राजमहल ले गए; किंतु उन्होंने स्वयं भवन में प्रवेश नहीं किया कि कहीं वे फसह भोज के पूर्व सांस्कारिक स्प से अशुद्ध न हो जाएं। 29 इसलिये पिलातॉस ने बाहर आकर उनसे प्रश्न किया, “क्या आरोप है तुम्हारा इस व्यक्ति पर?” 30 उन्होंने उत्तर दिया, “यदि यह व्यक्ति अपराधी न होता तो हम इसे आपके पास कर्यों लाते?” 31 पिलातॉस ने उनसे कहा, “तो इसे ले जाओ और अपने ही नियम के अनुसार स्वयं इसका न्याय करो।” इस पर यहदियों ने कहा, “किसी के प्राण लेना हमारे अधिकार में नहीं है।” 32 ऐसा इसलिये हुआ कि मसीह येशु के वचन पूरे हों, जिनके द्वारा उन्होंने संकेत दिया था कि उनकी मृत्यु किस प्रकार की होगी। 33 इसलिये भवन में लौटकर पिलातॉस ने मसीह येशु को बुलवाया और प्रश्न किया, “क्या तुम यहदियों के राजा हो?” 34 इस पर मसीह येशु ने उससे प्रश्न किया, “यह आपका अपना विचार है या अन्य लोगों ने मेरे विषय में आपको ऐसा बताया है?” 35 पिलातॉस ने उत्तर दिया, “क्या मैं यहदी हूं? तुम्हारे अपने ही लोगों और प्रधान पुरोहितों ने तुम्हें मेरे हाथ सौंपा है। बताओ, ऐसा क्या किया है तुमने?” 36 मसीह येशु ने उत्तर दिया, “मेरा राज्य इस संसार का नहीं है। यदि इस संसार का होता तो मेरे सेवक मुझे यहदी अगुओं के हाथ सौंपे जाने के विस्तृ लड़ते; किंतु सच्चाई तो यह है कि मेरा राज्य यहां का है ही नहीं।” 37 इस पर पिलातॉस ने उनसे कहा, “तो तुम राजा हो?” मसीह येशु

18 इन बातों के कहने के बाद मसीह येशु अपने शिष्यों के साथ

किंद्रोन घाटी पार कर एक बगीचे में गए। 2 यहदाह, जो उनके साथ धोखा कर रहा था, उस स्थान को जानता था क्योंकि मसीह येशु वहां अक्सर अपने शिष्यों से भेंट किया करते थे। 3 तब यहदाह रोमी सैनिकों का दल, प्रधान पुरोहितों तथा फरीसियों के सेवकों के साथ वहां आ पहुंचा। उनके पास लालटेने, मशालें और शस्त्र थे। 4 मसीह येशु ने यह जानते हुए कि उनके साथ क्या-क्या होने पर है, आगे बढ़कर उनसे पूछा, “तुम किसे खोज रहे हो?” 5 “नाज़रेथवासी येशु को,” उन्होंने उत्तर दिया। मसीह येशु ने कहा, “वह मैं ही हूं。” विश्वासघाती यहदाह भी उनके साथ था। 6 जैसे ही मसीह येशु ने कहा “वह मैं ही हूं,” वे पीछे हटे और गिर पड़े। 7 मसीह येशु ने दोबारा पूछा, “तुम किसे खोज रहे हो?” वे बोले, “नाज़रेथवासी येशु को。” 8 मसीह येशु ने कहा, “मैं तुमसे कह चुका हूं कि वह मैं ही हूं। इसलिये यदि तुम मुझे ही खोज रहे हो तो इन्हें जाने दो।” 9 यह इसलिये कि स्वयं उनके द्वारा कहा गया- यह वचन पूरा हो “आपके द्वारा सौंपे हुओं में से मैंने किसी एक को भी न खोया।” 10 शिमओन पेटरॉस ने, जिसके पास तलबार थी, उस म्यान से खींचकर महापुरोहित के एक सेवक पर वार कर दिया जिससे उसका दाहिना कान कट गया। (उस सेवक का नाम मालखोर्स था।) 11 यह देख मसीह येशु ने पेटरॉस को आज्ञा दी, “तलबार म्यान में रखो! क्या मैं वह प्याला न पिंड जो पिता ने मुझे दिया है?” 12 तब सैनिकों के दल, सेनापति और यहदियों के अधिकारियों ने मसीह येशु को बंदी बना लिया। 13 पहले वे उन्हें हन्ना के पास ले गए, जो उस वर्ष के महापुरोहित कायाफ़स का ससुर था। 14 कायाफ़स ने ही यहदी अगुओं को विचार दिया था कि राष्ट्र के हित में एक व्यक्ति का प्राण त्याग करना सही है। 15 शिमओन पेटरॉस और एक अन्य शिष्य मसीह येशु के पीछे-पीछे गए, यह शिष्य महापुरोहित की जान पहचान का था। इसलिये वह भी मसीह येशु के साथ महापुरोहित के घर के परिसर में चला गया। 16 परंतु पेटरॉस द्वारा पर बाहर ही खड़े रहे। तब वह शिष्य, जो महापुरोहित की जान पहचान का था, बाहर आया और द्वार पर नियुक्त दासी से कहकर पेटरॉस को भीतर ले गया। 17 द्वार पर निधमीं उस दासी ने पेटरॉस से पूछा, “कहीं तुम भी तो इस व्यक्ति के शिष्यों में से नहीं हो?” “नहीं, नहीं,” उन्होंने उत्तर दिया। 18 ठंड के कारण सेवकों

ने उत्तर दिया, “आप ठीक कहते हैं कि मैं राजा हूं. मेरा जन्म ही लो, तुम्हारा राजा.” 15 इस पर वे चिल्लाने लगे, “इसे यहां से ले इसलिये हुआ है. संसार में मेरे आने का उद्देश्य यही है कि मैं सच की जाओ! ले जाओ इसे यहां से और मृत्यु दंड दो!” पिलातौस ने उनसे गवाही दूँ. हर एक व्यक्ति, जो सच्चा है, मेरी सुनता है.” 38 “क्या पछा, ”क्या मैं तुम्हारे राजा को मृत्यु दंड दूँ? ” प्रधान पुरोहितों ने है सच?” पिलातौस ने प्रश्न किया. तब पिलातौस ने दोबारा बाहर कहा, “क्यासर के अतिरिक्त हमारा कोई राजा नहीं है.” 16 तब जाकर यहां दियों को सूचित किया, “मुझे उम्में कोई दोष नहीं मिला पिलातौस ने क्रूस-मृत्युदंड के लिए मरीह येशु को उनके हाथ सौंप 39 किंतु तुम्हारी एक पंरंपरा है कि फसह के अवसर पर मैं तुम्हारे दिया. तब सैनिक मरीह येशु को उस स्थान से ले गए. 17 मरीह लिए किसी एक कैटी को रिहा करूँ. इसलिये क्या तुम चाहते हो कि येशु अपना क्रूस स्वयं उठाए हुए, उस जगह गये जो इन्हीं भाषा में मैं तुम्हारे लिए यहां दियों का राजा रिहा कर दूँ?” 40 इस पर वे गोलगोथा कहलाता है, जिसका अर्थ है खोपड़ी का स्थान. 18 वहां चिल्लाकर बोले, “इसे नहीं! बार-अब्बास को!” जबकि बार-उन्होंने मरीह येशु को अन्य दो व्यक्तियों के साथ उनके मध्य क्रूस पर चढ़ाया. 19 पिलातौस ने एक पटल पर लिखकर क्रूस पर लगवा दिया. नाजरेथ का येशु, यहां दियों का राजा. 20 यह अनेक यहां दियों ने पढ़ा क्योंकि मरीह येशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने का स्थान नगर के समीप ही था. यह इन्हीं, लातीनी और यूनानी भाषाओं में लिखा था. 21 इस पर यहां दियों के प्रधान पुरोहितों ने पिलातौस से कहा, “यहां दियों का राजा मत लिखिए परंतु वह लिखिए, जो उसने कहा था: ‘मैं यहां दियों का राजा हूं.’” 22 पिलातौस ने उत्तर दिया, “अब मैंने जो लिख दिया, वह लिख दिया.” 23 सैनिकों ने मरीह येशु को क्रूसित करने के बाद उनके बाहरी कपड़े लेकर चार भाग किए और आपस में बांट लिए. उनके अंदर का बब्ल जोड़ रहित ऊपर से नीचे तक बूना हुआ था. 24 इसलिये सैनिकों ने विचार किया, “इसे फाँड़ नहीं परंतु इस पर पासा फैक्कर निर्णय कर लें कि यह किसको मिलेगा.” सैनिकों ने जो किया उससे पवित्र शास्त्र का इस लेख पूरा हो गया: “उन्होंने मेरा बाहरी कपड़ा आपस में बांट लिया, और मेरे अंदर के बब्ल के लिए पासा फैक्का.” 25 मरीह येशु के क्रूस के समीप उनकी माता, उनकी माता की बहन, क्लोपस की पत्नी मरियम और मगदालावासी मरियम खड़ी हुई थी. 26 जब मरीह येशु ने अपनी माता और उस शिष्य को, जो उनका प्रियजन था, वहां खड़े देखा तो अपनी माता से बोले, “हे छ्री! यह आपका पुत्र है.” 27 और उस शिष्य से बोले, “यह तुम्हारी माता है.” उस दिन से वह शिष्य मरियम का रखवाला बन गया. 28 इसके बाद मरीह येशु ने यह जानते हुए कि अब सब कुछ पूरा हो चुका है, पवित्र शास्त्र का लेख पूरा करने के लिए कहा, “मैं प्यासा हूं.” 29 वहां दाखरस के सिरके से भरा एक बर्टन रखा था. लोगों ने उसमें संपंज भिगो जूफ़ा पैथे की ठहनी पर रखकर उनके मुख तक पहुंचाया. 30 उसे चखकर मरीह येशु ने कहा, “अब सब पूरा हो गया” और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए. 31 वह फ़सह की तैयारी का दिन था. इसलिये यहां अगुओं ने पिलातौस से निवेदन किया कि उन लोगों की टांगे तोड़कर उन्हें क्रूस से उतार लिया जाए जिससे वे शब्दाथ पर क्रूस पर न रहे क्योंकि वह एक विशेष महत्व का शब्दाथ था. 32 इसलिये सैनिकों ने मरीह येशु के संग क्रूस पर चढ़ाए गए एक व्यक्ति की टांगे पहले तोड़ी और तब दूसरे की. 33 जब वे मरीह येशु के पास आए तो उन्हें मालूम हुआ कि उनके प्राण पहले ही

19 इसलिये पिलातौस ने मरीह येशु को भीतर ले जाकर उन्हें कोडे लगवाए. 2 सैनिकों ने कांटों का एक मुकुट गूंथकर उनके सिर पर रखा और उनके ऊपर एक बैंगनी बब्ल डाल दिया 3 और वे एक-एक कर उनके सामने आकर उनके मुख पर प्रहार करते हुए कहने लगे, “यहां दियों के राजा की जय!” 4 पिलातौस ने दोबारा आकर भीड़ से कहा, “देखो, मैं उसे तुम्हारे लिए बाहर ला रहा हूं कि तुम जान लो कि मुझे उसमें कोई दोष नहीं मिला.” 5 तब कांटों का मुकुट व बैंगनी बब्ल धारण किए हुए मरीह येशु को बाहर लाया गया और पिलातौस ने लोगों से कहा, “देखो, इसे!” 6 जब प्रधान पुरोहितों और सेवकों ने मरीह येशु को देखा तो चिल्लाकर कहने लगे, “क्रूसदंड! क्रूसदंड!” पिलातौस ने उनसे कहा, “इसे ले जाओ और उम ही दो इसे मृत्यु दंड क्योंकि मुझे तो इसमें कोई दोष नहीं मिला.” 7 यहां अगुओं ने उत्तर दिया, “हमारा एक नियम है. उस नियम के अनुसार इस व्यक्ति को मृत्यु दंड ही मिलना चाहिए क्योंकि यह स्वयं को परमेश्वर का पुत्र बताता है.” 8 जब पिलातौस ने यह सुना तो वह और अधिक भयभीत हो गया. 9 तब उसने दोबारा राजमहल में जाकर मरीह येशु से पूछा, “तुम कहां के हो?” किंतु मरीह येशु ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया. 10 इसलिये पिलातौस ने उनसे कहा, “तुम बोलते क्यों नहीं? क्या तुम नहीं जानते कि मुझे यह अधिकार है कि मैं तुम्हें मुक्त कर दूँ और यह भी कि तुम्हें मृत्यु दंड दूँ?” 11 मरीह येशु ने उत्तर दिया, “आपका मुझ पर कोई अधिकार न होता यदि वह आपको ऊपर से न दिया गया होता. अत्यंत नीच है उसका पाप, जिसने मुझे आपके हाथ सौंपा है.” 12 परिणामस्वरूप पिलातौस ने उन्हें मुक्त करने के यत्र किए किंतु यहां अगुओं ने चिल्ला-चिल्लाकर कहा, “यदि आपने इस व्यक्ति को मुक्त किया तो आप क्यासर के मित्र नहीं हैं. हर एक, जो स्वयं को राजा दर्शाता है, वह क्यासर का विरोधी है.” 13 ये सब सुनकर पिलातौस मरीह येशु को बाहर लाया और न्याय आसन पर बैठ गया, जो उस स्थान पर था, (जिसे इन्हीं भाषा में ग़ब्बथा अर्थात् चबूतरा कहा जाता है). 14 यह फ़सह की तैयारी के दिन का छठा घंटा था. पिलातौस ने यहां अगुओं से कहा. “यह

निकल चुके थे। इसलिये उन्होंने उनकी टांगें नहीं तोड़ी 34 किंतु देखा कि जिस स्थान पर मसीह येशु का शब रखा था, वहां सफेद एक सैनिक ने उनकी पसली को भाले से बेधा और वहां से तुरंत लह कपड़ों में दो स्वर्गदूत बैठे हैं—एक सिर के पास और दूसरा पैर व जल बह निकला। 35 वह, जिसने यह देखा, उसने गवाही दी के पास। 13 उन्होंने उनसे पूछा, “तुम क्यों रो रही हो?” उन्होंने है और उसकी गवाही सच्ची है—वह जानता है कि वह सच ही उत्तर दिया, “वे मेरे प्रभु को यहां से ले गए हैं और मैं नहीं जानती कह रहा है, कि तुम भी विचास कर सको। 36 यह इसलिये हुआ कि उन्होंने उन्हें कहा रखा है.” 14 यह कहकर वह पीछे मुड़ी कि पवित्र शास्त्र का यह लेख पूरा हो: उसकी एक भी हड्डी तोड़ी तो मसीह येशु को खड़े देखा किंतु वह पहचान न सकी कि वह न जाएगी। 37 पवित्र शास्त्र का एक अन्य लेख भी इस प्रकार है: मसीह येशु है। 15 मसीह येशु ने उनसे पूछा, “तुम क्यों रो रही हो? वे उसकी ओर देखेंगे, जिसे उन्होंने बेधा है। 38 अरिमथियावासी किसे खोज रही हो?” उन्होंने उन्हें माली समझकर कहा, “यदि योसेफ यहदी अगुओं के भय के कारण मसीह येशु का गुप्त शिष्य आप उन्हें यहां से उठा ले गए हैं तो मुझे बता दीजिए कि आपने था। उसने पिलारॉस से मसीह येशु का शब ले जाने की अनुमति उन्हें कहां रखा है कि मैं उन्हें ले जाऊं।” 16 इस पर मसीह येशु चाही। पिलारॉस ने स्वीकृति दे दी और वह आकर मसीह येशु का बोले, “मरियम!” अपना नाम सुन वह मुड़ी और उन्हें इत्री भाषा में शब ले गया। 39 तब निकोदेमॉस भी, जो पहले मसीह येशु से भेंट बुलाकर कहा “रब्बूनी!” (अर्थात् गुव्वर।) 17 मसीह येशु ने उनसे करने रात के समय आए थे, लगभग तैतीस किलो गन्धरस और कहा, “मुझे पकड़े मत रहो, क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर अगस्त का मिश्नेण लेकर आए। 40 इन लोगों ने मसीह येशु का शब नहीं गया है, किंतु मेरे भाइयों को जाकर सचित कर दो, ‘मैं अपने लिया और यहदियों की अतिम संस्कार की रीति के अनुसार उस पर पिता और तुम्हारे पिता तथा अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के यह मिश्नेण लगाकर कपड़े की पटियों में लपेट दिया। 41 मसीह येशु पास ऊपर जा रहा है।” 18 मगादालावासी मरियम ने आकर शिष्यों को कूसित किए जाने के स्थान के पास एक उपवन था, जिसमें एक के सामने धोषणा की: “मैंने प्रभु को देखा है。” और उसने शिष्यों को नई कब्र की गुफा थी। उसमें अब तक कोई शब नहीं रखा गया था। वह सब बताया, जो प्रभु ने उससे कहा था। 19 उसी दिन, जो सप्ताह 42 इसलिये उन्होंने मसीह येशु के शब को उसी कब्र की गुफा में रखा का पहला दिन था, संध्या समय यहदी अगुओं से भयभीत शिष्य द्वारा दिया क्योंकि वह पास थी और वह यहदियों के शब्दाथ की तैयारी बंद किए हुए कर्मे में इकट्ठा थे। मसीह येशु उनके बीच आ खड़े हुए और बोले, “तुममें शांति बनी रहे।” 20 यह कहकर उन्होंने उन्हें अपने हाथ और पांव दिखाएँ। प्रभु को देखकर शिष्य अनंद से भर गए। 21 इस पर मसीह येशु ने दोबारा उनसे कहा, “तुममें शांति बनी रहे। जिस प्रकार पिता ने मुझे भेजा है, मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।” 22 तब उन्होंने उन पर फूंका और उनसे कहा, “पवित्र आत्मा ग्रहण करो। 23 यदि तुम किसी के पाप क्षमा करोगे, उनके पाप क्षमा किए गए हैं और जिनके पाप तुम नहीं करोगे, वे अपने पारों में बैठे रहेंगे।” 24 जब मसीह येशु अपने शिष्यों के पास आए थे, उस समय उनके बाहर शिष्यों में से एक शिष्य थोमॉस, जिनका उपनाम दिदुरॉस था, वहां नहीं थे। 25 अन्य शिष्य उनसे कहते रहे, “हमने प्रभु को देखा है।” इस पर थोमॉस उनसे बोले, “जब तक मैं उनके हाथों में कीलों के बे चिह्न न देख लूँ और कीलों से छिदे उन हाथों में अपनी उंगली और उनकी पसली में अपना हाथ ढालकर न देख लूँ, तब तक मैं विचास कर ही नहीं सकता।” 26 आठ दिन के बाद मसीह येशु के शिष्य दोबारा उस कक्ष में इकट्ठा थे और इस समय थोमॉस उनके साथ थे। सारे द्वार बंद होने पर भी मसीह येशु उनके बीच आ खड़े हुए और उनसे कहा, “तुममें शांति बनी रहे।” 27 तब उन्होंने थोमॉस की ओर मुख कर कहा, “अपनी उंगली से मेरे हाथों को छूकर देखो और अपना हाथ बढ़ाकर मेरी पसली में डालो; अविचासी न रहकर, विचासी बनो।” 28 थोमॉस बोल उठे, “मैं प्रभु! मैं परमेश्वर!” 29 मसीह येशु ने उनसे कहा, “तुमने तो विचास इसलिये किया है कि तुमने मुझे देख लिया, धन्य हैं वे,

जिन्होंने मुझे नहीं देखा फिर भी विश्वास किया।” 30 मसीह येशु ने प्रेम करता हूं।” मसीह येशु ने उनसे कहा, “मेरी भेड़ों की देखभाल अपने शिष्यों के सामने अनेक अद्भुत चिह्न दिखाए, जिनका वर्णन करो।” 17 मसीह येशु ने तीसरी बार पूछा, “योहन के पुत्र शिमओन, इस पुस्तक में नहीं है 31 पांत् ये, जो लिखे गए हैं, इसलिये कि तुम क्या तुम मुझसे प्रेम करते हो?” यह सुनकर पेटररॉस आहत हुए कि विश्वास करो कि येशु ही वह मसीह है, वही परमेश्वर के पुत्र है और मसीह येशु ने उनसे तीसरी बार यह पूछा, “क्या तुम मुझसे प्रेम करते हो?” उत्तर में उन्होंने मसीह येशु से कहा, “प्रभु, आप तो मन की

21 इसके बाद तिबेरियॉस झील के तट पर मसीह येशु ने स्वयं को शिष्यों पर दोबारा प्रकट किया। यह इस प्रकार हआ: 2 शिमओन पेटररॉस, थोमरॉस, जिनका उपनाम दिदुमॉस है, गलील प्रदेश के कानावासी नाथानाएल, जेबेदियॉस के पुत्र और मसीह येशु के अन्य दो शिष्य इकट्ठा थे। 3 शिमओन पेटररॉस ने उनसे कहा, “मैं तो दोबारा मछली पकड़ना आंभ कर रहा हूं।” शेष सभी ने कहा, “चलिए, हम भी आपके साथ चलते हैं।” तब वे वहां से निकलकर नाव में आ गए, उस रात वे एक भी मछली न पकड़ सके। 4 सूर्योदय हो रहा था और मसीह येशु झील के तट पर खड़े थे किंतु शिष्य पहचान न सके कि वह मसीह येशु हैं। 5 मसीह येशु ने उनसे कहा, “मेरे बालकों, मछलियां नहीं मिली न?” “नहीं,” शिष्यों ने उत्तर दिया। 6 मसीह येशु ने उनसे कहा, “नाव की दर्दी और जाल डालो तो मिलेंगी।” उन्होंने जाल डाला और उन्हें इतनी अधिक मछलियां मिली कि वे जाल को खींच न सके। 7 मसीह येशु के उस प्रिय शिष्य ने पेटररॉस से कहा, “वह प्रभु हैं।” यह सुनते ही कि वह प्रभु हैं, शिमओन पेटररॉस ने अपना बाहरी कपड़ा लपेटा और झील में कूद पड़े—क्योंकि उस समय वह आधे बहों में थे। 8 बाकी शिष्य छोटी नाव में मछलियों से भरे जाल को खींचते हुए आ गए, वे तट से अधिक नहीं, लगभग सौ मीटर दूर थे। 9 तट पर पहुंचने पर उन्होंने देखा कि पहले ही कोयले की आग पर मछली रखी थी और पास में रोटी भी। 10 मसीह येशु ने उनसे कहा, “अभी जो मछलियां तुमने पकड़ी हैं, उम्में से कुछ यहां ले आओ।” 11 शिमओन पेटररॉस ने नाव पर चढ़कर जाल तट पर खींचा, जो बड़ी-बड़ी एक सौ तिरपन मछलियों से भरा हुआ था। इनी अधिक मछलियां होने पर भी जाल नहीं फटा। 12 मसीह येशु ने उन्हें आमंत्रण दिया, “आओ, भोजन कर लो।” यह आभास होते हुए भी कि वह प्रभु ही है, किसी शिष्य ने उनसे यह पूछने का साहस नहीं किया कि आप कौन हैं। 13 मसीह येशु ने आगे बढ़कर रोटी उठाई और उहें दी और उसके बाद मछली भी। 14 मेरे हूओं में से जी उठने के बाद यह तीसरा अवसर था, जब मसीह येशु शिष्यों पर प्रकट हुए। 15 भोजन के बाद मसीह येशु ने शिमओन पेटररॉस से प्रश्न किया, “योहन के पुत्र शिमओन, क्या तुम इन सबसे बढ़कर मुझसे प्रेम करते हो?” उन्होंने उत्तर दिया, “जी हां, प्रभु, आप जानते हैं कि मैं आपसे प्रेम करता हूं。” मसीह येशु ने उनसे कहा, “मेरे मेमनों को चराओ।” 16 मसीह येशु ने दूसरी बार उनसे पूछा, “योहन के पुत्र शिमओन, क्या तुम मुझसे प्रेम करते हो?” उन्होंने उत्तर दिया, “जी हां, प्रभु, आप जानते हैं मैं आपसे



तब मैंने पवित्र नगरी, नई येस्सलेम को स्वर्ग से, परमेश्वर की ओर से उतरते हुए देखा। वह अपने वर के लिए खुबसूती से सजाई गई वधू के जैसे सजी थी। तब मैंने सिंहासन से एक ऊचे शब्द में यह कहते सुना, “देखो! मनुष्यों के बीच में परमेश्वर का निवास! अब परमेश्वर उनके बीच निवास करेंगे। वे उनकी प्रजा होंगे तथा स्वयं परमेश्वर उनके बीच होंगे।

प्रकाशित वाक्य 21:2-3

प्रकाशित वाक्य

- 19** इसके बाद मुझे स्वर्ग से एक ऐसी आवाज सुनाई दी मानो एक “आओ, प्रभु के आलीशान भोज के लिए इकट्ठा हो जाओ 18 कि बड़ी भीड़ ऊंचे शब्द में कह रही हो: “हाल्लेलूयाह! उद्धार, तुम राजाओं, सेनापतियों, शतिशली मनुष्यों, घोड़ों, घुड़सवारों महिमा और सामर्थ्य हमारे परमेश्वर की है, 2 क्योंकि सही और तथा सब मनुष्यों का—स्वतंत्र या दास, साधारण या विशेष, सबका धर्मी है उनके निर्णय। क्योंकि दंड दिया है उन्होंने उस कुछात मांस खाओगे।” 19 तब मैंने देखा कि हिसक पशु तथा पृथ्वी के राजा व्यधिचारिणी को, जो अपने वेश्यागामी से पृथ्वी को भ्रष्ट करती और उनकी सेनाएं उससे, जो घोड़े पर बैठा है तथा उसकी सेना से रही है। उन्होंने उससे अपने अपने दासों के लह का बदला लिया।” 3 यदु करने के लिए इकट्ठा हो रही है। 20 तब उस हिसक पशु को उनका शब्द दोबारा सुनाई दिया: “हाल्लेलूयाह! उसे भस्म करती यकड़ लिया गया। उसके साथ ही उस द्वारे भविष्यतका को भी, जो ज्वाला का धुआं हमेशा उठारा रहेगा।” (aiōn g165) 4 वे चौबीसों पर उस हिसक पशु की मुहर छींथी थी तथा जो उसकी मृत्ति की प्राचीन तथा चारों जीवित प्राणी परमेश्वर के सामने, जो सिंहासन पर उस पशु के नाम में चमत्कार चिह्न दिखाकर उन्हें छल रहा था, जिन परमेश्वर के लिए इकट्ठा हो रही है। 21 शेष का संहार उस जो परमेश्वर के दास हो, तुम सब, जो उनके श्रद्धातु हो, साधारण या घुड़सवार के मुंह से निकली हीर्झ तलवार से कर दिया गया तथा सभी विशेष, परमेश्वर की स्तुति करो।” 6 तब मुझे बड़ी भीड़ का शब्द पक्षियों ने दूंस-दूंस कर उनका मांस खाया।
- तेज लहरों तथा बादलों की गर्जन की आवाज के समान यह कहता सुनाई दिया: “हाल्लेलूयाह! प्रभु हमारे परमेश्वर, जो सर्वशक्तिमान है, राज्य-कर रहे हैं। 7 आओ, हम आनंद मनाएं, मगन हों और उनकी महिमा करों! क्योंकि मैमने के विवाहोत्सव का समय आ गया है, और उसकी वधु ने स्वयं को सजा लिया है। 8 उसे उत्तम मलमल के उज्जवल तथा स्वच्छ वस्त्र, धारण करने की आज्ञा दी गई।” (यह उत्तम मलमल है पवित्र लोगों के धर्मी काम।) 9 तब स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, “लिखो: ‘धन्य है वे, जो मैमने के विवाह-भोज में आमंत्रित हैं।’” तब उसने यह भी कहा, “परमेश्वर के द्वारा भेजा गया—यह संदेश सच है।” 10 इसलिये मैं उस स्वर्गदूत को दंडवत करने उपरे चरणों में गिर पड़ा किंतु उसने मुझसे कहा, “मेरी बंदन न करो! मैं तो तुम्हारे और तुम्हारे भाई बहनों के समान ही, जो मसीह येशु के गवाह हैं, दास हूं। दंडवत परमेश्वर को करो! क्योंकि मसीह येशु के विषय का प्रचार ही भविष्यतागामी का आयात है।” 11 तब मैंने स्वर्ग खुला हुआ देखा। वहां मेरे समाने एक घोड़ा था। उसका रंग सफेद था तथा जो उस पर सवार है, वह विवासयोग्य और सत्य कहलाता है। वह धार्मिकता में न्याय और युद्ध करता है। 12 उसकी आंखें अनिं की ज्वाला हैं, उसके सिर पर अनेक मुकुट हैं तथा उसके शरीर पर एक नाम लिखा है, जो उसके अलावा दूसरे किसी को मालाप नहीं। 13 वह लह में डुबाया हुआ वस्त्र धारण किए हुए है और उसका नाम है परमेश्वर का शब्द। 14 स्वर्ग की सेनाएं उत्तम मलमल के सफेद तथा स्वच्छ वस्त्रों में सफेद घोड़े पर उसके पीछे-पीछे चल रही थीं। 15 उसके पीछे से एक तेज तलवार निकली कि वह उससे राशों का विनाश करे। वह लोहे के राजदंड से उन पर राज्य करेगा। वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के क्रोध की जलजलाहट के दाखरस का रसकुंड रैंदेगा। 16 उसके वस्त्र और उसकी जांघ पर जो नाम लिखा है, वह यह है: राजाओं का राजा, प्रभुओं का
- प्रभु। 17 तब मैंने एक स्वर्गदूत को सूर्य में खड़ा हुआ देखा, जिसने ऊंचे आकाश में उड़ते हुए पक्षियों को संबोधित करते हुए कहा,
- 20** इसके बाद मैंने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते हुए देखा। उसके हाथ में अथाह गड्ढे की कुंजी तथा एक भारी सांकल थी। (Abyssos g12) 2 उसने उस परों वाले सांप को—उस पुराने सांप को, जो वस्तुतः दियाबोलोस या शैतान है, एक हजार वर्ष के लिए बांध दिया। 3 तब स्वर्गदूत ने उसे अथाह गड्ढे में फेंक दिया, उसे बंद कर उस पर मुहर लगा दी कि वह हजार वर्ष पूरा होने तक अब किसी भी राष्ट्र से छल न करे। यह सब होने के बाद यह ज़स्ती था कि उसे थोड़े समय के लिए मुक्त किया जाए। (Abyssos g12) 4 तब मैंने सिंहासन देखे, उन पर वे व्यक्ति बैठे थे, जिन्हें न्याय करने का अधिकार दिया गया था। तब मैंने उनकी आत्माओं को देखा, जिनके सिर मसीह येशु से संबंधित उनकी गवाही तथा परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के कारण उड़ा दिए गए थे। उन्होंने उस हिसक पशु या उसकी मृती की पूजा नहीं की थी। जिनके मस्तक तथा हाथ पर उसकी मुहर नहीं लगी थी, वे जीवित हो उठे और उन्होंने हजार वर्ष तक मरीह के साथ राज्य किया। 5 यही है वह पहला पुनर्स्थान—बाकी मेरे हुए तब तक जीवित न हुए, जब तक हजार वर्ष पूरे न हो गए। 6 धन्य और पवित्र हैं वे, जिन्हें इस पहले पुनर्स्थान में शामिल किया गया है। दूसरी मृत्यु का उन पर कोई अधिकार न होगा परंतु वे परमेश्वर और मसीह के पुरोहित होंगे तथा हजार वर्ष तक उनके साथ राज्य करेंगे। 7 हजार वर्ष का समय पूरा होने पर शैतान उसकी कैद से आजाद कर दिया जाएगा। 8 तब वह उन राष्ट्रों को भरमाने निकल पड़ेगा, जो पृथ्वी पर हर जगह बसे हुए हैं—गाँग और मारोग—कि उन्हें युद्ध के लिए इकट्ठा करे। वे समुद्रतट के रेत कणों के समान अनगिनत हैं। 9 वे सारी पृथ्वी पर छा गए और उन्होंने पवित्र लोगों के शिविर तथा “प्रिय नगरी” को घेर लिया। तभी स्वर्ग से आग बरसी और उस आग ने उन्हें भस्म कर

डाला। 10 तब शैतान को, जिसने उनके साथ छल किया था, आग तथा गंधक की झील में फेंक दिया गया, जहां उस हिस्क पशु और झटे भविष्यवक्ता को भी फेंका गया है। वहां उन्हें अनंत काल के लिए दिन-रात ताड़ाना दी जाती रहेगी। (aiōn g165, Limnē Pyr g3041 g4442) 11 तब मैंने सफेद रंग का एक वैभवपूर्ण सिंहासन तथा उन्हें से सुसज्जित उसकी आभा पारदर्शी स्फटिक जैसे बेशकीमती रत्र देखा, जो उस पर बैठे हैं, जिनकी उपस्थिति से पृथ्वी व आकाश सूर्यकांत के समान थी। 12 नगर की शहरपनाह ऊंची तथा विशाल पलायन कर गए और फिर कर्पी न देखे गए। 12 तब मैंने सभी मरे थीं। उसमें बारह द्वार थे तथा बारहों द्वारों पर बारह स्वर्गदूत ठहराए हुओं—साधारण और विशेष को सिंहासन के सामने उपस्थित देखा। गए थे। उन द्वारों पर इथाएल के बारह गोत्रों के नाम लिखे थे। 13 तब पुस्तके खोली गई तथा एक अन्य पुस्तक—जीवन-पुस्तक—भी तीन द्वार पूर्व दिशा की ओर, तीन उत्तर की ओर, तीन दक्षिण की खोली गई। मरे हुओं का न्याय पुस्तकों में लिखे उनके कामों के ओर तथा तीन पश्चिम की ओर थे। 14 नगर की शहरपनाह की बारह अनुसार किया गया। 13 समृद्ध ने अपने में समाए हुए मरे लोगों को नींवि थी। उन पर मैंने के बारहों प्रेरितों के नाम लिखे थे। 15 जो प्रस्तुत किया। मृत्यु और अधोलोक ने भी अपने में समाए हुए मरे स्वर्गदूत, मुझे संबोधित कर रहा था, उसके पास नगर, उसके द्वार लोगों को प्रस्तुत किया। हर एक का न्याय उसके कामों के अनुसार तथा उसकी शहरपनाह को मापने के लिए सोने का एक मापक-किया गया। (Hadēs g86) 14 मृत्यु तथा अधोलोक को आग की झील में फेंक दिया गया। यही है दूसरी मृत्यु—आग की झील। (Hadēs g86, Limnē Pyr g3041 g4442) 15 उसे, जिसका नाम जीवन की पुस्तक में न पाया गया, आग की झील में फेंक दिया गया।

(Limnē Pyr g3041 g4442)

21 तब मैंने एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी देखी, अब पहले का स्वर्ग और पहले की पृथ्वी का अस्तित्व न रहा था। समृद्ध का अस्तित्व भी न रहा था। 2 तब मैंने पवित्र नगरी, नई येस्सलेम को स्वर्ग से, परमेश्वर की ओर तथा उत्तरते हुए देखा। वह अपने वर के लिए खुबसूरती से सराई गई वधू के जैसे सजी थी। 3 तब मैंने सिंहासन से एक ऊंचे शब्द में यह कहते सना, “देखो! मनुष्यों के बीच में परमेश्वर का निवास।” अब परमेश्वर उनके बीच निवास करेंगे, वे उनकी प्रजा होंगे तथा स्वयं परमेश्वर उनके बीच होंगे। 4 परमेश्वर उनकी आंखों से हर एक आंसू पोछ देंगे। अब से मृत्यु मौजूद न रहेगी। अब न रहेगा विलाप, न रोना और न पीड़ा क्योंकि जो पहली बातें थीं, अब वे न रहीं।” 5 उन्होंने, जो सिंहासन पर विराजमान हैं, कहा, “देखो! अब मैं नई सुष्टि की रचना कर रहा हूं!” तब उन्होंने मुझे संबोधित करते हुए कहा, “लिखो, क्योंकि जो कुछ कहा जा रहा है, सच और विक्षायोग्य है।” 6 तब उन्होंने आगे कहा, “सब पूरा हो चुका! मैं ही अल्फा और ओमेगा हूं—आदि तथा अंत। मैं उसे, जो प्यासा है, जीवन-जल के स्रोतों से मुफ्त में पीने को दूंगा। 7 जो विजयी होगा, उसे यह उत्तराधिकार प्राप्त होगा: मैं उसका परमेश्वर होऊंगा, और वह मेरी संतान। 8 किंतु डरपोकों, अविश्वासियों, भ्रष्टों, हत्यारों, व्यभिचारियों, टोन्हों, मृत्युपूजकों और सभी झट बोलने वालों का स्थान उस झील में होगा, जो आग तथा गंधक से धधकती रहती है। यही है दूसरी मृत्यु。” (Limnē Pyr g3041 g4442) 9 तब जिन सात स्वर्गदूतों के पास सात अंतिम

मुझसे कहा, “आओ, मैं तुम्हें वधू—मैमने की पत्नी दिखाऊं।” 10 तब वह मुझे मेरी आत्मा में ध्यानमान अवस्था में एक बड़े पहाड़ के ऊंचे शिखर पर ले गया और मुझे परमेश्वर की ओर से स्वर्व से उत्तरा हुआ पवित्र नगर येस्सलेम दिखाया। 11 परमेश्वर की महिमा से सुसज्जित उसकी आभा पारदर्शी स्फटिक जैसे बेशकीमती रत्र देखा, जो उस पर बैठे हैं, जिनकी उपस्थिति से पृथ्वी व आकाश सूर्यकांत के समान थी। 12 नगर की शहरपनाह ऊंची तथा विशाल पलायन कर गए और फिर कर्पी न देखे गए। 12 तब मैंने सभी मरे थीं। उसमें बारह द्वार थे तथा बारहों द्वारों पर बारह स्वर्गदूत ठहराए हुओं—साधारण और विशेष को सिंहासन के सामने उपस्थित देखा। गए थे। उन द्वारों पर इथाएल के बारह गोत्रों के नाम लिखे थे। 13 तब पुस्तके खोली गई तथा एक अन्य पुस्तक—जीवन-पुस्तक—भी तीन द्वार पूर्व दिशा की ओर, तीन उत्तर की ओर, तीन दक्षिण की खोली गई। मरे हुओं का न्याय पुस्तकों में लिखे उनके कामों के ओर तथा तीन पश्चिम की ओर थे। 14 नगर की शहरपनाह की बारह अनुसार किया गया। 13 समृद्ध ने अपने में समाए हुए मरे लोगों को नींवि थी। उन पर मैंने के बारहों प्रेरितों के नाम लिखे थे। 15 जो प्रस्तुत किया। मृत्यु और अधोलोक ने भी अपने में समाए हुए मरे स्वर्गदूत, मुझे संबोधित कर रहा था, उसके पास नगर, उसके द्वार लोगों को प्रस्तुत किया। हर एक का न्याय उसके कामों के अनुसार तथा उसकी शहरपनाह को मापने के लिए सोने का एक मापक-किया गया। (Hadēs g86) 14 मृत्यु तथा अधोलोक को आग की झील में फेंक दिया गया। यही है दूसरी मृत्यु—आग की झील। (Hadēs g86, Limnē Pyr g3041 g4442) 15 उसे, जिसका नाम जीवन की पुस्तक में न पाया गया, आग की झील में फेंक दिया गया।

(Limnē Pyr g3041 g4442)

17 तब उसने शहरपनाह को मापा। वह सामाज्य मानवीय मापदंड के अनुसार पैसठ मीटर थी। यही माप स्वर्गदूत का भी था। 18 शहरपनाह सूर्यकांत मणि की तथा नगर शुद्ध सोने का बना था, जिसकी आभा निर्मल कांच के समान थी। 19 शहरपनाह की नींव हर एक प्रकार के कीमती पत्थरों से सजायी गयी थी: पहला पत्थर था सूर्यकांत, दूसरा नीलकांत, तीसरा स्फटिक, चौथा पन्ना 20 पांचवां गोमेद, छठा मणिक्य, सातवां स्वर्णमणि; आठवां हरितमणि; नवां पुखराज; दसवां चन्द्रकांत; ग्यारहवां धूम्रकांत और बारहवां नीलम। 21 नगर के बारहों द्वार बारह मोती थे—हर एक द्वार एक पूरा मोती था तथा नगर का प्रधान मार्ग शुद्ध सोने का बना था, जिसकी आभा निर्मल कांच के समान थी। 22 इस नगर में मुझे कोई मंदिर दिखाई न दिया क्योंकि स्वयं सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और मैमना इसका मंदिर हैं। 23 नगर को रोशनी देने के लिए न तो सूर्य की जस्तर है न चंद्रमा की क्योंकि परमेश्वर का तेज उसे उजियाला देता है तथा स्वयं मैमना इसका दीपक है। 24 राष्ट्र उसकी रोशनी में वास करेंगे तथा पृथ्वी के राजा इसमें अपना वैभव ले आएंगे। 25 दिन की समाप्ति पर नगर द्वार कर्पी बंद न किए जाएंगे क्योंकि रात यहां कभी होगी ही नहीं। 26 सभी राष्ट्रों का वैभव और आदर इसमें लाया जाएगा। 27 कोई भी अशुद्ध वस्तु इस नगर में न तो प्रवेश हो सकेगी और न ही वह, जिसका स्वभाव लज्जास्पद और बातें झट से भरी है, इसमें प्रवेश वे ही कर पाएंगे, जिनके नाम मैमने की जीवन-पुस्तक में लिखे हैं।

22 इसके बाद उस स्वर्गदूत ने मुझे जीवन के जल की नदी दिखाई, जो स्फटिक के समान निर्मल-पारदर्शी थी, जो परमेश्वर तथा मैमने के सिंहासन से बहती थी। 2 यह नदी नगर के विपरितियों से भरे सात कट्टों थे, उनमें से एक ने मेरे पास आकर प्रधान मार्ग से होती हुई बह रही है। नदी के दोनों ओर जीवन के पेड़

है, जिसमें बारह प्रकार के फल उत्पन्न होते हैं। यह पेड़ हर महीने से उसे दूर कर देंगे। 20 वह, जो इस घटनाक्रम के प्रत्यक्षदर्शी हैं, फल देता है। इस पेड़ की पत्तियों में राष्ट्रों को चंगा करने की क्षमता कहते हैं, “निश्चित ही मैं शीघ्र आने पर हूं.” आमेन! आइए, प्रभु है। 3 अब से वहां श्रापित कुछ भी न रहेगा। परमेश्वर और मेमने का येशु। 21 प्रभु येशु का अनुग्रह सब पर बना रहे। आमेन।

सिंहासन उस नगर में होगा, उनके दास उनकी आराधना करेंगे। 4 वे

उनका चेहरा निहरेंगे तथा उनका ही नाम उनके माथे पर लिखा होगा। 5 वहां अब से रात होगी ही नहीं। न तो उन्हें दीपक के प्रकाश की जस्तर होगी और न ही सूर्य के प्रकाश की क्योंकि स्वयं प्रभु परमेश्वर उनका उजियाला होगे। वह हमेशा शासन करेंगे। (aiōn

g165) 6 तब स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, “जो कुछ अब तक कहा गया है, वह सच और विश्वासयोग्य है। प्रभु ने जो भविष्यद्वत्ताओं को आत्माओं के परमेश्वर है, अपने स्वर्गदूत को अपने दासों के पास वह सब प्रकट करने को भेजा है, जिनका जल्द पूरा होना जरूरी है。” 7 “देखों, मैं जल्द आने पर हूं। धन्य है वह, जो इस अभिलेख की भविष्यवाणी के अनुसार चालचलन करता है。” 8 मैं, योहन वही हूं, जिसने स्वयं यह सब सुना और देखा है। यह सब सुनने और देखने पर मैं उस स्वर्गदूत को दंडबत करने उसके चरणों पर गिर पड़ा, जिसने मुझे यह सब दिखाया था, 9 किंतु स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, “देख ऐसा मत करो! मैं तो तुम्हारे, तुम्हारे भाई भविष्यद्वत्ताओं तथा इस अभिलेख के पालन करनेवालों के समान ही परमेश्वर का दास हूं। दंडबत परमेश्वर को करो。” 10 तब उसने आगे कहा, “इस अभिलेख की भविष्यवाणी को मोहर नहीं लगाना, क्योंकि इसके पूरा होने का समय निकट है। 11 जो दुराचारी है, वह दुराचार में लीन रहे, जो पापी है, वह पापी बना रहे, जो धर्मी है, वह धार्मिकता का स्वभाव करे तथा जो पवित्र है, वह पवित्र बना रहे。” 12 “देखों! मैं जल्द आने पर हूं। हर एक मनुष्य को उसके कामों के अनुसार जो बदला दिया जाएगा, वह मैं अपने साथ ला रहा हूं। 13 मैं ही अल्फा और ओमेगा हूं, पहला तथा अंतिम, आदि तथा अंत। 14 “धन्य हैं वे, जिन्होंने अपने वस्त्र धो लिए हैं कि वे द्वार से नगर में प्रवेश कर सकें और जीवन के पेड़ का फल प्राप्त कर सकें। 15 करो, टोहे, व्यभिचारी, हत्यारे, मूर्तिपूजक तथा झूठ के समर्थक या वे, जो झूठ गढ़ते हैं, बाहर ही रह जाएंगे। 16 “मैं, येशु, मैंने कलीसियाओं के हित में अपने स्वर्गदूत को इस घटनाक्रम के प्रकाशन के लिए तुम सबके पास गवाह के स्प में भेजा है। मैं ही दावीद का वंशमूल और वंशज हूं, और भोर का चमकता हुआ तारा।” 17 आत्मा तथा वधू, दोनों ही की विनती है, “आइए!” जो सुन रहा है, वह भी कहे, “आइए!” वह, जो प्यासा है, आए; कोई भी, जो अभिलाषी है, जीवन का जल मुक्त में पिए। 18 मैं हर एक को, जो इस अभिलेख की भविष्यवाणी को सुनता है, चेतावनी देता हूं: यदि कोई इसमें कुछ भी जोड़ता है, तो परमेश्वर उसकी विपत्तियों को, जिनका वर्णन इस अभिलेख में है, बढ़ा देंगे। 19 यदि कोई भविष्यवाणी के इस अभिलेख में से कुछ भी निकलता है तो परमेश्वर जीवन के पेड़ तथा पवित्र नगर में से, जिनका वर्णन इस अभिलेख में है, उसके भाग

66 वर्सेज

हिन्दी at AionianBible.org

The Bible is a library of 66 books in the Protestant Canon written by 40 different men over a span of 1,500 years from 1435 BC to 65 AD with one consistent message. From the first page through the last, Jesus. Genesis promised our deliverer is coming, Jesus. Moses said our better prophet is coming, Jesus. Isaiah prophesied our Messiah will be a suffering servant, Jesus. John announced our Anointed One is here, Jesus. Jesus himself testified he is our Lord God, Yahweh. The gospels agree our conqueror of death has risen, Jesus. The Apostles witnessed our victor ascend to his throne in Heaven, Jesus. And Revelation promises Jesus' return for our final judgment. Are you ready? Read the Bible cover to cover at AionianBible.org and answer these questions. How did I get here? Why am I here? How do I determine right or wrong? How can I escape condemnation? What is my destiny? Begin with the primer verses below.

उत्पत्ति 9:8 फिर परमेश्वर ने नोहा तथा उनके पुत्रों से कहा: 9:9 “मैं तुम्हारे बंश के साथ पक्का वायदा करता हूँ. 9:10 यही नहीं किंतु उन सबके साथ जो इस जहाज से बाहर आये हैं—पक्षी, पालतू पशु तथा तुम्हारे साथ पृथ्वी के हर एक पशु, से भी वायदा करता हूँ. 9:11 मैं तुम्हारे साथ अपनी इस वाचा को पूरी करूँगा कि अब मैं जलप्रलय के द्वारा सभी प्राणियों और पृथ्वी को कभी नाश नहीं करूँगा.” 9:12 परमेश्वर ने और कहा, “जो वायदा मैंने तुम्हारे साथ तथा तुम्हारे साथ के जीवित प्राणियों के साथ किया है, यह पीढ़ी से पीढ़ी तक स्थिर रहेगा और 9:13 इस बात का सबूत तुम बादलों में मेघधनुष के स्प में देखोगे, यही मेरे एवं पृथ्वी के बीच में वाचा का चिन्ह होगा.

निर्गमन 14:13 मोशेह ने लोगों से कहा: “मत डरो! स्थिर खड़े रहो और याहवेह का अद्वृत काम देखो, जो वह तुम्हारे लिए करेंगे; क्योंकि तुम आज जिन मिथियों को देख रहे हो, इसके बाद उन्हें फिर कभी भी न देखोगे. 14:14 तुम चुप रहो, याहवेह ही तुम्हारे लिए लड़ेगे.”

लैव्यवस्था 20:26 इस प्रकार जस्ती है कि तुम मेरे प्रति पवित्र रहो, क्योंकि मैं ही याहवेह हूँ, जो पवित्र हूँ; मैंने तुम्हें मेरी प्रजा होने के लिए लोगों से अलग किया है.

गिनती 6:24 ““याहवेह तुम्हें आशीष प्रदान करें, तथा तुम्हें सुरक्षित रखें; 6:25 याहवेह तुम पर अपने मुख का प्रकाश चमकाकर तुम पर अनुग्रह करें; 6:26 याहवेह तुम्हारी ओर मुड़कर तुम्हें शांति प्रदान करें.””

व्यवस्था विवरण 18:18 उन्हीं के देशवासियों में से मैं तुम्हारे समान एक भविष्यद्वत्का का उद्धव करूँगा. वही उनके लिए मेरे विचार करेगा. वही मेरे सभी आदेशों का उद्गोष्मन उनके लिए करेगा. 18:19 तब यह होगा कि जो कोई उसके द्वारा मेरी ओर से दिए गए आदेशों की उपेक्षा करेगा, खुद मैं उसे उत्तरदायी ठहराऊँगा.

यहोशू 1:7 “तुम केवल हिम्मत और संकल्प के साथ बढ़ते जाओ और मेरे सेवक मोशेह द्वारा दिए गये नियम सावधानी से मानना; उससे न तो दाँई और मुड़ना न बाई और, ताकि तुम हमेशा सफल रहो. 1:8 तुम्हारे मन से व्यवस्था की ये बातें कभी दूर न होने पाए, लेकिन दिन-रात इसका ध्यान करते रहना, कि तुम उन बातों का पालन कर सको, जो इसमें लिखी गयी हैं; तब तुम्हारे सब काम अच्छे और सफल होंगे. 1:9 मेरी बात याद रखो: दृढ़ होकर हिम्मत के साथ आगे बढ़ो; न घबराना, न उदास होना, क्योंकि याहवेह, तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे साथ हैं; चाहे तुम कहीं भी जाओ, याहवेह तुम्हारे साथ हैं.”

न्यायियों 2:7 ये यहोशू तथा यहोशू के बाद पुरनियों के सारे जीवन में याहवेह की सेवा और स्तुति करते रहे. ये उन सभी महान कामों के चरमदीद गवाह थे, जो याहवेह द्वारा इमाराल की भलाई के लिए किए गए थे.

स्त 1:16 किंतु स्थ ने उसे उत्तर दिया, “आप मुझे न तो लौट जाने के लिए मजबूर करें और न आपको छोड़ने के लिए, क्योंकि आप जहां भी जाएंगी, मैं आपके ही साथ जाऊंगी और जहां आप रहेंगी, मैं वहीं रहूंगी. आपके लोग मेरे लोग होंगे तथा आपके परमेश्वर मेरे परमेश्वर; 1:17 जिस स्थान पर आप आखिरी सांस लें, मैं भी वहीं आखिरी सांस लूँ, और वहीं मुझे भी मिट्टी दी जाए. अब यदि मृत्यु के अलावा मेरा आपसे अलग होने का कोई और कारण हो, तो याहवेह मुझे कठोर से कठोर दंड दें.”

1 शमूएल 16:7 मगर याहवेह ने शमूएल से कहा, “न तो उसके रूप में और न उसके डीलडौल से प्रभावित हो जाओ, क्योंकि मैंने उसे अयोग्य ठहरा दिया है। क्योंकि याहवेह का आंकलन वैसा नहीं होता, जैसा मनुष्य का होता है: मनुष्य बाहरी रूप को देखकर आंकलन करता है, मगर याहवेह हृदय को देखते हैं।”

2 शमूएल 7:22 “इसलिये, प्रभु याहवेह, आप ऐसे महान हैं। कोई भी नहीं है आपके तुल्य! हमने जो कुछ आपने कानों से सुना है, उसके अनुसार कोई भी परमेश्वर नहीं है आपके अलावा।

1 राजा 2:3 परमेश्वर के नियमों के पालन की जो जबाबदारी याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें सौंपी है—उनके नियमों का पालन करने का, उनकी विधियों का पालन करने का, उनकी आज्ञा, चित्तौनियों और गवाहियों का पालन करने का, जैसा कि मोशेह की व्यवस्था में लिखा है; कि तुम्हारा हर एक काम जिसमें तुम लगे होते हो, चाहे वह कैसा भी काम हो; करते हो, समझु हो जाओ;

2 राजा 22:19 इसलिये कि तुम्हारा मन दीन है और तुमने खुद को याहवेह के सामने विनम्र बना लिया, जब तुमने मुझे इस जगह और इसके निवासियों के बिस्तु कहते सुना, कि वे उजड जाएंगे, शाप बन जाएंगे, तुमने अपने बच्चे फड़े और तुमने मेरे सामने विलाप किया है, विश्वास करो, मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली है, यह याहवेह की घोषणा है।

1 इतिहास 29:17 मेरे परमेश्वर, इसलिये कि मुझे यह मालम है कि आप हृदय को परखते और सीधाई में आपकी खुशी है, मैंने अपने हृदय की सच्चाई में, अपनी इच्छा से यह सब दे दिया है। यहां मैंने यह भी बड़े अनंद से आपकी प्रजा में देखा है, जो यहां आए हैं, वे आपको अपनी इच्छा से दे रहे हैं।

2 इतिहास 7:14 और मेरी प्रजा, जो मेरे नाम से जानी जाती है, अपने आपको विनम्र बना ले, प्रार्थना करने लगे, मेरी खुशी चाहे और अपने पाप के स्वभाव से दूर हो जाए, तब मैं स्वर्ग से उनकी सुन्दरा, उनका पाप क्षमा कर्संगा और उनके देश के घाव भर दंगा।

एज़ा 7:10 एज़ा ने स्वयं को याहवेह की व्यवस्था के अध्ययन, स्वयं उसका पालन करने तथा इस्माएल राष्ट्र में याहवेह की विधियों और नियमों की शिक्षा देने के लिए समर्पित कर दिया था।

नहेमायाह 6:3 तब मैंने अपने दूर उन्हें इस संदेश के साथ भेजे: “मेरा यह काम बहुत बड़ा है, इसलिये मेरा यहां आवा संभव नहीं है। यह कैसे सही हो सकता है कि मैं इसे छोड़कर आपसे भेट करने वाहां आऊं?”

एस्टर 4:14 यदि तुम इस अवसर पर चुप रही, यह दियों के लिए निश्चय किसी अन्य जगह से राहत और उद्धार तो आ ही जाएगा, किंतु तुम एवं तुम्हारा कुल मिट जाएगा। कौन इस मर्म को समझ सकता है कि तुम्हें यह राजपद इस परिस्थिति के लिए प्रदान किया गया है?”

अथ्यूब 19:25 परंतु मुझे यह मालम है कि मेरा छुड़ाने वाला जीवित है, तथा अंततः वह पृथ्वी पर खड़ा रहेंगे।

भजन संहिता 23:1 दावीद का एक स्तोत्र। याहवेह मेरे चरबाहा है, मुझे कोई घटी न होगी। **23:2** वह मुझे हरी-हरी चाराइयों में विश्वासित प्रदान करते हैं, वह मुझे शांत स्फूर्ति देनेवाली जलधाराओं के निकट ले जाते हैं। **23:3** वह मेरे प्राण में नवजीवन का संचार करते हैं। वह अपनी ही महिमा के निमित मुझे धर्म के मार्ग पर लिए चलते हैं। **23:4** यद्यपि मैं भयनक अंधकारमय घाटी में से होकर आगे बढ़ता हूं, तौभी मैं किसी बुराई से भयभीत नहीं होता, क्योंकि आप मेरे साथ होते हैं, आपकी लाठी और आपकी छड़ी, मेरे अश्वासन हैं। **23:5** आप मेरे शत्रुओं के सामने मेरे लिए उत्कृष्ट भोजन परोसते हैं। आप तेल से मेरे सिर को मला करते हैं, मेरा प्याला उमड़ रहा है। **23:6** निश्चयतः कुशल मंगल और कस्ता-प्रेम आजीवन मेरे साथ साथ बने रहेंगे, और मैं सदा-सर्वदा याहवेह के आवास में, निवास करता रहूंगा।

नीतिवचन 3:5 याहवेह पर अपने संपूर्ण हृदय से भरोसा करना, स्वयं अपनी ही समझ का सहारा न लेना; **3:6** अपने समस्त कार्य में याहवेह को मान्यता देना, वह तुम्हारे मार्गों में तुम्हें स्मरण करेंगे।

सभोपदेशक 3:10 मनुष्य को व्यस्त रखने के लिए परमेश्वर द्वारा ठहराए गए कामों का अनुभव मैंने किया है। **3:11** उन्होंने हर एक वस्तु को उसके लिए सही समय में ही बनाया है। उन्होंने मनुष्य के हृदय में अनंत काल का अहसास जगाया, फिर भी मनुष्य नहीं समझ पाता कि परमेश्वर ने शुरू से अंत तक क्या किया है।

श्रेष्ठगीत 2:4 वह मुझे अपने महाभोज के कमरे में ले आया, तथा प्रेम ही मुझ पर उसका झंडा है।

यशायाह 9:6 क्योंकि हमारे लिए एक पुत्र का जन्म हुआ है, प्रभुता उनके कंधों पर स्थित होगी, और उनका नाम होगा अद्वृत युक्ति करनेवाला, पराक्रमी, अनंत काल का पिता, और शांति का राजकुमार होगा। 9:7 दावीद के सिंहासन और उनके राज्य पर उनके अधिकार तथा उनकी शांति का अंत न होगा। इसलिये दावीद की राजगढ़ी हमेशा न्याय और धर्म के साथ स्थिर रहेगी, सेनाओं के याहवेह का जोश इसे पूरा करेगा।

यिर्याह 1:4 मुझे याहवेह का संदेश प्राप्त हुआ, 1:5 “गर्भ में तुम्हें कोई स्वरूप देने के पूर्व मैं तुम्हें जानता था, तुम्हारे जन्म के पूर्व ही मैं तुम्हें नियुक्त कर चुका था; मैंने तुम्हें राष्ट्रों के लिए भविष्यत्काना नियुक्त किया है।” 1:6 यह सुन मैंने कहा, “ओह, प्रभु याहवेह, बात करना तो मुझे आता ही नहीं; क्योंकि मैं तो निरा लड़का ही हूँ।” 1:7 किंतु याहवेह ने मुझसे कहा, “मत कहो, ‘मैं तो निरा लड़का ही हूँ।’ क्योंकि मैं तुम्हें जहां कही भेजा करूँ तुम वहां जाओगे। 1:8 तब उनसे भयभीत मत होना, क्योंकि तुम्हें छुड़ाने के लिए मैं तुम्हारे साथ हूँ,” यह याहवेह की वाणी है। 1:9 तब याहवेह ने हाथ बढ़ाकर मेरे मुख को स्पर्श किया और याहवेह ने मुझसे कहा, “देखो, मैंने तुम्हारे मुख में अपने शब्द स्थापित कर दिए हैं। 1:10 यह समझ लो कि आज मैंने तुम्हें उन राष्ट्रों तथा राज्यों पर इसलिये नियुक्त किया है कि तुम तोड़ो तथा चूर-चूर करो, नष्ट करो तथा सत्ता पलट दो, निर्माण करो तथा रोपित करो।”

विलापगीत 3:21 मेरी आशा मात्र इस स्मृति के आधार पर जीवित है: 3:22 याहवेह का करमा-प्रेम, के ही कारण हम भस्म नहीं होते! कभी भी उनकी कृपा का ह्लास नहीं होता। 3:23 प्रति प्रातः वे नए पाए जाते हैं; महान है आपकी विश्वासयोग्यता।

यहेजकेल 36:26 मैं तुम्हें एक नया हृदय दूंगा और तुम्हें एक नई आत्मा डालूंगा; मैं तुमसे तुम्हारे पथर के हृदय को हटा दूंगा और तुम्हें मांस का एक हृदय दूंगा। 36:27 और मैं अपनी आत्मा तुम्हें डालूंगा और ऐसा करूंगा कि तुम मेरे नियमों पर चलोगे और मेरे कानूनों पर सावधानीपूर्वक चलोगे।

दानियेल 3:16 शद्रु, मेशेख और अबेद-नगो ने राजा को उत्तर दिया, “हे राजा नबकदनेज्जर, इस विषय में हमें आपके सामने अपने आपका बचाव करने की आवश्यकता नहीं है। 3:17 यदि हमें धधकती आग की भट्टी में फेंक दिया जाता है, तो हमारा परमेश्वर, जिनकी हम सेवा करते हैं, हमें इससे बचाने में समर्थ है, और हे महाराज, वह हमें आपके हाथों से भी बचाएगो। 3:18 पर यदि वह हमें न भी बचाएं, तब भी, हे महाराज, हम आपको बता देना चाहते हैं कि हम आपके देवताओं की सेवा नहीं करेंगे या आपके द्वारा स्थापित सोने की मूर्ति की आराधना नहीं करेंगे।”

होशे 6:6 क्योंकि मैं बलिदान से नहीं, पर दया से, और होमबलि की अपेक्षा से नहीं, परमेश्वर को मानने से प्रसन्न होता हूँ।

योएल 2:28 “और उसके बाद, मैं अपना आत्मा सब लोगों पर उंडेलूंगा। तुम्हारे बेटे और बेटियां भविष्यवाणी करेंगे, तुम्हारे बुजूर्ग लोग स्वप्न देखेंगे, तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे। 2:29 मैं उन दिनों में अपने दास, और दासियों, पर अपना आत्मा उंडेल दूंगा, 2:30 मैं ऊपर आकाश में अद्वृत चमत्कार और नीचे पृथ्वी पर लह, आग और धूंए के बादल के अद्वृत चिह्न दिखाऊंगा। 2:31 याहवेह के उस वैभवशाली और भयानक दिन के पूर्व सूर्य अंधेरा और चंद्रमा लह समान हो जाएगा। 2:32 और हर एक, जो प्रभु को पुकारेगा, उद्धार प्राप्त करेगा। क्योंकि छुटकारे की जगह ज़ियोन पर्वत तथा येस्सलोम होगी, जैसे कि याहवेह ने कहा है, और तो और बचने वालों में वे लोग भी होंगे जिन्हें याहवेह बुलाएंगे।

आमोस 5:24 पर न्याय को नदी के समान, तथा धर्मीपन को कभी न सूखनेवाले सोते के समान बहने दो!

ओबघाह 1:15 “सारे देशों के लिए निर्धारित याहवेह का दिन निकट है। जैसा तुमने किया है, ठीक वैसा ही तुम्हारे साथ भी किया जाएगा; तुम्हारे द्वारा किए गए बुरे काम तुम्हारे ही सिर पर आ पड़ेंगे।

योना 2:6 समुद्र में मैं तो पर्वतों के जड़ तक उत्तर गया; पृथ्वी के तल ने मुझे सदा के लिए जकड़ लिया था। किंतु आपने, हे याहवेह मेरे परमेश्वर, मुझे गड़े में से निकाल लिया। 2:7 “जब मेरे जीवन का अंत हो रहा था, हे याहवेह, मैंने आपको स्मरण किया, और मेरी प्रार्थना आपके पास, आपके पवित्र मंदिर में पहुंची। 2:8 “वे जो बेकार की मूर्तियों पर मन लगाते हैं वे अपने आपको परमेश्वर के प्रेम से दूर रखते हैं। 2:9 पर मैं कृतज्ञता से भरे प्रशंसा के ऊचे शब्दों के साथ, आपके लिये बलिदान चढाऊंगा। जो मन्त्र मैंने मानी है, उसे मैं पूरी करूंगा। मैं कहूंगा, ‘उद्धार याहवेह ही से होता है।’”

मीका 6:8 हे मनुष्य, उन्होंने तुम्हें दिखाया है कि क्या अच्छा है। और याहवेह तुमसे क्या अपेक्षा करता है? न्याय के काम करो और दया करो और परमेश्वर के साथ नप्रता से चलो।

नहम 1:2 याहवेह जलन रखनेवाले और बदला लेनेवाले परमेश्वर हैं; याहवेह बदला लेनेवाले तथा बहुत क्रोधी है. याहवेह अपने शत्रुओं से बदला लेते हैं और अपना कोप अपने शत्रुओं पर प्रगट करते हैं. 1:3 याहवेह क्रोध करने में धीमा पर बड़े सामर्थी हैं; याहवेह दुश्यों को दंड देने में पीछे न हटेंगे. उनका मार्ग बवंडर और आधी में से होकर जाता है, और बादल उनके पैरों की धूल है.

हबक्कक 3:17 चाहे अंजीर के पेड में कलियां न छिले और दाखलता में अंगर न फलें, चाहे जैतून के पेड में फल न आएं और खेतों में कोई अन्न न उपजे, चाहे भेड़शाला में कोई भेड़ न हो और गौशाला में कोई पशु न हो, 3:18 फिर भी मैं याहवेह में आनंद मनाऊंगा, मैं अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर में आनंदित रहूँगा. 3:19 परम याहवेह मेरे बल के स्रोत हैं; वे मेरे पांवों को हिरण के पांवों के समान चपलता देते हैं, वे मुझे ऊंचाइयों पर चलने के योग्य बनाते हैं. संगीत निर्देशक के लिये. तार वाले बाजों के साथ.

सपन्याह 3:17 याहवेह, तुम्हरे परमेश्वर तुम्हरे साथ हैं, वह पराक्रमी योद्धा है, जो तुम्हें बचाता है. तुम उनके आनंद का विषय होगे; अपने प्रेम में वह तुम्हें फिर कभी नहीं डटेंगे, पर तुम्हरे कारण वे गीत गाकर आनंदित होंगे.”

हागौ 1:4 “क्या यह समय है कि तुम खुद पक्के, भव्य घरों में रहो, और यह भवन उजाड़ पड़ा रहे?” 1:5 तब सर्वशक्तिमान याहवेह का यह कहना है: “अपने चालचलन पर सावधानीपूर्वक ध्यान दो. 1:6 तुमने बोया तो बहुत, पर तुम्हें फसल थोड़ी मिली. तुम खाते तो हो, किंतु तुम्हारा पेट कभी नहीं भरता. तुम पीते तो हो, किंतु तुम्हारी प्यास कभी नहीं बुझती. तुम कपड़े पहनते तो हो, किंतु तुम्हें उससे गर्मी नहीं मिलती. तुम मजदूरी तो करते हो, किंतु यह कैसे खर्च हो जाती है तुम्हें पता भी नहीं चलता.” 1:7 सर्वशक्तिमान याहवेह का यह कहना है: “अपने चालचलन पर सावधानीपूर्वक ध्यान दो.

जकर्याह 12:10 “और मैं दावीद के घराने और येस्खलेम के निवासियों पर कृपा तथा याचना करनेवाली एक आत्मा उड़ेलूँगा. वे मेरी ओर ताकेंगे, जिसे उन्होंने बेधा है, और वे उसके लिए वैसा ही विलाप करेंगे, जैसे कोई अपने एकमात्र बच्चे के लिए विलाप करता है, और वे उसके लिये ऐसे शोक मनाएंगे जैसे कोई अपने पहलौठे बेटे की मृत्यु पर शोक मनाता है.

मलाकी 4:2 पर तुम जो मेरे नाम का सम्मान करते हो, तुम्हरे लिये धर्मीयन का सूर्य चंगाई देनेवाले अपने किरण के साथ उदय होगा. और तुम बाहर जाओगे और मोटे-ताजे बछड़े के समान उछल-कूद करोगे. 4:3 तब तुम दुश्यों को कुचल दोगे; वे मेरे ठहराये दिन में तुम्हरे पैरों के नीचे की राख समान हो जाएंगे,” सर्वशक्तिमान याहवेह का कहना है.

मत्ती 28:18 येशु ने पास आकर उनसे कहा, “सारा अधिकार—स्वर्ग में तथा पृथकी पर—मुझे दिया गया है. 28:19 इसलिये यहां से जाते हुए तुम सारे राश्यों को मेरा शिष्य बनाओ और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा दो. 28:20 उन्हें इन सभी आदेशों का पालन करने की शिक्षा दो, जो मैंने तुम्हें दिए हैं. याद रखो: जगत के अंत तक मैं हमेशा तुम्हरे साथ हूँ.” (aiōn g165)

मरकुस 1:14 योहन के बंदी बना लिए, जाने के बाद येशु, परमेश्वर के सुसमाचार का प्रचार करते हुए गलील प्रदेश आए. 1:15 उनका सदेश था, “समय पूरा हो चुका है, परमेश्वर का राज्य पास आ गया है. मन फिराओं तथा सुसमाचार में विश्वास करो.” 1:16 गलील झील के पास से जाते हुए मसीह येशु ने शिमओन तथा उनके भाई अन्द्रेयास को देखा, जो झील में जाल डाल रहे थे. वे मछुआरे थे. 1:17 येशु ने उनसे कहा, “मेरा अनुसरण करो—मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुआरे बनाऊंगा.” 1:18 वे उसी क्षण अपने जाल छोड़कर येशु का अनुसरण करने लगे.

ल्का 4:18 “प्रभु का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उन्होंने मेरा अभिषेक किया है, कंगालों को सुसमाचार देने के लिए, और बदियों के लिए मुक्ति का प्रचार करने के लिए और अंधों को रोशनी, कुचले हुओं को कष्ट से छुड़ाने

यूहन्ना 3:16 परमेश्वर ने संसार से अपने अपार प्रेम के कारण अपना एकलौता पुत्र बलिदान कर दिया कि हर एक ऐसा व्यक्ति, जो पुत्र में विश्वास करता है, उसका विनाश न हो परंतु वह अनंत जीवन प्राप्त करे. (aiōnios g166) 3:17 क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार पर दोष लगाने के लिए नहीं परंतु संसार के द्वारा के लिए भेजा.

प्रेरितों के काम 1:7 “पिता के अधिकार में तय तिथियों या युगों के पूरे ज्ञान की खोज करना तुम्हारा काम नहीं है,” मसीह येशु ने उन्हें उत्तर दिया, 1:8 “पवित्र आत्मा के तुम पर उत्तरने पर तुम्हें सामर्थ्य प्राप्त होगा और तुम येस्खलेम, सारे यहदिया, शमरिया तथा पृथकी के दूर-दूर तक के क्षेत्रों में मेरे गवाह होगे.”

रोमियों 11:32 इस समय परमेश्वर ने सभी को आज्ञा के उल्लंघन की सीमा में रख दिया है कि वह सभी पर कृपादृष्टि कर सकें। (eleesē g1653) **11:33** ओह! कैसा अपार है परमेश्वर की बुद्धि और ज्ञान का भंडार! कैसे अथाह हैं उनके निर्णय! तथा कैसा रहस्यमयी है उनके काम करने का तरीका! **11:34** भला कौन जान सका है परमेश्वर के मन को? या कौन हुआ है उनका सलाहकार? **11:35** क्या किसी ने परमेश्वर को कभी कुछ दिया है कि परमेश्वर उसे वह लौटाएँ? **11:36** वही हैं सब कुछ के स्रोत, वही हैं सब कुछ के कारक, वही हैं सब कुछ की नियति—उन्हीं की महिमा सदा-सरदा होती रहे, आमेन। (aiōn g165)

1 कुरिन्थियों 6:9 क्या तुम्हें यह मालूम नहीं कि दुराचारी परमेश्वर के राज्य के अधिकारी न होंगे? इस भ्रम में न रहना: वेश्यागामी, मूर्तिपूजक, व्यभिचारी, परस्तीगामी, सत्तैगिक, **6:10** चोर, लोभी, शराबी, बकवादी और ठग परमेश्वर के राज्य के अधिकारी न होंगे. **6:11** ऐसे ही थे तुम्हें से कुछ किंतु अब तुम धोकर स्वच्छ किए गए, परमेश्वर के लिए अलग किए गए तथा प्रभु येशु मसीह तथा हमारे परमेश्वर के आत्मा के द्वारा किए गए काम के परिणामस्वरूप धर्मी धोवित किए गए हो.

2 कुरिन्थियों 5:17 यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है. पुराना बीत गया. देख लो: सब बातें नई हो गई हैं! **5:18** यह सब परमेश्वर की ओर से है, जिन्होंने मसीह के द्वारा स्वयं से हमारा मेल-मिलाप किया और हमें मेल-मिलाप की सेवकाई सौंपी है. **5:19** दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने संसार के खुद से मेल-मिलाप की स्थापना की प्रक्रिया में मसीह में मनुष्य के अपराधों का हिसाब न रखा. अब उन्होंने हमें मेल-मिलाप की सेवकाई सौंप दी है. **5:20** इसलिये हम मसीह के राजदूत हैं. परमेश्वर हमारे द्वारा तुमसे बिनती कर रहे हैं. मसीह की ओर से तुमसे हमारी बिनती है: परमेश्वर से मेल-मिलाप कर लो. **5:21** वह, जो निष्पाप थे, उन्हें परमेश्वर ने हमारे लिए पाप बना दिया कि हम उनमें परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं.

गलातियों 1:6 मैं यह जानकर चकित हूँ कि तुम परमेश्वर से, जिन्होंने मसीह के अनुग्रह के द्वारा तुम्हें बुलाया, इतनी जल्दी भटक कर एक अन्य ईश्वरीय सुसमाचार की ओर फिर गये हो 1:7 पर वह दूसरा सुसमाचार जो वास्तव में ईश्वरीय सुसमाचार है ही नहीं! साफ तौर पर कुछ लोग हैं, जो मसीह के ईश्वरीय सुसमाचार को बिगड़कर तुम्हें घबरा देना चाहते हैं.

इफिसियों 2:1 तुम अपने अपराधों और पापों में मरे हुए थे, **2:2** जिनमें तुम पहले इस संसार के अनुसार और आकाशमंडल के अधिकारी, उस आत्मा के अनुसार जी रहे थे, जो आत्मा अब भी आज्ञा न मानेवालों में काम कर रहा है. (aiōn g165) **2:3** एक समय था जब हम भी इन्हीं में थे और अपनी वासनाओं में लीन रहते थे, शरीर और मन की अभिलाषाओं को पूरा करने में लगे हुए अर्थों के समान कोध की संतान थे 2:4 परंतु दया में धनी परमेश्वर ने अपने अपार प्रेम के कारण, **2:5** जब हम अपने अपराधों में मरे हुए थे, मसीह में हमें जीवित किया—उद्गार तुम्हें अनुग्रह ही से प्राप्त हुआ है. **2:6** परमेश्वर ने हमें मसीह येशु में जीवित किया और स्वर्गीय राज्य में उन्हीं के साथ बैठाया, **2:7** कि वह आनेवाले समयों में अपने अनुग्रह का उत्तम धन मसीह येशु में हमारे लिए की गई कृपा में दिखा सकें. (aiōn g165) **2:8** क्योंकि अनुग्रह ही से, विश्वास के द्वारा तुम्हें उद्गार प्राप्त हुआ है. यह तुम्हारे कारण नहीं, बल्कि परमेश्वर का वरदान है, **2:9** और यह कामों का प्रतिफल नहीं है कि कोई गर्व करे, **2:10** क्योंकि हम परमेश्वर द्वारा पहले से ठहराए हुए भले कामों के लिए मसीह येशु में रखे गए परमेश्वर की रचना है.

फिलिप्पियों 3:7 जो कुछ मेरे लिए लाभदायक था, मैंने उसे मसीह के लिए अपनी हानि मान लिया है. **3:8** इससे कहीं अधिक बढ़कर मसीह येशु मेरे प्रभु को जानेके उत्तम महत्व के सामने मैंने सभी वस्तुओं को हानि मान लिया है—वास्तव में मैंने इहें कूड़ा मान लिया है कि मैं मसीह को प्राप्त कर सकूँ और मैं उनमें स्थिर हो जाऊँ, जिनके लिए मैंने सभी वस्तुएं खो दी हैं. **3:9** अब मेरी अपनी धार्मिकता वह नहीं जो व्यवस्था के पालन से प्राप्त होती है परंतु वह है, जो मसीह में विश्वास द्वारा प्राप्त होती है—परमेश्वर की ओर से विश्वास की धार्मिकता.

कुत्सियों 1:15 वह तो अनदेखे परमेश्वर का स्वरूप है. वह सारी सृष्टि में पहलौठे है. **1:16** क्योंकि उन्हीं में सब कुछ रचाया गया है—स्वर्गीय स्थानों में तथा पृथकी पर, देखी तथा अनदेखी, सिंहासन तथा प्रभुताएँ, राजा तथा अधिकारी—सभी कुछ उन्हीं के द्वारा तथा उन्हीं के लिए बनाया गया. **1:17** वह सारी सृष्टि में प्रथम हैं और सारी सृष्टि उनमें स्थिर रहती है. **1:18** वही सिर है कल्पिसिया के, जो उनका शरीर है; वही आदि है, मेरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहलौठे हैं कि वही सब में प्रधान हों. **1:19** क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में थी कि उनमें ही सारी परिपूर्णता वास करे और वह 1:20 कृपा पर उनके बहाए गए लह के द्वारा शांति की स्थापना कर उनके माध्यम से सभी का भौमिक या स्वर्गीय, स्वयं से मेल-मिलाप कराएं.

1 थिस्सलुनीकियों 4:1 अंततः प्रिय भाई बहनो, तुमने हमसे अपने स्वभाव तथा परमेश्वर को प्रसन्न करने के विषय में जिस प्रकार के निर्देश प्राप्त किए थे—ठीक जैसा तुम्हारा स्वभाव है भी—प्रभु येशु मसीह में तुमसे हमारी जिनती और समझाना है कि तुम इनमें और भी अधिक उन्नत होते चले जाओ। **4:2** तुम्हें वे आजाएं मालाम ही हैं, जो हमने तुम्हें प्रभु येशु मसीह की ओर से दिए थे। **4:3** परमेश्वर की इच्छा है कि तुम पवित्रता की स्थिति में रहो—तुम वेश्यागमी से अलग रहो; **4:4** कि तुममें से हर एक को अपने-अपने शरीर को पवित्रता तथा समानपूर्वक संयमित रखने का ज्ञान हो; **4:5** कामुकता की अभिलाषा में अन्यजातियों के समान नहीं, जो परमेश्वर से अनजन हैं;

2 थिस्सलुनीकियों 3:6 प्रिय भाई बहनो, प्रभु येशु मसीह के नाम में हम तुम्हें यह आज्ञा देते हैं कि तुम ऐसे हर एक व्यक्ति से दूर रहो, जो अनुचित चाल चलता है, जो हमारे द्वारा दी गई शिक्षाओं का पालन नहीं करता। **3:7** यह तुम्हें मालूम है कि तुम्हारे लिए हमारे जैसी चाल चलना सही है क्योंकि तुम्हारे बीच रहते हुए हम निकम्मे नहीं रहे। **3:8** इतना ही नहीं, हमने किसी के यहां दाम चुकाए बिना भोजन नहीं किया पांतु हमने दिन-रात परिश्रम किया और काम करते रहे कि हम तुममें से किसी के लिए भी बोझ न बर्नें। **3:9** यह इसलिये नहीं कि तुमसे सहायता पाना हमारा अधिकार नहीं है परंतु इसलिये कि हम स्वयं को तुम्हारे सामने आदर्श स्वभाव प्रस्तुत करें और तुम हमारी सी चाल चलो। **3:10** यहां तक कि जब हम तुम्हारे बीच में थे, हम तुम्हें यह आज्ञा दिया करते थे: “किसी आलसी को भोजन न दिया जाए।”

1 तीमुथियुस 2:1 इसलिये सबसे पहली जिनती यह है कि सभी के लिए जिनती, प्रार्थनाएं, दूसरों के लिए प्रार्थनाएं और धन्यवाद प्रस्तुत किए जाएं, **2:2** राजाओं तथा अधिकारियों के लिए कि हमारा जीवन सम्मान तथा परमेश्वर की भक्ति में शांति और चैन से हो। **2:3** यह परमेश्वर, हमारे उद्धारकर्ता को प्रिय तथा ग्रहण योग्य है, **2:4** जिनकी इच्छा है कि सभी मनुष्यों का उद्धार हो तथा वे सच को उसकी भरपूरी में जानें। **2:5** परमेश्वर एक ही है तथा परमेश्वर और मनुष्यों के मध्यस्थ भी एक ही हैं—देहधारी मसीह येशु,

2 तीमुथियुस 2:8 उस ईश्वरीय सुसमाचार के अनुसार, जिसका मैं प्रचारक हूं, मेरे हुओं में से जीवित, दावीद के बंशज मसीह येशु को याद रखो। **2:9** उसी ईश्वरीय सुसमाचार के लिए मैं कष्ट सह रहा हूं, यहां तक कि मैं अपराधी जैसा बेड़ियों में जकड़ा गया हूं—परंतु परमेश्वर का वचन कैद नहीं किया जा सका। **2:10** यही कारण है कि मैं उनके लिए, जो चुने हुए हैं, सभी कष्ट सह रहा हूं कि उन्हें भी वह उद्धार प्राप्त हो, जो मसीह येशु में मिलता है तथा उसके साथ अनंत महिमा भी। (aiōnios g166)

तीतुस 2:11 सारी मानव जाति के उद्धार के लिए परमेश्वर का अनुग्रह प्रकट हुआ है, **2:12** जिसकी हमारे लिए शिक्षा है कि हम “गलत” कार्यों और सांसारिक अभिलाषाओं का त्याग कर इस युग में संयम, धर्मिकता और परमेश्वर भक्ति का जीवन जिए, (aiōn g165) **2:13** तथा अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता मसीह येशु की महिमा के प्रकट होने की सुखद आशा की प्रतीक्षा करें, **2:14** जिन्होंने स्वयं को हमारे लिए बलिदान कर हमें हर एक दुष्टा से छुड़ाकर, अपने लिए शदू कर भले कार्यों के लिए उत्साही प्रजा बना लिया है।

फिलेमोन 1:3 हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु येशु मसीह का अनुग्रह व शांति प्राप्त हो। **1:4** अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें याद करते हुए मैं हमेशा अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं, **1:5** क्योंकि मैं प्रभु येशु मसीह तथा सभी पवित्र लोगों के प्रति तुम्हारे प्रेम और विश्वास के बारे में सुना करता हूं, **1:6** मेरी प्रार्थना है कि तुम्हारे विश्वास का सहभागी होना हार एक वरदान के स्पष्ट अहसास के द्वारा, जो तुममें मसीह के लिए है, प्रभावशाली हो। **1:7** प्रिय भाई बहनो, तुम्हारी प्रेम भावना से मुझे बहुत अनंद व प्रोत्साहन मिला है क्योंकि तुम्हारे कारण पवित्र लोगों के मन अनंदित हुए हैं।

इत्तानियों 1:1 पूर्व में परमेश्वर ने भविष्यद्वत्काओं के माध्यम से हमारे पूर्वजों से अनेक समय खण्डों में विभिन्न प्रकार से बातें की, **1:2** किंतु अब इस अंतिम समय में उन्होंने हमसे अपने पुत्र के द्वारा बातें की हैं, जिन्हें परमेश्वर ने सारी सुष्ठि का वारिस चुना और जिनके द्वारा उन्होंने युगों की सुष्ठि की। (aiōn g165) **1:3** पुत्र ही परमेश्वर की महिमा का प्रकाश तथा उनके तत्व का प्रतिबिवृत है। वह अपने सामर्थ्य के वचन से सारी सुष्ठि को स्थिर बनाये रखता है। जब वह हमें हमारे पापों से धो चुके, वह महिमामय ऊंचे पर विराजमान परमेश्वर की दायी और मैं बैठ गए।

याकूब 1:16 प्रिय भाई बहनो, धोखे में न रहना। **1:17** हर एक अच्छा वरदान और निर्दोष दान ऊपर से अर्थात् ज्योतियों के पिता की ओर से आता है, जिनमें न तो कोई परिवर्तन है और न अदल-बदल। **1:18** उन्होंने अपनी इच्छा पूरी करने के लिए हमें सत्य के वचन के द्वारा नया जीवन दिया है कि हम उनके द्वारा बनाए गए प्राणियों में पहले फल के समान हों।

1 पतरस 3:18 मसीह ने भी पापों के लिए एक ही बार प्राणों को दे दिया—एक धर्मी ने सभी अधर्मियों के लिए—कि वह तुम्हें परमेश्वर तक ले जाएं। उनकी शारीरिक मृत्यु तो हुई किंतु परमेश्वर के आत्मा के द्वारा वह जीवित किए गए।

2 पतरस 1:3 परमेश्वर ने हमारी बुलावा स्वयं अपने प्रताप और परम उत्तमता के द्वारा की है। उनके ईश्वरीय समर्थ्य ने उनके सत्य ज्ञान में हमें जीवन और भक्ति से संबंधित सभी कुछ दे दिया है। 1:4 क्योंकि इन्हीं के द्वारा उन्होंने हमें अपनी विशाल और बहुमूल्य प्रतिज्ञाएं प्रदान की हैं कि तुम संसार में बसी हुई कामासक्ति से प्रेरित भ्रष्टाचार से मुक्त हो ईश्वरीय स्वभाव में सहभागी हो जाओ।

1 यहन्ना 2:1 मेरे बच्चों, मैं यह सब तुम्हें इसलिये लिख रहा हूँ कि तुम पाप न करो किंतु यदि किसी से पाप हो ही जाए तो पिता के पास हमारे लिए एक सहायक है मसीह येशु, जो धर्मी है। 2:2 वही हमारे पापों के लिए प्रायश्चित्त बलि है—मात्र हमारे ही पापों के लिए नहीं परंतु सारे संसार के पापों के लिए।

2 यहन्ना 1:7 संसार में अनेक धूर्त निकल पड़े हैं, जो मसीह येशु के शरीर धारण करने को नकारते हैं। ऐसा व्यक्ति धूर्त है और मसीह विरोधी भी।

3 यहन्ना 1:4 मेरे लिए इससे बढ़कर और कोई आनंद नहीं कि मैं यह सून कि मेरे बालकों का स्वभाव सच्चाई के अनुसार है।

यहदा 1:3 प्रियों, हालांकि मैं बहुत ही उत्सुक था कि तुमसे हम सभी को मिले समान उद्धार का वर्णन करूँ किंतु अब मुझे यह ज़स्ती लग रहा है कि मैं तुम्हें उस विश्वास की रक्षा के प्रयास के लिए प्रेरित करूँ, जो पवित्र लोगों को सदा के लिए एक ही बार में सौंप दिया गया है। 1:4 तुम्हारे बीच कुछ ऐसे व्यक्ति चुपचाप धूम आए हैं, जिनके लिए यह दंड बहुत पहले ही तय कर दिया गया था। ये वे भक्तिहीन हैं, जो हमारे एकमात्र स्वामी व प्रभु येशु मसीह को अस्वीकार करते हुए परमेश्वर के अनुग्रह को बिगाड़कर कामुकता में बदल देते हैं।

प्रकाशित वाक्य 3:19 अपने सभी प्रेम करनेवालों को मैं ताड़ना देता तथा अनुशासित करता हूँ। इसलिये बहुत उत्साहित होकर पश्चाताप करो। 3:20 सुनो! मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता रहा हूँ। यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, मैं उसके घर में प्रवेश करसंगा तथा मैं उसके साथ और वह मेरे साथ भोजन करेगा। 3:21 जो विजयी होगा, उसे मैं अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठने का अधिकार दूंगा—ठीक जैसे स्वयं मैंने विजय प्राप्त की तथा अपने पिता के साथ उनके सिंहासन पर आसीन हुआ। 3:22 जिसके कान हों, वह सुन ले कि कल्पितियाओं से पवित्र आत्मा का क्या कहना है।”

पाठक गाइड

हिन्दी at AionianBible.org/Readers-Guide

The Aionian Bible republishes public domain and Creative Common Bible texts that are 100% free to copy and print. The original translation is unaltered and notes are added to help your study. The notes show the location of eleven special Greek and Hebrew Aionian Glossary words to help us better understand God's love for individuals and for all mankind, and the nature of afterlife destinies.

Who has the authority to interpret the Bible and examine the underlying Hebrew and Greek words? That is a good question! We read in 1 John 2:27, "*As for you, the anointing which you received from him remains in you, and you do not need for anyone to teach you. But as his anointing teaches you concerning all things, and is true, and is no lie, and even as it taught you, you remain in him.*" Every Christian is qualified to interpret the Bible! Now that does not mean we will all agree. Each of us is still growing in our understanding of the truth. However, it does mean that there is no infallible human or tradition to answer all our questions. Instead the Holy Spirit helps each of us to know the truth and grow closer to God and each other.

The Bible is a library with 66 books in the Protestant Canon. The best way to learn God's word is to read entire books. Read the book of Genesis. Read the book of John. Read the entire Bible library. Topical studies and cross-referencing can be good. However, the safest way to understand context and meaning is to read whole Bible books. Chapter and verse numbers were added for convenience in the 16th century, but unfortunately they can cause the Bible to seem like an encyclopedia. The Aionian Bible is formatted with simple verse numbering, minimal notes, and no cross-referencing in order to encourage the reading of Bible books.

Bible reading must also begin with prayer. Any Christian is qualified to interpret the Bible with God's help. However, this freedom is also a responsibility because without the Holy Spirit we cannot interpret accurately. We read in 1 Corinthians 2:13-14, "*And we speak of these things, not with words taught by human wisdom, but with those taught by the Spirit, comparing spiritual things with spiritual things. Now the natural person does not receive the things of the Spirit of God, for they are foolishness to him, and he cannot understand them, because they are spiritually discerned.*" So we cannot understand in our natural self, but we can with God's help through prayer.

The Holy Spirit is the best writer and he uses literary devices such as introductions, conclusions, paragraphs, and metaphors. He also writes various genres including historical narrative, prose, and poetry. So Bible study must spiritually discern and understand literature. Pray, read, observe, interpret, and apply. Finally, "*Do your best to present yourself approved by God, a worker who does not need to be ashamed, properly handling the word of truth.*" 2 Timothy 2:15. "*God has granted to us his precious and exceedingly great promises; that through these you may become partakers of the divine nature, having escaped from the corruption that is in the world by lust. Yes, and for this very cause adding on your part all diligence, in your faith supply moral excellence; and in moral excellence, knowledge; and in knowledge, self-control; and in self-control patience; and in patience godliness; and in godliness brotherly affection; and in brotherly affection, love. For if these things are yours and abound, they make you to be not idle nor unfruitful to the knowledge of our Lord Jesus Christ,*" 2 Peter 1:4-8.

શાદકોષ

હિન્દી at AionianBible.org/Glossary

The Aionian Bible un-translates and instead transliterates eleven special words to help us better understand the extent of God's love for individuals and all mankind, and the nature of afterlife destinies. The original translation is unaltered and a note is added to 64 Old Testament and 200 New Testament verses. Compare the meanings below to the Strong's Concordance and Glossary definitions.

Abyssos g12

Greek: proper noun, place

Usage: 9 times in 3 books, 6 chapters, and 9 verses

Meaning:

Temporary prison for special fallen angels such as Apollyon, the Beast, and Satan.

aīdios g126

Greek: adjective

Usage: 2 times in Romans 1:20 and Jude 6

Meaning:

Lasting, enduring forever, eternal.

aiōn g165

Greek: noun

Usage: 127 times in 22 books, 75 chapters, and 102 verses

Meaning:

A lifetime or time period with a beginning and end, an era, an age, the completion of which is beyond human perception, but known only to God the creator of the aiōns, Hebrews 1:2. Never meaning simple endless or infinite chronological time in Greek usage. Read Dr. Heleen Keizer and Ramelli and Konstan for proofs.

aiōnios g166

Greek: adjective

Usage: 71 times in 19 books, 44 chapters, and 69 verses

Meaning:

From start to finish, pertaining to the age, lifetime, entirety, complete, or even consummate. Never meaning simple endless or infinite chronological time in Koine Greek usage. Read Dr. Heleen Keizer and Ramelli and Konstan for proofs.

eleēsē g1653

Greek: verb, aorist tense, active voice, subjunctive mood, 3rd person singular

Usage: 1 time in this conjugation, Romans 11:32

Meaning:

To have pity on, to show mercy. Typically, the subjunctive mood indicates possibility, not certainty. However, a subjunctive in a purpose clause is a resulting action as certain as the causal action. The subjunctive in a purpose clause functions as an indicative, not an optative. Thus, the grand conclusion of grace theology in Romans 11:32 must be clarified. God's mercy on all is not a possibility, but a certainty. See ntgreek.org.

Geenna g1067

Greek: proper noun, place

Usage: 12 times in 4 books, 7 chapters, and 12 verses

Meaning:

Valley of Hinnom, Jerusalem's trash dump, a place of ruin, destruction, and judgment in this life, or the next, though not eternal to Jesus' audience.

Hades g86

Greek: proper noun, place

Usage: 11 times in 5 books, 9 chapters, and 11 verses

Meaning:

Synonomous with Sheol, though in New Testament usage Hades is the temporal place of punishment for deceased unbelieving mankind, distinct from Paradise for deceased believers.

Limnē Pyr g3041 g4442

Greek: proper noun, place

Usage: Phrase 5 times in the New Testament

Meaning:

Lake of Fire, final punishment for those not named in the Book of Life, prepared for the Devil and his angels, Matthew 25:41.

Sheol h7585

Hebrew: proper noun, place

Usage: 66 times in 17 books, 50 chapters, and 64 verses

Meaning:

The grave or temporal afterlife world of both the righteous and unrighteous, believing and unbelieving, until the general resurrection.

Tartaroō g5020

Greek: proper noun, place

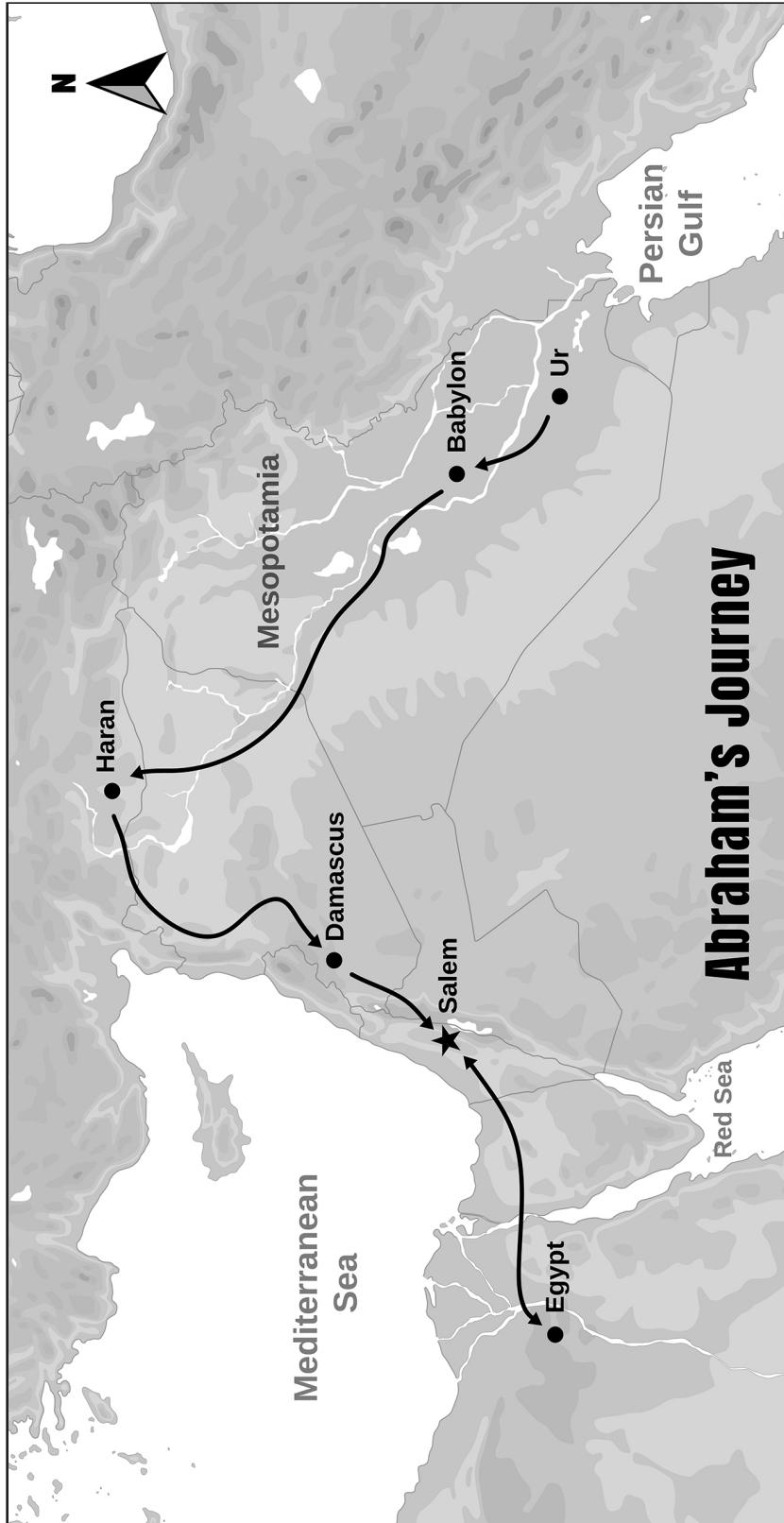
Usage: 1 time in 2 Peter 2:4

Meaning:

Temporary prison for particular fallen angels awaiting final judgment.

यह विच्छास ही था, जिसके द्वारा अब्राहम ने परमेश्वर के बहुताने पर धर्मपरिवार का तथा कर एक अन्य देश को चले जाने के लिए उनकी आज्ञा का पालन किया—वह देश, जो परमेश्वर उन्हें मिरास में देने पर थे। वह यह जाने बिना ही चल पड़े कि वह कहाँ जा रहे थे। - इत्तिहास 118

Abraham's Journey





जब फरोह ने प्रजा को वहां से जाने को कहा, तब परमेश्वर उन्हें फिलिस्तीनियों के रेशा में से होकर नहीं ले गए, यह रास्ता बहुत लोटा था। लेकिन परमेश्वर का कहना था, “लड़ाई देखकर लोग मिश देशा वापस चले न जाएं।” - निर्मिन 13:17

N



Mediterranean
Sea

Sidon
Tyre
Caesarea-
Philippi

Galilee
Capernaum
Bethsaida

Cana
Nazareth

Decapolis

Sychar
Samaria

Peraea

Ephraim
Jerusalem ★
Bethany
Bethlehem

Judea

► Egypt

Jesus' Journeys

क्योंकि मस्त्य का पुनर्याहां इसलिये नहीं आया कि अपनी सेवा करता, परंतु इसलिये किसी सेवा करे और अमेकों की छोड़ती के लिए अपना जीवन बलिदान कर दे। - मरकुर 10:45

Paul's Missionary Journeys



यह प्रथम पैलेस की ओर से है, जो मस्तिष्क का दास है, जिसका आगमन एक प्रति के स्पष्ट में हुआ तथा जो फरमेवर के उस इंकारिय समाचार के लिए अला किया गया है - रोमियो 1:1

Creation 4004 B.C.

Adam and Eve created	4004
Tubal-cain forges metal	3300
Enoch walks with God	3017
Methuselah dies at age 969	2349
God floods the Earth	2349
Tower of Babel thwarted	2247
Abraham sojourns to Canaan	1922
Jacob moves to Egypt	1706
Moses leads Exodus from Egypt	1491
Gideon judges Israel	1245
Ruth embraces the God of Israel	1168
David installed as King	1055
King Solomon builds the Temple	1018
Elijah defeats Baal's prophets	896
Jonah preaches to Nineveh	800
Assyrians conquer Israelites	721
King Josiah reforms Judah	630
Babylonians capture Judah	605
Persians conquer Babylonians	539
Cyrus frees Jews, rebuilds Temple	537
Nehemiah rebuilds the wall	454
Malachi prophesies the Messiah	416
Greeks conquer Persians	331
Seleucids conquer Greeks	312
Hebrew Bible translated to Greek	250
Maccabees defeat Seleucids	165
Romans subject Judea	63
Herod the Great rules Judea	37

(The Annals of the World, James Usher)



Jesus Christ born 4 B.C.

New Heavens and Earth



- Christ returns for his people
- 1956 Jim Elliot martyred in Ecuador
- 1830 John Williams reaches Polynesia
- 1731 Zinzendorf leads Moravian mission
- 1614 Japanese kill 40,000 Christians
- 1572 Jesuits reach Mexico
- 1517 Martin Luther leads Reformation
- 1455 Gutenberg prints first Bible
- 1323 Franciscans reach Sumatra
- 1276 Ramon Llull trains missionaries
- 1100 Crusades tarnish the church
- 1054 The Great Schism
- 997 Adalbert martyred in Prussia
- 864 Bulgarian Prince Boris converts
- 716 Boniface reaches Germany
- 635 Alopen reaches China
- 569 Longinus reaches Alodia / Sudan
- 432 Saint Patrick reaches Ireland
- 397 Carthage ratifies Bible Canon
- 341 Ulfilas reaches Goth / Romania
- 325 Niceae proclaims God is Trinity
- 250 Denis reaches Paris, France
- 197 Tertullian writes Christian literature
- 70 Titus destroys the Jewish Temple
- 61 Paul imprisoned in Rome, Italy
- 52 Thomas reaches Malabar, India
- 39 Peter reaches Gentile Cornelius
- 33 Holy Spirit empowers the Church

(Wikipedia, Timeline of Christian missions)

Resurrected 33 A.D.

What are we? ►			Genesis 1:26 - 2:3	
How are we sinful? ►			Romans 5:12-19	
Where are we?			Innocence	
			Eternity Past	Creation 4004 B.C.
► Who are we?	God	Father	John 10:30 God's perfect fellowship	Genesis 1:31 God's perfect fellowship with Adam in The Garden of Eden
		Son		
		Holy Spirit		
	Mankind	Living	Genesis 1:1 No Creation No people	Genesis 1:31 No Fall No unholy Angels
		Deceased believing		
		Deceased unbelieving		
	Angels	Holy		
		Imprisoned		
		Fugitive		
		First Beast		
		False Prophet		
		Satan		
Why are we? ►			Romans 11:25-36, Ephesian 2:7	

Mankind is created in God's image, male and female He created us

Sin entered the world through Adam and then death through sin

When are we?



Fallen				Glory
Fall to sin No Law	Moses' Law 1500 B.C.	Christ 33 A.D.	Church Age Kingdom Age	New Heavens and Earth
1 Timothy 6:16 Living in unapproachable light				Acts 3:21 Philippians 2:11 Revelation 20:3
John 8:58 Pre-incarnate	John 1:14 Incarnate	Luke 23:43 Paradise		
Psalm 139:7 Everywhere	John 14:17 Living in believers			
Ephesians 2:1-5 Serving the Savior or Satan on Earth				God's perfectly restored fellowship with all Mankind praising Christ as Lord in the Holy City
Luke 16:22 Blessed in Paradise				
Luke 16:23, Revelation 20:5,13 Punished in Hades until the final judgment				
Hebrews 1:14 Serving mankind at God's command				
2 Peter 2:4, Jude 6 Imprisoned in Tartarus				Matthew 25:41 Revelation 20:10
1 Peter 5:8, Revelation 12:10 Rebelling against Christ Accusing mankind				Lake of Fire prepared for the Devil and his Angels
		Revelation 20:13 Thalaasa		
		Revelation 19:20 Lake of Fire		
		Revelation 20:2 Abyss		

For God has bound all over to disobedience in order to show mercy to all

नियति

हिन्दी at AionianBible.org/Destiny

The Aionian Bible shows the location of eleven special Greek and Hebrew Aionian Glossary words to help us better understand God's love for individuals and for all mankind, and the nature of after-life destinies. The underlying Hebrew and Greek words typically translated as *Hell* show us that there are not just two after-life destinies, Heaven or Hell. Instead, there are a number of different locations, each with different purposes, different durations, and different inhabitants. Locations include 1) Old Testament *Sheol* and New Testament *Hadēs*, 2) *Geenna*, 3) *Tartaroō*, 4) *Abyssos*, 5) *Limnē Pyr*, 6) *Paradise*, 7) *The New Heaven*, and 8) *The New Earth*. So there is reason to review our conclusions about the destinies of redeemed mankind and fallen angels.

The key observation is that fallen angels will be present at the final judgment, 2 Peter 2:4 and Jude 6. Traditionally, we understand the separation of the Sheep and the Goats at the final judgment to divide believing from unbelieving mankind, Matthew 25:31-46 and Revelation 20:11-15. However, the presence of fallen angels alternatively suggests that Jesus is separating redeemed mankind from the fallen angels. We do know that Jesus is the helper of mankind and not the helper of the Devil, Hebrews 2. We also know that Jesus has atoned for the sins of all mankind, both believer and unbeliever alike, 1 John 2:1-2. Deceased believers are rewarded in Paradise, Luke 23:43, while unbelievers are punished in Hades as the story of Lazarus makes plain, Luke 16:19-31. Yet less commonly known, the punishment of this selfish man and all unbelievers is before the final judgment, is temporal, and is punctuated when Hades is evacuated, Revelation 20:13. So is there hope beyond Hades for unbelieving mankind? Jesus promised, "*the gates of Hades will not prevail*," Matthew 16:18. Paul asks, "*Hades where is your victory?*" 1 Corinthians 15:55. John wrote, "*Hades gives up*," Revelation 20:13.

Jesus comforts us saying, "*Do not be afraid*," because he holds the keys to *unlock* death and Hades, Revelation 1:18. Yet too often our Good News sounds like a warning to "*be afraid*" because Jesus holds the keys to *lock* Hades! Wow, we have it backwards! Hades will be evacuated! And to guarantee hope, once emptied, Hades is thrown into the Lake of Fire, never needed again, Revelation 20:14.

Finally, we read that anyone whose name is not written in the Book of Life is thrown into the Lake of Fire, the second death, with no exit ever mentioned or promised, Revelation 21:1-8. So are those evacuated from Hades then, "*out of the frying pan, into the fire?*" Certainly, the Lake of Fire is the destiny of the Goats. But, do not be afraid. Instead, read the Bible's explicit mention of the purpose of the Lake of Fire and the identity of the Goats, "*Then he will say also to those on the left hand, 'Depart from me, you cursed, into the consummate fire which is prepared for... the devil and his angels,'*" Matthew 25:41. Bad news for the Devil. Good news for all mankind!

Faith is not a pen to write your own name in the Book of Life. Instead, faith is the glasses to see that the love of Christ for all mankind has already written our names in Heaven. "*If the first fruit is holy, so is the lump*," Romans 11:16. Though unbelievers will suffer regrettable punishment in Hades, redeemed mankind will never enter the Lake of Fire, prepared for the devil and his angels. And as God promised, all mankind will worship Christ together forever, Philippians 2:9-11.

Disciple All Nations

इसलिये यहाँ से जाते हुए तुम सभे राष्ट्रों को मेरा शिल्प बनाओ और उन्हें दिता, पुन और पवित्र आत्मा के नाम में अपतिस्मा दो। - मर्टी 28:19



